

सुजीत परिचयक मोहताज नहि छथि । ओ आब लघड, सघेंत आ समस्त बुझना जाइत छथि । प्रस्तुत कृति हुनक परिचय स्वयं दऽ रहल अछि । मैथिली साहित्यक नव-पुस्तक सफल हस्ताक्षर सुजीत कथा विधामे बेस नाम कऽ ठाढ़ भेल छथि । पेशा सँ पत्रकार सुजीतक कलममे पत्रकारिताक धार आ साहित्यक भाव एक संग देखना जाइछ । पत्रकारिता करबाक क्रममे बहुत बेर एहन होइत छैक, जाहि खन विविधिकारणे सभ चीजक प्रकटीकरण सम्भव नहि भऽ पबैत छैक । मुदा सुजीत अगुताइ नहि छथि आ सभ विषयकेँ सहेजिकऽ रखैत छथि आ साहित्य ताहूमे कथाक माध्यमे ओकरा पाठकक सोझाँ भायदऽ परसि दैत छथि ।

धर्मेन्द्र झा

पूर्व केन्द्रीय अध्यक्ष, नेपाल पत्रकार महासंघ

पत्रकारिते जेकाँ कथामे सेहो सुजीत स्पष्ट संदेश देबाक प्रयास करैत छथि ।
साहित्यकारक रूपमे सुजीत दृढ़ताक संग डेग आगू बढ़औने छथि । साहित्यक क्षितिजपर पहुँचबाक सम्भावना हुनकामे **देखना जाइछ** ।

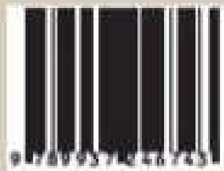
डा. विजय कुमार सिंह

वरिष्ठ चिकित्सक, जनकपुर

कथाकार सुजीत नेपालीए मैथिली कथा जगतमे सर्वाधिक **कल्पनाशिल व्यक्ति** छथि । प्रायः सभ कथामे आगू कि भेल **ई जिज्ञासा अन्तधरि** बनल रहैत अछि । प्लाट निर्माणमे निपुण **छथि, हम हिनकामे** उपन्यासकार हएबाक प्रशस्त सम्भावना **देखैत छी ।**

अयोध्यानाथ चौधरी

संयोजक, विद्यापति पुरस्कार कोष



जिद्दी



जिद्दी

कथा संग्रह

सुजीत कुमार झा

जिद्दी

कथा संग्रह

सुजीत कुमार झा

प्रकाशक

आफन्त नेपाल

जिद्दी

कथा संग्रह

लेखक : सुजीत कुमार झा

संस्करण : पहिल
विक्रम सम्वत : २०६९
प्रति : ११००

मोल : २००।- टका

प्रकाशक : आक्रान्त नेपाल
आवरण सज्जा : कैलाश दास

ISBN M 978-9937-2-4674-3

मुद्रक : लिसि अफसेट प्रिन्टर्स, जमल काठमाण्डू

समर्पण

पूजनीय स्वर्गीय दाइ शिवेश्वरी देवी आ बाबा
स्वर्गीय विश्वम्भर झा कें स-भक्ति समर्पित

....

प्रकाशकीय

मैथिली साहित्यक अपने एकटा समृद्ध इतिहास रहलाक बादो आधुनिकताक नामपर वा कही पर्याप्त अवसरक अभावमे युवा पिढ़ी अपन मातृभाषा बिसरि रहल अछि। कतौ ने कतौ ई एहि समाजक लेल सेहो बड़का क्षति भऽ रहल अछि। मैथिली भाषाक अभिवृद्धिक अभियान चलाबहे पड़त ।
एहि क्रममे जनकपुरक युवा पत्रकार सुजीत कुमार झाक मैथिली प्रेम सराहनीय अछि। ओ मूल पत्रकारिता भलेहि नेपालीमे करैत होइथ मुदा मैथिलीक लेल सदति प्रयत्नशिल रहैत छथि तकरे परिणाम अछि जे मैथिलीमे हिनक कृति सभ प्रकाशित भऽ रहल। चिड़ै, रिपोर्टर डायरी आ आब एखन अपनेक समक्ष अछि कथा सङ्ग्रह 'जिद्दी' ।
जिद्दीक सभ कथा पठनीय अछि। सामाजिक आ पारिवारिक पृष्ठभूमिमे आधारित 'जिद्दी' आम पाठककेँ एकटा नीक सन्देश देत। पुस्तकमे लिखल सभ कथा नेपाल आ मैथिल समाजपर आधारित अछि। आफन्त नेपालक मैथिली सशक्तिकरण कम्पोनेन्ट अन्तर्गत रहल मैथिली भाषा संस्कृति आ साहित्यिक विकासमे सेहो 'जिद्दी' उपयोगी सिद्ध हएत से हमरा सभक विश्वास अछि।
आफन्त नेपाल मैथिली भाषा-भाषीक लेल शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, भाषा आ साहित्यक विकासक लेल निरन्तर काज करैत रहत ताहि हेतु प्रतिवद्ध अछि। एहि पुस्तकमे जे किछु त्रूटिसभ हएत औपचारिक रुपसँ सूचित कऽ देवाक लेल आग्रह करैत छी। त्रूटिसभकेँ दोसर संस्करणमे संशोधन करब ताहि प्रतिवद्धताक संग अपनेकेँ ई पोथी पसिन आओत आ अपनेद्वारा सिनेह भेटतै से आश रखैत छी।

जय प्रकाश मण्डल
संयोजक
आफन्त नेपाल

मंगलवचनानि

डा.राजेन्द्र विमल

साहचर्य-सम्भूत रसोद्भावनाक चतुर, युवा कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा मिथिलाञ्चलक महानगरोन्मुख शहरक विविधतापूर्ण परिवेश आ पात्रक स्थिति-मनस्थितिक सूक्ष्म चित्राङ्कन प्रस्तुत करैत अछि। प्रत्येक कथा कोनो एक गोट एहने शहरी पात्रक जीवनमे झटका नेने आएल कोनो निर्णायक मोड़क नाटकीय रुपमे जखन प्रत्यक्षीकरण करबैछ तऽ पाठक चिहुँकि उठैत अछि।

सामान्य घटनासभक श्रृङ्खलासँ आरम्भ भेल कथा मध्यधरि अबैत-अबैत सूच्याग्र भऽ जाइत अछि आ अन्तमे एकटा 'करेण्ट' जेकाँ लगबैत अछि। - जेना सामान्य यात्रामे चलैत-चलैत केओ आगाँमे फँेच कढ़ने, नाङरिपर ठाढ़ गहुमन देखि नेने हो ! शिल्पक ई वैशिष्ट्य हिनका मैथिलीक अन्य कथाकारसँ अलगहे फराक कए दैत अछि।

महानगरोन्मुख समाजक चित्राङ्कनक संगहि कथा एक गोट मनोवैज्ञानिक सत्यक उद्‌घाटन करैत अछि। कथामे एक गोट एहन स्थल अबैत अछि जखन आश्चर्यचकित भेल पाठक सोचैत अछि, ' अरे ! ई की भऽ

गेलै !' - आ तखने कथाक अन्त भऽ जाइ छै। अमेरिकी कथाकार ओ. हेनरीक स्मरण भऽ अबैछ। अवग्रहमे पड़ल पात्रक प्राण जेना अकस्मात् मुक्ति-पथ पाबि लैछ !

कथाकार सुजीत कुमार झाक कथाकारिताक दोसर उल्लेखनीय निजत्व थिक - अनतिदीर्घता अर्थात् संक्षिप्तता। हिनक कथाक घटना-परिघटना ज्यामितीय चित्र जेकाँ एक-दोसरकेँ कटैत, ओझराइत-सोझराइत आगाँ नहि बढ़ैछ। कथाक तीर सनसनाइत जाइत अछि आ अर्जुनक लक्ष्य-भेद जेकाँ चिड़ैक आँखिटा देखैत ओकर भेदन करैत अछि आ कुशल धनुर्धरक धनुर्विद्याक सफलताक प्रमाणसँ धन्य भऽ जाइत अछि। तँए कथासभमे एकटा प्रभावान्वितियुक्त त्वरा छैक।

हिनक सभ पात्र खाँटी मैथिल थिकाह - विभिन्न जाति, वर्गक मध्यवित्तीय मैथिल। सुजीत कुमार मध्यवित्तीय मैथिल जीवनक सफल कथाकार छथि। परम्परागत मूल्यक सिमेण्टसँ ठोस बनल संयुक्त परिवारमे देखल जाइत पारस्परिक स्नेह, विश्वास, बलिदान, सेवा, करुणा, अनुशासन आदि श्रेष्ठ मानवीय गुणमे लागल पश्चिमी सोचक नोनीसँ उत्पन्न दरार देखि कथाकारक हृदय दरकि जाइत छैन्हि आ हुनक लगभग प्रत्येक कथा खण्डित होइत एहि मूल्यकेँ पुनर्स्थापित करबाक कलात्मक चेष्टा बनि जाइत अछि।

सहज-स्वभाविक कथोपकथनक मुक्तावलीसँ बनल-बूनल ई कथा सभक कथाकारक अपन परिवेशक भोगल यथार्थ सभक चित्रावलीसँ सजाओल सुन्दर 'अलबम' थिक।

कथाकार सुजीत कुमारक कथाक सेहो एक गोट प्रमुख तत्व थिक सहज मानवीय राग-बन्ध। सुप्रसिद्ध आलोचक ई.एम.एलब्राइड लिखने छथि जे कथा-साहित्यक समस्त भावात्मक तत्वमे एकटा प्रेमे एहन थिक जकर सर्वाधिक प्रयोग भेल अछि, कारण प्रेम मानव-स्वभावक सर्वव्यापक तत्व थिक।

'फूल फुलाइएकऽ रहल' कथाक उच्च कुलशीला, सुशिक्षिता नायिका पिंकी अन्तर्द्वन्द्वक भंवरमे फँसि उबडुब करैत मुक्तिक हेतु तखन हाथ पएर भाँजऽ लगैत छथि। जखन हुनका पता लगैत छैन्हि जे जाहि पुरुषकेँ सहायक स्टेशन मास्टर कहि हुनक विवाह रचाओल गेल छल आ जकरा अपन सम्पूर्ण संचेतना समर्पण दऽ ओ इन्द्रधनुषी कल्पनाक इन्द्रजालमे ओझराएलि अपन सुधिबुधि हेरा चुकलि छलीह से सहायक स्टेशन मास्टर नहि एकटा साधारण पैटमैन अछि जे वस्तुत: अपन मालिक स्टेशन मास्टर आ सहायक स्टेशन मास्टरक घरलए बजारसँ झोड़ाक झोड़ा तरकारी कीनिकऽ अनैत अछि तऽ ओ सातम आसमानसँ खसैत छथि। मुदा, ई स्वयंसिद्ध नायिका अग्निकेँ साक्षी राखि लेल गेल पतिव्रत्य संकल्पकेँ स्मरण कए एकटा नव अवतार लैत छथि - अपन चिताक छाउरसँ पुन: उड़ि आसमानकेँ छुबैत मिथकीय पन्छी 'स्फिङ्स' जेकाँ ! नायककेँ एम.ए.धरि पढ़बैत छथि। अन्तत: नायक सहायक स्टेशन मास्टरक पदपर प्रतिष्ठित होइत छथि।

'नयाँ व्यपार'-क रोगग्रस्त नायक जितेन्द्र प्रसादक हँसैत-खेलैत गार्हस्थ जीवन महत्वकांक्षाक बबण्डरमे उधियाकऽ तहस-नहस भऽ गेल अछि। स्वयं रोगशैय्यापर पड़ल छथि, बच्चासभ अपन-अपन व्यवसाय-संसारमे हेराएल अछि आ पत्नी साधना सड़कपर चलैत लोकक आँखिमे गरदा झोंकैत, मिश्राजीक स्कूटरपर बैसि, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवसमे सहभागी होएबाक लेल उड़ि जाइत छथि। कथा वर्तमान पारिवारिक जीवनक विद्रूपता आ विसङ्गतिकेँ रेखाङ्कित करैत अछि।

'खाली घर'-क नायक जयचन्द्र आ नायिका जानकी रेलक पटरी जेकाँ जीवन पर्यन्त समानान्तर चलैत छथि, मुदा कहियो, कखनो मीलि ने पबैत छथि। तकर कारण छैक पतिकेँ आदेश-अनुवर्तिनी 'रोबोट' नारीक चाहिऐन्हि, सासु-ससुरकेँ पुतहुक पटमासि कएल बहिकिरनीक बेगरता छैन्हि। मुदा पति अपन 'स्व'-क संग जीबाक आकांक्षिणी छथि। एकटा शीतयुद्धमे जीवन बीति जाइत अछि, रीति जाइत अछि।

'लाल किताब' परामनोविज्ञानपर आधारित रहस्य-रोमाञ्चसँ भड़ल कथा थिक। सेवक प्रसाद यादवजी १८ गतेकेँ अपन कक्षमे एकसरि बैसलि कथा नायिका मित्रपत्नीकेँ अत्यन्त अनुराग पूर्वक एक गोट लाल डायरी भेंट कऽ गेल रहै छथि। मित्रपत्नीकेँ जबर्दस्ती हाथ पकड़ि ओ अपना लग बैसबै छथि-हाथ अकल्पित रुपें सर्द-हेमाल किए लगै छल से ओ बूझि नहि पबैत छथि। मुदा जखन मित्रक मृत्युपर शोकविह्वल भेल

नायिका पति बाहरसँ आबिकऽ सेवक प्रसादक मृत्यु सत्रहे गते भऽ गेल होएबाक सूचना दै छथिन्ह तऽ ओ काँपि उठैत छथि ।

मायक सह पाबि गिन्नी पढ़ाइ छोड़ि नृत्यमे प्रशिक्षित भऽ आय दिन नव-नव 'पब्लिक शो' करऽ लगलीह। बाप अपन बेटीकेँ ग्लैमर दिशि आकृष्ट देखि चिन्तामग्न रहै छथि, मुदा जिदाहि पत्नीक आगाँ विवश रहै छथि । परिणामत: जखन पता चलल जे गिन्नी व्यसनी, व्यभिचारिणी आ गर्भिणी भऽ गेलि छथि तऽ वातावरण हाक्रोशकऽ उठैत अछि। तावत बहुत बिलम्ब भऽ गेल रहैत छैक ।

'जादू' कथाक नायिका सिम्मी घरपर जा कम्पनीक उत्पाद बेचऽवाली सेल्सगर्ल छलीह, मुदा हुनक मधुरवाणी आ शिष्ट व्यवहारक जादू रेणु आ हुनकर पतिक दिमागपर एना ने चढ़ल जे रेणुक पति हुनका अपन कम्पनीक नीक पदक हेतु अफर दऽ देलथिन्ह ।

परम्परावादी मूल्यक खण्डहरपर ठाढ़ होइत बलुआही पारिवारिक संरचनापर कठोर प्रहार अछि कथा- ' आदर्श' परम्परावादी पति आ सासुकेँ लात मारि घर छोड़ि चलि तऽ अबै छथि अर्द्धआधुनिका शिक्षिका नायिका, मुदा पन्द्रह वर्षक पश्चात् जखन अपन कक्षामे एक गोट भविष्णु युवकक नाम ' आदर्श' सूनि ओ चिहुँकि उठै छथि जेना ककोड़विच्छ्र अनचोकेमे डंक मारि देने होइक। आदर्शक पिताक नाम छै - अरुण, जिला न्यायाधीश, अर्थात् ओकर पूर्वपति । स्टाफ रुममे आबिकऽ धम्म दऽ बैसि जाइत छथि, मस्तिष्कमे अन्हड़-बिहाड़ि नेने। एहि स्थलपर आबि विखण्डनवादी मूल्य हारि जाइत अछि आ संयुक्त परिवारक परम्परावादी मूल्य विजय घोष करैत अछि।

'अर्थहीन यात्रा'क नायिका नेहा अपन पति माधवसँ एहि दुआरे असन्तुष्ट रहैत छथि जे ओ महत्वकांक्षाक उन्मादसँ ग्रस्त नहि छथि, पार्टी-क्लबक सौखीन नहि छथि, भौतिक चमक दमकमे विश्वास नहि करैत छथि, नेहाक लेल ' गिफ्ट' नहि अनैत छथि आदि। तलकालए ओ जानकीरामसँ विवाह करैत छथि, बेटी तेजिकऽ। फेर ओ जानकी रामकेँ छोड़ि अन्य पुरुष संगे रहए लगैत छथि - पति पत्नीवत्, मुदा अविवाहित । पश्चिमसँ आएल 'लिविङ्ग टूगेदर'-क चपेटिमे पड़लि नेहा अन्तत: अपनहि लेल निर्णायक कारण पश्चातापक आगिमे धू-धूकऽ जरऽ लगैत छथि । प्रस्तुत कथा सेहो पछबा हवाक विरोध आ पुरवाक समर्थनमे देवाल जेकाँ ठाढ़ अछि।

नारी मनोविज्ञानक सुन्दर आ यर्थाथवादी विश्लेषण प्रस्तुत करैत कथा 'व्यर्थक उड़ान'-क नायक कार्यालयक काजसँ जे विराटनगर गेलाह तऽ दू-चारि दिन बिलम्ब की भेलैन्हि नायिका ऊनी स्वेटर जेकाँ मोनमे लहराइत भावक रंग-बिरंगी लच्छाकेँ ओभरवैत-सोभरवैत जँ दुर्भाग्यसँ वैधव्यक पहाड़ टूटि पड़ल होइन्हि तऽ शेष यात्रा कमलसंग बितएबाक, ओकरा संग हनीमून मनएबाधरिक कल्पनामे डूबि जाइ छथि कि धम्म दऽ पति जूमि जाइत छथिन्ह। ओ पतिकेँ भरि पाँज पजियाकऽ हबोढ़कार भऽ कानऽ लगै छथि ।

'निष्ठा कि देखाबा' एक गोट घोर यथार्थवादी मार्मिक कथा अछि। नीमाक पति सोहनक दुनू किडनी सड़ि गेल छैक जकर प्रत्यारोपण डाक्टरक सलाह अनुसार भेल्लोरमे जा करएबाक बदला ओ पतिकेँ जल्दीसँ जल्दी गाम एहि दुआरे लऽ जाइत छथि जे सम्पति सम्बन्धी कागजात सभपर हुनकर हस्ताक्षर लेल जा सकए। पतिकेँ मरबाक चिन्ता नहि, सम्पति डुबबाक चिन्ता बेसी घेरने छैन्हि। मुदा भाग्यक व्यंग्य ई थिक जे अन्तिम साँसधरि पति हुनका पतिपरायणा मानैत छथि ।

'केहन सजाय' एक गोट टुग्गरि बालिका चमेलीक कथा अछि। जकरा कोनो सन्तानहीन सम्भ्रान्त दम्पती गोद नेने छल, मुदा जखन ओहि दम्पतीकेँ अपन औरसँ सन्तान जनमि जाइत छैक, चमेली ओहि घरमे नहि, 'महिला सदन'मे पठा देल जाइत छथि। ओ तऽ धन्य कही संस्थाक नव अध्यक्षा आ पूर्व प्रधानाध्यापिका कामिनी मैडमकेँ जनिक करुणापूर्ण प्रयाससँ ओ रितेशक संग परिणय सूत्रमे बन्हा जीवनक भसिआइत नाओक लेल किनार पाबि लैत छथि ।

मेनकाक कोमल नारी हृदयकेँ हँथोड़ैथि 'मेनका' जीवन झंझावातक आघात-प्रतिघातसँ नारी हृदय समुद्रमे उठैत उत्ताल तरङ्गक विक्षोभकारी कथा थिक। मेनका परित्यक्ता थिकीह। हुनक पति चन्द्रभूषण सुन्दरी

युवती नीनाक मोहपाशमे ओझरा हुनकर परित्यागक देने छलथिन। नारी-अहंपर चोट लगैत अछि। मेनका प्राध्यापन सेवामे संलग्न छथि, जत हिनक सम्पर्क विवाहित सहकर्मी राजीव सरसँ होइत छैन्हि। राजीव सरक व्यक्तित्वक चुम्बकीय प्रभावमे मेनकाक व्यक्तित्व लौहकण जेकाँ आकृष्ट होइत अछि, मुदा जखन ओ सोचै छथि जे राजीवपत्नी आरतीक हेतु हुनक प्रणय-लीला नीना-कर्मसँ कम हिंसक किंवा घृणित नहि होएत त ओ अपनामे सिमटिक कठोर लौहपिण्ड बनि जाइत छथि, जे चुम्बककेँ घीचि सकैत अछि, मुदा चुम्बकसँ घिचा नहि सकैत अछि।

कथाकार सुजीत कुमार झाक कथाक विषय- चयन, बनावट आ बुनावट, भाषा शैली आ कलात्मक उच्चतामे उत्तरोत्तर प्रौढ़ता अबैत जाएत आ ओ मैथिली कथाक हेतु एहिना विषय आ शिल्पक नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत नव प्रतिमानक स्थापनामे सफल होएताह, हमर विश्वास अछि।

जनकपुरधाम

१५-११-०६८

सुजीतक जिद्दी
गजेन्द्र ठाकुर

सुजीतक नव कथा संग्रह सम्वेदनामे गहींरधरि उतरल अछि। आदर्श कथामे कथाकार सुजीत महिला सूत्रधार बनल छथि, शैलीक भिन्नताक संग घर बलासँ पहिने नहाएल छी त बाल्टिन माँजि दिय नहि त घर बलाके उमेर घटैत छैक। सासुक मुँहसँ ई गप सूनि भैरहवा नगरमे पललि मुदा देहातमे बियाहलि महिला कथा सूत्रधार अपन विधवा सासुक विषयमे सोचै छथि जे जँ बाल्टिन मँजलासँ पतिक उमेर बढ़ते छै त ओ किए विधवा भ गेली ! पति अरुण अकस-तिकसमे परल अछि। माए आ पत्नी दुनू ओकरा चाही। मुदा सूत्रधार घर छोड़ि एलीह। अरुण कहैत रहथि जे जँ हुनका बेटा हएतैन्हि त ओ ओकर नाम आदर्श रखताह।

जिद्दी कथामे शारदा अपन नृत्य आ अभिनयक बिच्चेमे छोड़ल जएबाक बात मोनमे रखने छथि आ बेटा जयन्त आ बेटी गिन्नीक नृत्य आ अभिनयक प्रति स्नेहमे अपन उद्देश्य देखै छथि। पति विरोध करै छथि। बेटा त नृत्य आ अभिनय छोड़ि दैत अछि मुदा बेटी हुनकर उद्देश्यकेँ पूर्ण करैत देखाइत छैन्हि । मुदा तखने दारु, सिगरेट आ अनैतिक सम्बन्ध.. कथाक पूर्वार्धे नृत्य आ अभिनयक प्रति दृष्टिकोण उत्तरार्ध महिला सशक्तिकरण दिस जाइत-जाइत कतौ आन ठाम चलि जाइत अछि। बेटा नृत्य आ अभिनय छोड़ि दैछैन्हि मुदा शारदाक बेटी नै.. महिलाक आकांक्षा महिला द्वारा पूर्ण होइत-होइत अनचोक्के कथ्य आ उद्देश्य भसिया जाइत अछि।

फूल फुलाइएक रहलमे सेहो महिला सूत्रधारक मानसिक विश्लेषण सोझाँ आएल अछि। कनेक रंग दब रहबाक कारण बियाहमे दिक्कत होइ छैन्हि, मुदा फेर एकटा सुन्नर लड़का भेटै छैन्हि। मुदा ओतौ धोखा.. मुदा ओ अपनाकेँ सम्हारि लै छथि आ किछु दिनमे सभ ठीक भ जाइत अछि।

'केहन सजाय' कथामे एकटा परिवार अपन गोद लेल बेटीकेँ छोड़ि दैत अछि, अधेर उमेरमे जखन ओकरा अपन बच्चा होइ छै तखन ! मुदा एहि कथामे सेहो कथा कहैत-कहैत कथाकार रितेश आ चमेलीक प्रेमकेँ फरिछा नइँ पबै छथि। चमेलीकेँ जे माता-पिता गोद लेलखिन्ह से यादव रहथि, ई कहबाक आवश्यकता

कथाकारकेँ नइँ पढ़बाक चाही, कारण एहि कथामे यादवक लोक संस्कृतिक कोनो वर्ण नै भेल छै। फेर कथाकार तखने पेटमे बच्चा भऽ गेल कहि कथाकेँ कपचि दैत छथि। आधुनिक कथा-कथामे कथ्य तऽ होइते अछि, मुदा ओहि संग जओं तहपर तह समस्या भेटैत अछि तऽ तकर समाधान लेल सेहो कथाकारकेँ शब्दावली, लोकव्यवहार आ शिल्पक संग लेबऽ पड़ैत छैन्हि। सम्वेदनाक तहमे कथाकार जाइ तऽ छथि, मुदा बेसी ठाम कथ्य कहि देबाधरि सिमित रहि गेलासँ कथा काँच रहि गेल सन बूझि पड़ैत अछि। आशा अछि आगाँक संग्रहमे कथाकारक सामर्थ्य आओर नीक जकाँ देखाइ पड़त।

दिल्ली,भारत

ठीके फूल फुलाएल

अशोक दत्त

युवा कथाकार सुजीत कुमार झा अपन अलगट्टे शिल्पक कारणे मिथिलाञ्चलक अन्य कथाकारसँ फराक पहिचान बना चूकल छथि। बहुत कम समयमे सुजीत झाक ई कथाक दोसर पोथी अछि। हिनकामे किछु आओर करबाक लिलसा एते प्रवल अछि जे हिनका सभ क्षेत्रमे सफलता भेटैत छैन्हि। जहिना सुजीत झा अपन श्रम आ कर्मठताक बलपर पत्रकारितामे अपनाकेँ स्थापित कएने छथि तहिना साहित्य क्षेत्रमे सेहो बेछप पहिचान बनाबऽमे सफल भेल छथि।

सुजीत झाक ई कथा सङ्ग्रह 'जिद्दी'-क प्रत्येक कथा समाजमे व्याप्त सत्यक उद्‌घाटन करैत अछि। उहापोहक जीवन जीवि रहल लोक, अन्तर्द्वन्द्वमे फँसल लोक आ आत्मकेन्द्रित लोकक अवस्थाक चित्रण सहजहि एहि कथा सङ्ग्रहमे भेटैत अछि।

हिनक एहि सङ्ग्रहमे अधिकांश कथामे महिला खल-पात्र अर्थात् ई कही जे बेसी भटकावमे रहल अछि मुदा फूल फुलाइएकऽ रहल कथाक नायिका पिंकीक जकरा स्टेशन मास्टर कहि बियाह कराओल गेल रहैछ आ बादमे जाकऽ पिंकीके पता चलैछ जे हुनक पति तऽ पैटमैन अछि ताहिके बादक उहापोह आ ताहिपर अपनाकेँ नियंत्रितकऽ अपन पतिके पढ़ऽमे सहयोग करैत स्टेशन मास्टर बनाकऽ रहब आजुक समाजक लेल एकटा पथप्रदर्शक बनल अछि जे धैर्य आ संयमसँ लोक अपन लक्ष्य प्राप्त कऽ सकैत अछि।

ठीके फूल फुलाएल। हमर कहबाक तात्पर्य ई जे कोंढ़ीके रुपमे देखाएल कथाकार सुजीत झा आब फूल भऽ गेल छथि। ई अपनो जिदियाहे छथि आ तकरे परिणाम अछि 'जिद्दी'। हिनक जिद्द तऽ आगाँ बढ़ा रहल छैन्हि तहन एहि सङ्ग्रहक अधिकांश कथाक जिदियाह पात्र सामाजिक विकृति दिस आङुर देखबैत अछि। जेना 'अर्थहीन यात्रा'-क नायिका नेहा अपन जिद्दक कारणे कहियो सुखी नहि रहि सकल। एकके बाद एक पुरुष कपड़ा जेकाँ बदलैत रहल जकर परिणाम मात्र निराशा भेटलैक।

तहिना 'जिद्दी' कथामे मायक जिद्दक कारणे बच्चापर पड़ल प्रभाव आ ग्लैमरक चकाचौंधमे भसियाइत आजुक पुस्ताक सजिव चित्रण कएल गेल अछि। जओं बापक चिन्ता दिस मायक ध्यान समयमे पड़ल रहितैक तऽ गिन्नीक अवस्था एहन नहि भेल रहितैक। समयपर नइँ चेतने पाछाँ पछताइएकऽ किछु नइँ होइत छैक से एहि कथामे खूब निक जेकाँ सुतरल अछि।

एहि कथा सङ्ग्रहक आदर्श कथामे जिद्दक कारणे निराशा आ पश्चातापक सहज चित्रण कएल गेल अछि। नव व्यपार कथामे बेसी महत्वकांक्षा केना लोककेँ अपनासँ दूर कऽ दैत छैक, अपन कर्तव्यसँ विमुख कऽ दैत छै तकर चित्रण विमार पतिके छोड़िकऽ कार्यक्रममे सहभागी होबऽ मिश्राजीक स्कुटरपर जाइत अछि। वर्तमानमे पारिवारिक सम्बन्ध कते टूटि रहल अछि ताहिके सजीव चित्रण अछि।

कथाकार सुजीत झा जाहि तरहें साहित्य क्षेत्रमे अपन डेग समधानिकऽ बढ़ा रहल छथि ताहिसँ ई सङ्केत अवश्य भेटैत अछि जे मैथिलीकेँ ई बहुत किछु दऽ सकैत छथि। कथाक विषय चयन, भाषा शैली आ कलात्मकतामे आओर निखार अबौक हिनक साहित्यक यात्रा अनवरत चलैत रहओ आ हमरा सभकेँ नित नवीन रचनाक रसास्वादन करबैत रहथु ताहि हेतु अनन्त शुभकामना।

जनकपुरधाम

किछु हमरो

सुजीत कुमार झा

चिड़ै कथा सङ्ग्रह आ रिपोर्ट डायरीक बाद जिद्दी कथा सङ्ग्रह हमर तेसर कृति अछि। एक वर्ष भितर भलेही हमर तेसर कृति प्रकाशन भऽ रहल हुअए मुदा, हमरा लेल एहिसँ आश्चर्यक बात ई अछि एक महिना भितर लिखल सभ कथाके सङ्ग्रहक रुपमे प्रकाशित करब। जिद्दीक सभ कथा हम एक महिनाक भितरे लिखने छी।

खजुरी वाली नामक कथा सङ्ग्रह तैयार छल। मुदा तइयो हम एकरे प्राथमिकता देलहुँ। जिद्दी कथा सङ्ग्रह निकालऽमे हम कतेक सफल भेलहुँ से तऽ समालोचक, शुभचिन्तक सभ कहताह तखने बुझब। मुदा एकटा लेखककेँ रुपमे हम ई अवश्य कहि सकैत छी, लोक यदि कोनो निक चीजक लेल सोचत तऽ परिणाम निके निकलत। कोना सङ्ग्रह जोगाड़ कथा निकलि गेल पते नहि चलल।

सम्पूर्ण कथाके टाइपसँ लऽक कथानाक बनाबऽमे रेडियो मिथिला सहकर्मी अमरकान्त अमर, सुधीरचन्द्र आचार्य, खुश्बू झा आ सीमा चौधरीके महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। ई चारु गोटे नहि रहितथि तऽ एतेक जल्दी हमर ई किताब नहि अबैत। तँए चारु गोटेके धन्यवाद देने बिना आगाँ नहि बढ़ल जा सकैए। तहिना भूमिका लिखऽसँ लऽकऽ भाषा सुद्धिधरि देखि देनिहार आदरणीय अशोक दत्तकेँ सेहो नहि बिसरल जा सकैए। एहि सङ्ग्रहके भूमिका लिखऽबला आदरणीय डा. राजेन्द्र विमल आ दिल्लीक गजेन्द्र ठाकुरकेँ हृदयसँ श्रद्धा व्यक्त करैत छी। डा. विमल लग भूमिका लिखबऽ गेलहुँ तऽ हुनकर स्वास्थ्य अवस्था देखि कथा लऽकऽ घूरि जाइ तेहन मोन भेल छल। मुदा अपन खराब स्वास्थ्यके सेहो ध्यान नहि दऽ डा. विमल हमरा लेल भूमिका लिख देलैन्हि से हमरा जनैत हमरा प्रति अगाध स्नेहक फल अछि। डा. विमलके स्वास्थ्य हएबाक कामना करैत छी। तहिना गजेन्द्र ठाकुरक सहयोगके नहि बिसरल जासकैए। तहिना कभरपर नेपाल पत्रकार महासंघक पूर्व केन्द्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र झा, वरिष्ठ चिकित्सक डा. विजय कुमार सिंह आ विद्यापति पुरस्कार कोषक संयोजक अयोध्यानाथ चौधरी हमरा लेल दू शब्द लिख आर्शिवाद देलैन्हि अछि। एहिके लेल हुनको लोकनिकेँ धन्यवाद दैत छियैन्हि।

नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाक अध्यक्ष रामअशिष यादव, एफ.एम. एशोसिएशन वानक केन्द्रीय उपाध्यक्ष राजेश कुमार कर्ण, कान्तिपुरक श्यामसुन्दर शशि, जनकपुर टुडेक सम्पादक बृजकुमार यादव, मिथिला ऋतुक संम्पादक उमेश साह, साहित्यकार धीरेन्द्र प्रेमर्षि, पत्रकार चन्द्र किशोर झा, रामानन्द युवा क्लवक पूर्व अध्यक्ष जीवनाथ चौधरी, नाटककार अवधेश पोखरेल, प्राज्ञ रमेश रञ्जन, मिथिला नाट्यकला परिषद्क अध्यक्ष सुनील मल्लिकके सहयोगक लेल हृदयसँ आभार प्रकट करैत छी।

पुस्तकक आवरणक लेल फोटो चयनमे योगदानक लेल रेडियो मिथिलाक सहकर्मी अतिश कुमार मिश्र आ काठमाण्डूक आवरण डिजाइनर अमन श्रेष्ठकें सेहो धन्यवाद दैत छी। तहिना रेडियो मिथिलाक स्टेशन मेनेजर राकेश कुमार सिंह, इश्वरचन्द्र झा , रोशन कुमार झा, मुकेश पाठक , जयन्त ठाकुर , घनश्याम मिश्र, रुपेश कुमार सिंह,संजीव कुमार झा, विनोद कुमार महतो, वटुकनाथ झा , सुभाष कर्ण, कैलाश दास,धीरेन्द्र राय यादवकें सेहो बहुत-बहुत धन्यवाद दैत छी। ई पुस्तक कतेक जल्दी निकैल जाए ताहि लेल बेर-बेर खोजखबरि लेबए बाली हमर माय जयमङ्गला देवी, बाबुजी सुखेन्द्र झा तथा पीसा चन्द्रमोहन झा 'पढुवा'क प्रति सेहो हृदयसँ श्रद्धा व्यक्त करैत छी।

अन्तमे जऔं आफन्त नेपाल पुस्तक प्रकाशनक लेल तैयार नहि भेल रहैत तः एतेक सहजतासँ ई पुस्तक नहि अबैत। ताहि लेल आफन्त नेपाल आ एकर कार्यक्रम संयोजक जयप्रकाश मण्डल प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करैत छी।

sujitjha100.80@gmail.com

१

इन्जनकँ शटिङ्ग करबाक अवाज आबि रहल छल। बीच-बीचमे सिटी सेहो बाजि उठैत छल। सवारी गाड़ी आ माल गाड़ीके आबऽ-जाएके अवाज जोड़सँ सुनाइ दऽ रहल छल। हम रोबोट जकाँ इमहरसँ ओम्हर भगैत कखनो ग्यासपर पानि रखैत छलहुँ तः कखनो सोनूकैं दुधक गिलास हाथमे दैत छलहुँ। बीच-बीचमे हुनको आवश्यकता पुराकऽ रहल छलहुँ। भोरक समय कोना बित जाइया पते नहि चलैत अछि। ९ बजेधरि ओहो स्टेशन चलि जाइत छथि आ सोनू सेहो स्कूलक लेल बिदा भऽ जाइत अछि। फेर हम रहि जाइत छी। आ हमर अस्त-व्यस्त भेल घर जकरा हम फेरसँ सजाबऽ लगैत छी।

सोनू अपन बैग पीठपर रखलक आ स्कूल चलि देलक, एम्हर ओहो हमरा बाँहिपर एकटा स्नेहिल हाथ थप-थपाकऽ चलि देला।

रातिसँ पड़ि रहल झिंसी आ बादलक कारणे ठण्ढक अनुभूति भऽ रहल छल। हम आलमारीमेसँ साल निकालि कऽ ओढ़ि लेलहुँ।

आगाँमे टेबुलपर हमरा दुनू गोटेकैं बिबाहक पहिल वर्षगाँठक खीचल फोटो राखल छल। हम एक टक्क देखैत रहि गेलहुँ गुलाबी रंगक साड़ी पहिरने हम हुनकर कान्हपर माथ रखने छलहुँ। फोटो हम अपना हाथमे लऽ लेलहुँ। हमरा अपन अतीत अपने चारु दिस घुमैत प्रतीत भेल। माँ डाइनिङ रुमसँ कहलक, 'पिंकी, कनि बेटी, चाह बना कऽ ला नऽ।'

हम भानस घरमे मचियापर बैसि आलू सोहि रहल छलहुँ, बगलमे कोबीक तरकारी काटल छल, हमरा कोबीक तरकारी बहुत नीक लगैत अछि, ओकरे देखि रहल छलहुँ। माँके प्रेम भरल अवाज सूनिकऽ हमर हृदय जोड़-जोड़सँ धड़कऽ लागल ।

हमरा बूझल छल एहि समय चाहक लेल किए कहल गेल अछि । रातिएमे हम, माँ आ बाबुजीक बात सूनि लेने छलहुँ। ओहि बातक आधारपर हमरा ई पता चलि गेल छल काल्हि जखन चारि दिनक यात्रासँ बाबुजी घर अएलाह ओहि क्रममे ट्रेनमे हुनका एक नव-युवक भेटल छल जे अपने जातिक आ रोजगारमे लागल छल । ओ जयनगर स्टेशनपर सहायक स्टेशन मास्टर छल । बाबुजी हुनकर बातसँ बहुत प्रभावित भेलाह आ किछु मिनेटक यात्रामे भेल बातसँ परस्पर घूलि-मीलि गेलाक बाद बाबुजी हुनकासँ हमरा बिषयमे बात कएने छलैथि, आ ओ सहमत भेलाक बाद बाबुजी हुनका गाम जा कऽ हमर बिबाह एक प्रकारसँ तय कऽ लेने छलैथि ।

हम एम.ए. पास भऽ गेल छी, घरमे सभ हमर नोकरीक विरोधमे अछि । जहिना-जहिना हमर उमेर बढ़ि रहल अछि, माँ आ बाबुजीक चिन्ता सेहो तारक गाछ जकाँ बढ़ि रहल अछि। घरमे दान-दहेज देबाक लेल बुहत बेसी किछु नहि अछि, तैयो ओ अपन बेटीक लेल उपयुक्त बरक खोजीमे छलाह । कतेको लोक हमरा देखऽ आएल, मुदा तिलकक अभाव आ फेर हमर पिरसियाम रंगक कारण बातचित बढ़िए नहि रहल छल । एहि सभ बीच हमर अपन छोट सन सुन्दर घरक कल्पना टुटैत बुझा रहल छल ।

बाबुजीक बताओल बातक आधारपर हमरा मनमे एहि युवकके छवि बनिकऽ आबि रहल छल, हृदय जोड़सँ धड़ैक रहल छल । धड़कैत हृदयसँ चाह बनाकऽ ओढ़नी ठीक करैत डाइनिङ रुममे चलि गेलहुँ। बाबुजी आ माँ बहुत खुशी देखाइ दऽ रहल छल । माँ ओहि युवकक सम्बन्धमे जानकारी देलैन्हि ।

हमरा लागल जेना बहुत दिनक पतझरकेँ बाद बहार आबि गेल अछि । चारु दिस गाछ सभपर हरियर कनोजरि फूटि गेल अछि ।

अपन भावनामे हम स्वयं बहैत जा रहल छलहुँ, ओहि युवकके फोटो सेहो हमरा देखाओल गेल । देखि कऽ दंग रहि गेलहुँ अनायासे मुँहसँ खसि पड़ल अबेरेसँ किए नहि हुअए मुदा, मोन जोगर जीवन संगी भेट रहल अछि ।

शायद एतेक सुन्दर पढ़ल-लीखल युवकसँ हमर संसार बसऽ बला छल तँए एखनधरि हमर हिसाब किताब नहि बैसल छल । फोटो हाथमे लऽ हम इएह सभ सोचि रहल छलहुँ।

'चट् मङनी पट बिवाह' बला बात भेल । एतेक बढियाँ लड़का कहीं हाथसँ नहि निकलि जाए से सोचि बाबुजी एक महिना भितरे बिबाह दुरागमन कऽ देलैन्हि ।

लड़काक बाबु नहि छल माँ गामेमे रहैत छलीह। अगहन महिना जाढ़ शुरुए भऽ रहल छल जाहिपर मन पसिनक जीवन संगी संग हमर कल्पनाक चिड़ै आकाशमे स्वच्छन्द उड़ लागल । चारि दिन सासुरमे रहलाक बाद जयनगर स्टेशनक लेल बिदा भऽ गेलहुँ। ओहि स्थानक लेल हम तऽ ओहिना बहुत उत्सुक छलहुँ। पतिक व्यवहार सेहो बहुत बढियाँ छल । हुनक हँसमुखक मुखाकृतिकेँ अएना जकाँ देखैत छलहुँ। एक दोसरसँ बातचित करैत कखन जयनगर स्टेशन आबि गेल पते नहि चलल ।

'पिंकी, स्टेशन आबि गेल ।' हुनकर अवाज सुनाइ देलक, हम एकदम चौककऽ जल्दीसँ उठि अपन माथ झाँपऽ लगलहुँ। कनेक लाजो हुअए जे पतिक नोकरी बला स्थानपर पहिल बेर अएलहुँ अछि । फेर जल्दी-जल्दी हुनकर पाछा चलऽ लगलहुँ। ओ बैग हाथमे लऽ आगाँ-आगाँ जारहल छलाह । हम सोचि रहल छलहुँ स्टेशनपर हुनकर चिन्हा-परिचयके दू-तीन गोटे मित्र हमरा अवश्य लेबऽ आओत, कारण ओ

कहने छलैथि जे एतेक जल्दीमे बिबाह भेल की ककरो अएबाक सम्भव नहि भेल। मुदा आश्चर्य तऽ तखन लागल जखन केओ देखाइ नहि देलक। हम असगरे समान सभ लऽ हुनकर पाछाँ चलि रहल छलहुँ। जयनगर स्टेशनसँ किछुए दूरपर किछु क्वाटर सभ बनल छल। एकके बाद एक क्वाटर पाछा छूटि रहल छल हमरा बुझऽमे किछु नहि आबि रहल छल। अन्तत एकटा छोटका क्वाटरक आगा पहुँचकऽ ओ गेटक ताला खोललैन्हि। छोट रुम ओहिसँ सटले एकटा भानस घर आ पाछूमे बाथरुम छल। भानस घरमे आठ दशटा बरतन आ कनि-मनि डिब्बा राखल छल। एकटा पुरान पेटी सेहो छल।

ई की ? हम अबाक भऽ हुनका दिस ताकऽ लगलहुँ। ई सभ हमरा अपने आपमे अप्रत्याशित आ अजीब लागल।

'एना की देखि रहल छी ? एखन क्वाटर नहि भेटल अछि, तँए एहिमे रहि रहल छी। जहिना क्वाटर भेटत बदलि लेब,' ओ बातकेँ आगा बढ़बैत कहलैन्हि, 'ओना एखनधरि असगरे छलहुँ किए बड़का घर लितहुँ। आब अहाँ आबि गेल छी तऽ बड़का घरक कोशिश करब।' ओ लग आबिकऽ हमरा बाहिपर हाथ थप-थपा खुशीकऽ देलैन्हि।

एक-दू दिनक बाद ओ अपन काजपर सेहो जाए लगलैथि आ हम असगरे रहऽ लगलहुँ। धीरे-धीरे लग पासक महिला सभ हमरा लग आबऽ लगलीह। एक दिन चालीस-पैतालीस बर्षक एकटा महिला हमरा घर लगसँ जाइत काल देखिकऽ टोकि देलीह। भेष-भुषा आ बातचितसँ पता चलल ओ एतऽके स्टेशन मास्टरक कनियाँ छथि। एखनधरि जतेक महिला अबैत छलीह, पारस्परिक बिचारधारा आ स्तरमे समान्य लगलाक कारण किछु जमि नहि रहल छल। ई सोचिकऽ जखन स्टेशन मास्टरक कनियाँ अछि तऽ बातचितमे आनन्द आओत, हम हुनका आदरसँ घरमे अनलहुँ आ खूलि कऽ बातचित करऽ लगलहुँ।

'लगैत अछि, अहाँ बहुत पढ़ल-लीखल छी ?' एका एक ओ पुछलैन्हि।

'हँ हम एमए पास छी,' हम गर्वसँ कहलहुँ।

'अहाँकेँ बूझल अछि, अहाँक पति एतऽ की करैत छथि?' ओ गम्भीरतासँ पुछलीह।

'हँ, एतऽ ओ सहायक स्टेशन मास्टर छथि।' हम ओही गर्वसँ उत्तर देलहुँ।

'ई अहाँसँ के कहलक अछि ?' ओ फेरसँ प्रश्न कएलीह।

'ओहे हमरा आ हमर नैहरक लोककेँ कहने छलैथि।' हम आब सतर्क भऽ गेल छलहुँ आ संगहि आश्चर्य सेहो भऽ रहल छल की कतहु गरबर तऽ नहि छैक।

'तऽ आब सुनू, अहाँक संग धोखा भेल अछि। ई जगदिश एहि स्टेशनक पैटम्यान अछि।' ओ एक-एक शब्दपर जोड़ दैत कहलैन्हि।

हमर माथ घुमऽ लागल एखनधरि हमरा सन्दर्भमे जतेक घटना घटि रहल छल, ओ हमरा अप्रत्याशित लागि रहल छल, ई नया बात सूनि हम स्तब्ध भऽ गेल छलहुँ। ई तऽ हम कल्पनोमे नहि सोचि सकैत छलहुँ। हम ओ महिलाके मुँह दिस देखि रहल छलहुँ। हमर मोन एखनो अपन प्रियतमक लेल ई बात मानऽके लेल तैयार नहि छल।

शायद ओ हमर मोनक बात बूझिगेल छलीह। दू मिनेटक चुप्पिक बाद हमरा कान्हपर हाथ रखैत कहलैन्हि, 'एना लगैत अछि अहाँकेँ हमरा बातक बिश्वास नहि भऽ रहल अछि। हम अहाँकेँ धोखामे राखऽ नहि चाहैत छी, तँए कालि भोर दश बजे अहाँ हमर घर चलि आउ ओ तरकारी लऽ कऽ आओत। हमरा घरक तरकारी उएह अनैत अछि।

तखन अहाँकेँ सभ सत्य पता चलि जाएत । ई कहि ओ तऽ चलि गेलीह, मुदा हमर मस्तिष्कमे एकटा बबण्डर उठल छल ।

हम ओहि ठाम बैसल आँखिसँ दूर शुन्यमे किछु देखऽ लगलहुँ । हमरा एहि सभपर विश्वासे नहि भऽ रहल छल । मुदा बेर-बेर एकटा बात घूमि रहल छल ओ अपरिचित महिलाके हमरासँ एहन भूठ बाजबाक आवश्यकता किए पड़लै !

मोन कहलक, 'पहिने सही बात पता लगाली, फेर हुनकासँ किछु कही' ई सोचिकऽ ओहि दिन हम चुप रहलहुँ ।

दोसर दिन भोरे दश बजे हुनका गेलाक बाद स्वयं तैयार भऽ कऽ छोटका क्वाटर छोड़ि बड़का क्वाटर दिस बढ़ि गेलहुँ ।

'आउ, बैसू ।' स्टेशन मास्टरक कनियाँ बहुत स्नेहसँ हमरा अपना लग बैसा लेलैन्हि । हम दुनू गोटे आपसमे बातचित कऽ रहल छलहुँ कि ओ तखने आबि गेलाह । वास्तवमे तरकारीक बड़का भगेड़ा नेने घामसँ तऽर भेल पहुँचलैथि ।

जहिना हम दुनू एक-दोसरकेँ देखलहुँ, ओहो स्तब्ध रहि गेलाह, किछु देरक लेल ओ ठकमुड़ी लागल ओतहि ठाढ़ रहि गेलाह । फेर मनकेँ शान्त करैत ओ जल्दीसँ बाँकी पैसा स्टेशन मास्टरक कनियाँकेँ पकड़ा कमानसँ छूटल तीर जेकाँ भागि गेलाह ।

आब सभ स्थिति हमरा आगाँ स्पष्ट भऽ गेल छल । हम लजाइत जल्दीसँ घर आबि केबार बन्द कऽ चौकी पर उल्टा सूति हिचैक-हिचैककऽ कानऽ लगलहुँ । एते पैघ धोखा खाएबाक लेल भरि संसारमे हमही रहि गेल छलहुँ । चौबीस बर्षक बाद एकटा छोटका फुलवारी चाहलहुँ ओहो काँटे-काँटसँ भरल भेटल ।

हमरा हुनकापर बहुत तामस आबि रहल छल । ओ बढ़ियाँ कपड़ा पहिर, अपनाके स्मार्ट बनल देखाकऽ हमरा बाबुजीकेँ धोखा देलैन्हि जे हम सहायक स्टेशन मास्टर छी, जखन की छथि एकटा पैटम्यान ।

जीवनक उल्लास शुरु भेलो नहि छल कि समाप्त सन प्रतीत होबऽ लागल । हम सोचि रहल छलहुँ 'नैहरमे, कुटमैतामे, सडीमे कोना मुँह देखाएब । सभ हमरापर हँसत जे पैटम्यानसँ बिबाह कएने अछि । माँ बाबुजी सेहो भाग्यकेँ लऽ कऽ आजीवन कनैत रहताह ।'

हमरा दिमागमे रंग-बिरंगक बिचार आबि रहल छल । हम दिन भरि किछु नहि खेलहुँ आ नहि कोनो काज कएलहुँ । जखन ओ ६ बजे अएलाह तखने हम चौकीपरसँ उठि हुनका खुब बात कहलहुँ ।

'अहाँ हमरा धोखा किए देलहुँ ? हमर जीवन किए वर्बाद कएलहुँ ? एकटा एम.ए.पास लड़कीकेँ कनियाँ बनाकऽ किए अनलहुँ' हम हुनकापर एकदम बरसि रहल छलहुँ ।

ओ एक दम शान्त भऽ हमरा दिस देखैत बजलाह, 'नहि पिंकी, एहन बात नहि अछि । हमरा मोनमे कोनो धोखा देबाक बात नहि छल, हम अहाँसँ प्रेम करैत छी आ करैत रहब .....'

बात काटि कऽ हम तेजीसँ हुनका लग आबि कऽ चिकरिकऽ कहलहुँ, 'प्रेमक एतऽ प्रश्ने की अछि ? अहाँ अपन औकात तऽ देखू एकटा पैटम्यान भऽकऽ अहाँ हमरा सन लडकीसँ विवाह कएलहुँ आ आब कहैत छी धोखा नहि देलहुँ अछि । हम अहाँ सँग नहि रहि सकैत छी ।'

'सुनू पिंकी हम अहाँकेँ कोनो बातक लेल जोड़ नहि देब मुदा हम साँच कहैत छी, हम एस.एल.सी. धरि पढ़ल छी, आगाँ पढ़बाक हमर बहुत इच्छा छल मुदा बाबुजीक आकस्मिक मृत्यु आ धनाभावक

कारणे हमर पढ़ाइ रुकि गेल। एस.एल.सी. कएलाक बाद कतहुँ नोकरी नहि भेटल। अन्तमे एहिठाम काज करऽ लगलहुँ।' ओ गर बाभन्ल स्वरमे कहि रहल छलैथि।

'हमरा ई सभ नहि सुनबाक अछि आ नहि अहाँके मजबुरीमे हमरा कोनो रुचि अछि। हम आब एतऽ एक्को क्षण नहि रुकि सकैत छी। काल्हि भोरे गाड़ीसँ चलि जाएब।'

'हम अहाँकेँ रोकब नहि आ नहि अहाँकेँ रोकबाक अधिकार अछि। हम अपन गल्ती स्वीकार करैत छी, मुदा एकटा बात धैर्य धऽकऽ सुनू पिंकी, हम ई सोचिकऽ विवाह कएने छलहुँ जे अहाँके हिम्मत पाबिकऽ आगाके पढाइ पूरा करब। हम जे सपना देखने छी, ओ एहि जीवनमे पुरा करब। मुदा अहाँ नहि चाहैत छी तऽ अहाँकेँ इच्छा।' ओ हमरा कान्हपर हाथ राखबाक प्रयास कएलैन्हि। मुदा ओहि समय हम एक घाहिल शेरनी जकाँ तमसायल छलहुँ। हम हुनकर हात जोड़सँ भऽटैक देलहुँ आ बिना हुनका देखने रुमकेँ भितरसँ बन्दकऽ पड़ि रहलहुँ।

ओहि राति निन्न हमरासँ कोशो दूर छल। बाहरक पदचापसँ हमरा अभास भऽ रहल छल ओ बरण्डेमे एमहर-ओमहर टहैल रहल छलाह। बहुत देरधरि हम आवेशमे किछु नहि किछु सोचैत रहलहुँ।

बहुत देरक बाद जखन मोनक बिहारि कनिक कम भेल तखन बिचार करऽ लगलहुँ काल्हि हमरा जएबाक अछि। मुदा जाएब कतऽ ? बाबुजी लग ? मुदा ओ घर तऽ हम छोड़ि आएल छी। आब की ओहने आदर हमरा फेर भेटत ? सभ बातक जानकारी देलाक बाद बाबुजी उल्टे तमसेता। हुनकर स्वास्थ्य आओर खराब भऽ जाएत। माँकेँ तऽ ओहिना ब्लड प्रेसर अछि, ओ कहुँ बेहोश भऽ गेल तऽ ? ओना तऽ हमरा सहानुभूति भेटत, मुदा कहियाधरि ? धीरे-धीरे सभ समान्य भऽ जाएत। मुदा हमरा के अपनाओत ? हमरा भविष्यपर परित्यक्ताक छाप तऽ लागिए जाएत।

'पड़ोसी, संङी, सर-कुटुम्ब जे सुनत, हमरा मुँहपर सान्तवना देत, मुदा पीठ पाछू हमर मजाक उड़ाओत। एतऽसँ गेलाक बाद जे भविष्य हम बनाबऽ चाहैत छी की ओ सम्भव हएत ? भावावेशमे कोनो डेग उठएबासँ पहिने हमरा ई बढियाँ जकाँ सोचि लेबाक चाही जे आगाँ टूटल जीवनकेँ जोड़ि सकत वा नहि ?

'हुनका बदनाम कएलासँ की हमर बदनामी नहि हएत ? जिनका संग सुख-दुख निर्वाह करबाक वचन लेने छलहुँ, यदि ओ गल्तीए कएने छथि तऽ की हम हुनका छोड़ि चलि जाइ ? जँ नइँ तऽ हम की करु ?' हमर पढ़ाइ आ विवेक काज कएलक! हमरा धीरे-धीरे एना लागऽ लागल, 'हमरा ई घर नहि छोड़बाक चाही। आब तऽ हमरा अपन एहि काँटसँ भरल वाटिकाकेँ कोशिश कऽकऽ फूलसँ भरल बनएबाक चाही। चिड़ै जखन खोंता बनबैत अछि तऽ खढ़-पतारसभ निच्चा खसैत रहैत अछि मुदा ओ कहियो हिम्मत नहि हारैत अछि। अपन खोंता अपना अनुकूल बनबैत अछि। हम तऽ पढ़ल-लिखल महिला छी। ओ कहि रहल छथि तऽ शायद ओहो ठीक होथि। सम्भव अछि अपन साधना अधुरा रहलाक कारण आब हमरा माध्यमसँ पूरा करऽ चाहैत होथि, हम तऽ हुनकर अर्धांगिनी छी। महिला तऽ शक्ति होति अछि, पुरुषकेँ पौरुष स्त्रीसँ पूरा होइत अछि।

'हमरा एखन हिम्मत नहि हारबाक चाही। जखन एहि घरमे आबिए गेल छी तऽ एहि घरकेँ अपना अनुकूल सजएबाक प्रयत्न करब।'

भरि राति इएह सोचऽमे निकलि गेल। जखन सूतिकऽ उठलहुँ तऽ उज्जर किरण जँका हमर मन सेहो साफ भऽ गेल छल।

ओ धुनक धनी छलाह ।ओ अपन पढाइ फेरसँ शुरु कएलैन्हि । हमहुँ बोर्डिङ्ग स्कुल पकड़ि लेलहुँ । दुनूगोटाक त्याग-तपस्या आ साहस वास्तवमे रंग लओलक, ओ सात सालमे एम.ए.कऽ लेलैन्हि आ ठीके सहायक स्टेशन मास्टर बनि गेलाह । हमर सभक फूलवारीमे एकटा फूल सोनू सेहो चलि आएल । आब हम नोकरी छोड़ि देने छी ।

कतहु दूरसँ आबि रहल सीटीक आवाजसँ हमर ध्यान भंग भेल । हम फोटो टेबुलपर राखि देलहुँ आ खिड़कीसँ बाहर दिस तकलहुँ ....कतहु दूर रेलक पटरीकेँ दुनू कोर एक-दोसरसँ मिलैत नजरि आबि रहल छल ।

साँझक सात बाजि गेल छल । साधना एखनधरि नहि आएल छलीह । नेहा वरण्डापर उदास बैसल मम्मीके प्रतीक्षा कऽ रहल छल ।

जीतेन्द्र प्रसाद भितर रुममे दर्दसँ परेशान छलाह । यद्यपि दर्द आइ किछु कम छल मुदा, ओ भितरकेँ कछमछीसँ तनावमे छलाह । साँझक चारि बजे चाय पिलाक बादसँ ओ आ नेहा साधनाक प्रतीक्षाकऽ रहल रहैथि । चारि बजे पंकज ब्याट-बल खेलऽ चलि गेल छल । रीना सखीसँ भेट करऽ गेल छल । रहि गेल छल जीतेन्द्र प्रसाद आ नेहा ।

साधना भोरे जलपानकऽ कऽ घरसँ निकलल छलीह, ई कहिकऽ जे बेरियाधरि चलि आएब । बहुत रास काज अछि कहि गेल छलीह, कपड़ा बेचबाक अछि, मिश्राजीके घर भेट करबाक लेल जएबाक अछि, महिला क्लबमे अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवसक कार्यक्रममे जएबाक अछि आ बजारसँ दोकानक लेल समान किनबाक अछि, बेरियाधरि आबि जाएब ।

जीतेन्द्र प्रसाद सोचि रहल छलैथि, ‘की भऽ रहल अछि ? साधना हरदम घरसँ बाहर रहऽ लागल छथि । की भऽ गेल छैन्हि हुनका ? पता नहि कपड़ाक व्यपार आ दोकानकेँ की भऽगेल अछि ? किए आवश्यकता अछि साधनाकेँ एतेक काज उठएबाक ?’ ओ सोचैत जा रहल छलाह, ‘एखन तऽ आजुक दवाइ सेहो बजारसँ लेबाक अछि । पंकज सेहो खेलकऽ नहि आएल अछि । नहि जानि की भऽगेल अछि एहि घरकेँ ?’

नेहाकेँ बजाकऽ ओ अपना लग बैसा लेलैन्हि । जीतेन्द्र प्रसाद आ नेहा दुनू उदास रहैथि । प्रसंग बदलैत जीतेन्द्र नेहाकेँ चाह बनएबाक लेल कहलैन्हि । बूझल छलैन्हि जे चिनी समाप्त भऽ गेलै मुदा, ककरो अनबाक पलखैत नहि छै, तखने नेहा इहो कहलक जे ‘घरमे चाहपत्ती नहि अछि ।’

जीतेन्द्र प्रसाद नेहाक बात सुनलैन्हि । क्षण भरिके लेल ओ किछु विचलित भऽगेला आ फेर शुन्यमे ताकऽ लगलाह ।

जीतेन्द्र प्रसादक मोन विद्रोहकऽ उठल, ‘की एहनो कतहु घर भेलैए, जतऽ कोनो सामञ्जस्यता नहि । एकरा तऽ होटल सेहो नहि कहल जा सकैए, की विमार हएब कोनो अपराध अछि ? ओ जानि बूझिकऽ तऽ विमार नहि पड़ल छथि । डाक्टर तऽ कहैत अछि बहुत बेसी काज कएलासँ बहुत थकावट आबि गेल

अछि, शरीरकेँ आराम तथा मस्तिष्ककेँ शान्तिक आवश्यकता अछि । मुदा कहाँ अछि शान्ति ?' ओ सोचैत रहलाह, सोचिते रहला ।

पंकज आबि गेल । रीना सेहो आबि गेल । जीतेन्द्र प्रसाद सभ किछु देखैत रहलाह, हुनका किछु बाजब, नहि बाजब बराबरे छल । एहि घरक सभ सदस्य पूर्ण स्वतन्त्र छल ।

रीना भानस घरकेँ एक सर्वेक्षण कएलक, फेर पंकजसँ किछु कहलक, पंकज बजारसँ किछु समान अनलक । भोजन बनल । राति आठसँ उपर बाजि रहल छल, दोकान बन्दकऽ कऽ दीपक सेहो चलि आएल छल । रीना दीपककेँ बजार पठाकऽ जीतेन्द्र प्रसादक लेल दबाइ मगबओलक ।

रातिक दश बाजि गेल अछि । नेहा सूति रहल अछि । रीना आ पंकज अपना रुममे किछु पढ़ि रहल छल । जीतेन्द्र प्रसाद ओछाएनपर पड़ल-पड़ल किछु सोचि रहल रहैथि -एकटा बात छोड़िकऽ दोसर, दोसर छोड़ि कऽ तेसर ।

साधनाकेँ केओ स्कुटरसँ छोड़ि गेलैन्हि । स्कुटरक आवाज सूनिकऽ रीना आ पंकज बाहर आएल । साधना अबिते जीतेन्द्र प्रसादके रुममे चलि अएलीह तथा बगलमे सूति रहलीह । रीना आ पंकज ठकुआएल सन किछु देर ठाढ़ रहल आ चुपचाप घूमि गेल ।

जीतेन्द्र प्रसाद देखिते रहलाह, फेर बात चलएबाक हिसाबसँ बजलाह, 'कहाँ छलहुँ एखनधरि, घरमे नहि चाहपत्ती, नहि चिनी, नहि चाउर, नहि दबाइ । बेरिएमे आएब कहने छलहुँ ?

'हँ, मुदा कि कहुँ महिला क्लब चलि गेलहुँ प्रीति पकड़िकऽ लऽगेल । ओतऽ सुषमा भेट गेल । अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवसक बैसार छल मनोरमाक घरपर । निन्न आबि रहल अछि । सूति रहू ?'

'किए, की बात अछि ? आँखि अहाँक लाल बुझाइत अछि ।'

'हँ, कनि-मनि लऽ लेने छी, लेडिज ड्रिंक । ओतेक नहि लगैत छैक । क्लबक आइ वर्षगाँठ छल । मधु दिससँ पार्टी छल । अगिला बेर हमरे नम्बर अछि ।' साधना कहिते-कहिते सूति रहलीह ।

जीतेन्द्र प्रसाद सुनैत रहला आ सोचैत रहलाह, 'की भऽ गेल अछि हिनका ? की भऽ गेल अछि एहि घरकेँ ? केम्हर जा रहल अछि साधना ? की हएत आगाँ ? नहि, आब एकर अन्त करहे पड़त । कोना चलत एना ?' हुनक हृदयक दर्द बढ़ि गेल । ओ हाथसँ छातीकेँ दबा करोट फेरैत रहलाह । रुमके बल जरैत रहल, ओ सोचैत रहलाह .....

आइ एहि शहरमे अएला लगभग दश बर्ष भऽ गेल अछि । आएल छला तऽ कनिक तलब छलैन्हि मुदा कतेक शान्त जीवन छल, कतेक सुखद छल ई घर । साँझ पड़िते अफिससँ घर अएबाक मोन करऽ लगैत छल । कतेक मेल छल घरकेँ एक-एक प्राणीमे । तहियासँ कतेक अन्तर आबि गेल अछि एखन । तहियासँ तलबमे सेहो दूगुणा बृद्धि भऽगेल अछि । दश वर्षमे एहि शहरकेँ कोना-कोना परिचित भऽगेल अछि । शहरक सभा सोसाइटी सँ सम्बन्ध भऽगेल अछि । ई शहर तऽ आब अपने भऽ गेल अछि ।

साधना आब शहरक महिला क्लबमे जाए लागल छथि । महिला क्लब आब तऽ हुनकापर छा गेल छैन्हि । आब साधनाकेँ रुपैयाक लोभ भऽगेल अछि । तहिया कतेक नीक छलीह साधना । थोड़बे रुपैयामे घरक खर्च बढ़ियाँ जकाँ चला लैत छलीह । घरके सभ समान ओही पैसासँ कीनल गेल अछि आ आइ की भगेल अछि ? साधना दोसरके देखासिखी दोकानो खोलि लेने छथि । ओहूसँ पैसा अबैत अछि मुदा, तैयो घरक खर्च नहि चलैत अछि । कहियो चाहपती नइँ, कहियो चिनी नइँ, कहियो ई नइँ तऽ ओ नइँ ।

कतेक झगड़ा ! हँ, ओ झगड़े तऽ छल दोकान खोलबाक लेल । कतेक सम्झओने छलहुँ साधनाकेँ । हमर असली धन तऽ नेहा, रीना आ पंकज अछि । यदि इएह सभ ठीक जकाँ पढ़ि-लिख लेत तऽ एहिसँ बड़का धन आओर कि हएत । एकरो सभकेँ स्कुलसँ अएलाक बाद ममत्व चाही । एकरो सभक विषयमे पुछऽबला होएबाक चाही । मुदा की साधना कोनो बातके बुझती ? मानलहुँ हम दोकानमे किछु नहि

करैत छी, मुदा घर तऽ बिगरल जा रहल अछि। बच्चा की बुझैत हएत ? की बुझैत साधना ई सभकऽ रहल छथि ? ओह, की भऽ गेल अछि साधनाकेँ ?

कपड़ाक व्यपार ! ओहो एकटा कथे अछि। साधना कहैत छलीह, 'कपड़ा बढ़ियाँ बिकाएत।'

कतेक बिकाएल कपड़ा ? महिला क्लबक ई दोसर उपहार छल कि महिला क्लबमे लोक कपड़े किनत दैनिक ? के बुझाओत साधनाकेँ ! जयनगर जाउ, सीतामढ़ी जाउ, कपड़ा लाउ, प्रदर्शनी लगाउ तखन जाकऽ थोकमे कपड़ा बिकाइत अछि। की भऽ गेल अछि हमर जीवनकेँ ? साँझमे अफिससँ आउ तऽ स्वयं चाह बनाउ। दीपककेँ की पड़ल अछि ? आइ हमरा घरमे अछि, कालि दोसर घरमे चलि जाएत।

पैसा कतऽ बँचैत अछि ? हमर तलब अछि, दोकानके पैसा अछि मुदा एकटा छोटको बिमारीमे कर्जा लेबाक अवस्था चलि आएल। लोक ओतबे अछि। इएह पंकज अछि। पहिने क्लासमे प्रथम करैत छल। शिक्षककेँ प्रिय छल। आब फेल होबऽ लागल अछि। कतेक उदास रहैत अछि पता नहि ककरा सभकेँ सडी बना लेने अछि ?

'की भऽ गेल अछि एहि दश वर्षमे,' जीतेन्द्र प्रसाद सोचैत रहलाह, बल्ब जरिते रहल। ओ करोट फेरैत रहलाह मुदा, साधना निफिक्किर सूतल रहलीह।

भोरमे साधना दीपककेँ बजार पठाकऽ घरक लेल समान मगबओलैन्हि। घरके ठीक कएलैन्हि। नेहा, रीना, पंकज सभ साधनाक आगाँ कतेको समस्या सुनओलक। साधना किछु देर सुनैत रहलीह, किछु कालक बाद ओकरा सभकेँ किछु कहलीह मुदा, बातक अन्त भेल नेहाक पिटाइसँ।

'आखिर अहाँ कोन तमाशा बना रहल छी ? की भऽगेल अछि ? अहाँ कतऽ अबैत जाइत रहैत छी ? किछु देर घरोमे रहू आ बच्चाक देख-भाल करु,' जीतेन्द्र प्रसादके तामस बढ़ैत जारहल छल।

'तऽ की करु ? ई सभ काज बन्दकऽ दिऔ ? आब जखन बजारमे कपड़ा बिकाए लागल अछि, दोकान चलऽ लागल अछि, तऽ की बन्दकऽ दिअ दोकानकेँ ? घरमे बैसल रहब तऽ सभ काज ठप्प भऽ जाएत।'

'मुदा घरो तऽ नहि चलैत अछि। घरमे कम पैसा तऽ नहि अछि। घर चलएबाक लेल बढ़िएँ तलब भेटैत अछि। एहिसँ कम तलब भेटैत छल तहिया ई हाल नहि छल। एतेक मारि-पीट, एतेक झगड़ा नहि होइत छल।'

'हम तऽ अहाँके किछु करहोके लेल नहि कहैत छी, हम स्वयं कऽ रहल छी। घर बाहर घूमि रहल छी। शुरुमे तऽ अहुँ मदति कएने छलहुँ, बच्चा आब तऽ छोट नहि रहि गेल अछि, अपन काज स्वयं कऽ सकैत अछि। घरमे एकटा नोकरो अछिए। की हम नोकरनीए बनिकऽ रहू सभ दिन ?'

'ओह, अहाँ इहो तऽ सोचू जे हम बिमार छी। उठिकऽ स्वयं चलि फिर नहि सकैत छी। बजारसँ समान नहि आनि सकैत छी। बच्चाकेँ पढाइ सेहो बढियाँसँ नहि चलि रहल अछि। एहिसँ बढिकऽ तऽ पैसा नहि अछि। जखन हमही सभ नहि रहब तऽ की हएत पैसा लऽ कऽ ? लड़का गुण्डा-आवारा भऽ जाएत तऽ की हएत ? अहाँकेँ बन्द करऽ पड़त ई सभ कारोबार। ई घर अछि कोनो बजार नहि, होटल नहि। याद राखू घर अछि।'

'चाहे जे भऽ जाउ, हम दोकान बन्द नइँ करब। कपड़ाक व्यपार नहि बन्द करब। चाहे बच्चाकेँ होस्टलमे पठाउ वा घरमे पढ़ाउ। अहाँकेँ बेमारीएमे कतेक खर्च भेल अछि, किछु बूझल अछि अहाँकेँ ? घरक खर्च कतेक बढ़ि गेल अछि, किछु बूझल अछि अहाँकेँ ?'

जीतेन्द्र प्रसाद टूटि सन गेल छलाह, 'हम की देखू ? बच्चा होस्टल जाएत तऽ खर्चा बढ़त की घटत ? हमरा बिमारीमे पैसा लागल तऽ की हमर पैसा किछु नहि बचल छल ? अहाँ की कहऽ चाहैत छी ? की मतलब अछि अहाँकें ? '

दुनूके स्वरक आवाज बढ़ैत जा रहल छल । बातचित आब भगड़ाक रुप धारणकऽ लेने छल । तखने रीना चाहक कप लऽकऽ रुममे पहुँचल । चुप्पी ।

साधना चाहक कप जीतेन्द्र प्रसाद दिस बढ़ा देलीह । किछु देरक शान्ति । दूनु एक दोसरकेँ देखैत रहल मुदा किछु नहि बाजल ।

साधना कपड़ा लऽकऽ बाथरुम चलि गेलीह । जीतेन्द्र प्रसाद चुपचाप पड़ल रहलाह । पाएर लग नेहा बैसल छल । एखनधरि पत्रिका सेहो चलि आएल छल । मोट अक्षरमे महिला दिवस मनएबाक कार्यक्रम छपल छल । शहरक लेडिज क्लबमे महिला वर्ष मनएबाक पुरा कार्यक्रम छल । साधना कार्यक्रमक संयोजक छलीह ।

कलवेल बाजि उठल । नेहा गेट खोललक ।

'मम्मी अछि, बौवा ?'

'हँ, छैक । अपने के ?'

'कहियौन्ह मिश्रा जी आएल छथि ।'

मिश्राजीक नाम सुनिते साधना जल्दी-जल्दी बाथ रुमसँ निकललीह ।

'बेटी, एक कप चाह पियबियौन्ह, कनी जल्दी । '

साधना कपडा बदलि लेलीह । रीना चाहक कप रुममे रखलक साधना सेहो मिश्रा जी सँग चाह पीलैन्हि आ बैग उठा लेलैन्हि । 'हँ, तऽ हम जा रहल छियौ । जल्दिए अएबाक कोशिस करबौ । रीना, भोजन बनालिहेँ । रुपैया अलमारीमे छौ ।' जीतेन्द्र प्रसाद चुपचाप सुनैत रहलाह, साधना मिश्राजीक स्कुटरपर बैसि विदा भऽ गेलीह ।

दलानपर हँसैत मुस्कियाइत हम सभ अतिथिके स्वागत कऽ रहल छलहुँ सभक बधाइ स्वीकार करैत पण्डालमे लऽ जाइत छलहुँ जतऽ हमर नव विवाहिता बेटी नीतु अपन पति दामोदरक संग बैसल छल ।

विवाह हमरा सभकेँ वीरगञ्जसँ करऽ पड़ल छल, तँए नीतु आ दामोदरक संग राजविराज अएलहुँ आ हम सभ अपन प्रियजनके पार्टी देने छलहुँ ।

नवकनियाँकेँ लाज आ खुशी नीतुक मुँहपर साफ भलैक रहल छल, जे ओकर मुखाकृतिकेँ आओर सुन्दर बना रहल छल । हम मनेमन अपन बेटी दिस तकलहुँ । हमर पति जयचन्द्र अपन मित्र सभसँ जमाएकेँ परिचय करा रहल छलाह । डिस्ट्रीक इन्जिनियर हएबाक कारणे हमर पतिक मित्रक संख्या कम नहि छल, मुदा जतऽधरि हमर प्रश्न अछि, हमरा भेटघाट करऽबला वा मित्रक संख्या कमे अछि । तैयो पार्टी खुब बड़का आ बढियाँ भऽ गेल छल ।

कखनो कानमे पतिके मित्र कहि रहल छलाह तऽ कखनो हमर संगी सभ नीतुक सुन्दरताक प्रशंसाक सगहि हमरो बड़ाइ कऽ रहल छल ।

'जानकी, अहाँ अपन बेटीक विवाह कएलहुँ अछि वा अपन छोट बहिनके ? सहीमे जानकी, अहाँ अपन शरीरकेँ खुब बनाकऽ रखने छी ।'

'सहीमे, जानकी लगैत अछि जेना दिन प्रति दिन आओर जुआने भेल जारहल हुअए ।

कालिह तीस वर्षक लगैत छली, आइ पच्चिस वर्षक। कालिह २० वर्षक लगतीह,' बात हँसी-ठहक्काक क्रममे आबि रहल छल।

एकटा आओर आवाज आएल, 'ठीक समयपर अपने सभ निपटि लेलहुँ। बेटीक बिबाह कऽ लेलहुँ बेटाक नोकरी लागि गेल, घर बना लेलहुँ आ रिटायर होबऽमे एखनो ६/७ वर्ष बाँकी अछि। एकरे कहैत छैक भाग्यशाली।'

एहन-एहन कतेको बात हमर मनके भिंकभोरि रहल छल, ओ भीड़ भरल पार्टीक भऽमेलामे हम बूझि नहि सकलहुँ ई टिप्पणी सभपर हमर मोन गुदगुदा सकल की नहि ?

बहुत शान्दार पार्टीक बाद हम थाकिकऽ अपन रुममे पड़ि रहलहुँ। साँभऽक पार्टी एक बेर फेर आँखिक आगा घूमि रहल छल। पार्टीक समय जे हमरा मुँहपर चमक, जे आभा छल ओ हम स्वयं अनुभवकऽ रहल छलहुँ। ओ आभा सुतऽसँ पहिने थकबाक कारणे उतरि गेल छल। पार्टीके मनेमन हम फेर सँ स्मरण करबाक प्रयास कएलहुँ।

नीतु सहीमे हमर छोट बहिने जेकाँ लगैत छल, हम अपनाकेँ खुब सजओने छलहुँ। शरीरक संग-संग मस्तिष्ककेँ सेहो हम खुब सजगताक संग निर्यात्रित कएने छी।

हमहुँ नीतुके उमेरक छलहुँ तखने हमरो विवाह भेल छल। अन्तर एतबे अछि जे नीतु वि.ए. पासकऽ चूकल अछि आ हम अपन विवाहक समयमे वि.ए.मे पढ़ैत रही। बाबुजी बढियाँ घर-परिवार भेटबाक खुशीमे ई बात बिसरि गेल रहैथि जे हमर पढ़ाइ नहि भेल अछि। हमर सामान्य प्रतिरोधकेँ ओ बहुत चतुरताक संग अनदेखी कऽ देने रहैथि।

नीतु आधुनिक विचारक लड़की छल, स्कुटर चलबैत अछि आ पुरान परम्पराकेँ मात्र सख बूझिकऽ मानि लैत अछि वा ई कही हमर बात टारऽ नहि चाहैत अछि। विवाहमे टिका, नथिया वा श्रृङ्गारक कोनो चिज पहिरऽमे हड्गामा ठाढ़ नहि कएलक।

एमहर इन्जिनियर पतिक संग घोघमे रहलहुँ, गहनासँ सजलहुँ आ पायलक भङ्कारकेँ समेटिकऽ ग्रेजुएट हएबाक इच्छाकेँ मोनसँ निकालि हम पूर्ण गृहणी बनि गेलहुँ।

जयचन्द्रक विधवा माए अर्थात् हमर आदरणीय दिवंगत साउस, हमर नवका घरमे निर्देशिका छलीह। हमर पति हुनक बेटा अछि, हमर घर हुनक सम्राज्य अछि, ई हमरा क्षण भरि नहि बिसरऽ देल जाइत छल।

बाहरक लोक हमर मुँह देखऽ, परखऽ, पसिन करऽ, घरक लोक, जयचन्द्र आ साउस हरेक काजकेँ, हरेक गतिविधीकेँ बहुत गम्भिरता पूर्वक देखब शुरु कएलैन्हि। हमर नव सीखल काज वा कोनो नव काज सिखबाक कोशिस एकटा परीक्षा बनि जाइत छल। हम परीक्षार्थी रहैत छलहुँ, जयचन्द्र आ साउस परीक्षक।

'माँ, देखही तऽ जानकी अँचार बनौलैन्हि अछि। खा कऽ देखही तऽ केहन छै। चारिए दिनमे फोफरी लागऽ लगलैक,' जयचन्द्रकेँ अँचार खएबाक सओखक कारण हम ओल आ लहसुनके अँचार बनएबाक प्रयास कएने छलहुँ।

साउस जड़ैतपर घी तऽ नहि धएलीह तहन मलहमो नहि लगओलीह। ओ बजलीह, 'अँचार कोनो धीया-पुताक खेल छै जे सभकेओ बढ़ियाँ बनालेत। तौँ बजारसँ आओर ओल आ लहसुन आन, हम तोहर पसिनक बना दैत छीयैक।'

ओल आ लहसुन सेहो बजारसँ चलि आएल। साउस अर्थात् माँजी अँचार बना लेलैन्हि, हमरा हुनका लग बैसिकऽ देखऽधरि मोन नहि भेल। रौदमे कपड़ा मुँहपर राखि अँचार बनबैत हुनकर व्यवहार हमरा खौंभाएल सन लागल।

जयचन्द्र अँचार खएलाक बाद हाथ चटैत बजलाह, 'देखू एकरे कहल जाइत छैक अँचार। खाइत जाउ छोड़ऽके मने नहि करत, लिअ अहूँ कनी खाकऽ देखू।'

अँचारक स्वाद हमरा तीत जकाँ लागल । जयचन्द्र हँसि रहल छलथि ।

ओहि राति पहिल बेर जयचन्द्रक स्पर्श हमरा किछु नहि बुझाएल । मुँहक स्वाद अखनो तीते बनल छल ।

बि.ए.तऽ छुटि गेल मुदा पाक शास्त्रक किताब आनि लेने छलहुँ । बढियाँ अँचार बनाएब हमर उद्देश्य बनि गेल छल जे अहम्के तुष्टिकऽ रहल छल ।

एक दिन एकटा मित्रक घरपर पार्टीमे जएबाक तैयारीकऽ रहल छलहुँ । जयचन्द्रक पसिनक लाल रंगक साड़ी पहिरने छलहुँ, गर्दनमे हार पहिरलहुँ, कानमे झुमका लगेलहुँ अएनामे अपन मुँह देखलाक बाद लाज भऽ गेल छल । जयचन्द्रक आँखिमे देखाएल भावकेँ कल्पनासँ गाल फूलि गेल छल या कही गुलाबी आकार धऽ लेने छल । मुहँपर पाउडर लगएबाक लेल पफ उठेलहुँ कि पाछूसँ जयचन्द्रक अवाज आएल, 'अरे छोड़ू पाउडर-ताउडर, एना कएलासँ कोनो रंग गोर थोरहे होइत छैक ? माँकेँ रंग देखियौ, बिना मेकअपकेँ कतेक सुन्दर अछि, कतेक गोर अछि ।' हम गर्दनि घुमाकऽ जयचन्द्र दिस ताकि नहि सकल छलहुँ । मोनेमोन कुहरिकऽ रहि गेलहुँ । बाहर आबिकऽ जुरामे फूल लगबैत जयचन्द्रकेँ हाथ झटकयकेँ मोन कएलक । माँ बाबुजीकेँ असगरे बेटी होबयकेँ कारण हम अपन बड़ाई सुनऽके आदी छलहुँ । जयचन्द्रक व्यवहारक कारण मोन टूटऽ लागल छल ।

बिट्टुकेँ जनमके समयमे जयचन्द्र आ माँ बहुत खुश रहैथि । सम्भवत. एहि प्रकरणमे ओ सभ हमरामे कोनो खोट नहि निकालि सक्लैथि । मुदा हुनका सभक खुशी हमरा खुशीपर हावी भऽ गेल छल । हमर अपन बेटा हमरा लग मात्र दूध पिबाक समयमे अबैत छल । हम अनाड़ी जकाँ बनल माँजी आ माँजीक बिट्टुके देखभाल करैत देखैत छलहुँ ।

किताबमे पढ़िकऽ, सँगी सभसँ देख-सूनिकऽ ओकरा लेल किछु नव बनबऽ चाहैत छलहुँ मुदा साउस फटकारि दैत छलीह ।

बच्चाकेँ सुतएबाक लेल छोटका-छोटका रेडिमेड गदली सभ किनने छलहुँ मुदा साउसकेँ पुरान साड़ीसँ बनल गदली पसिन होइत छलैन्हि । कहियो काल हमर अहम् माथ उठाबऽ लगैत छल मुदा सभ खौंझी बेचारा बिट्टुएपर उतारैत छलहुँ ।

ओकरा दोसर रुममे कनबाक अवाज सूनि हम आँखि मूनि लैत छलहुँ । सम्हारैथ माँजी आ हमरा माँजीके भाषण सुनऽ पड़ैत छल । हमर ममताकेँ फटकारल जाइत छल । हम शायद चुप रहिकऽ अपन अहम्के तुष्ट करैत छलहुँ । जयचन्द्र सेहो कहि दैत छला, 'जानकी, ई बात बढियाँ अछि माँ हमरा लग अछि नहि तऽ बिट्टुकेँ पालब मुश्किल भऽ जाइत ।'

हमरा जयचन्द्र अपांग जकाँ लगैत छलाह आ माँजीकेँ बिट्टुकेँ पालब डूबि मरल जकाँ लगैत छल ।

कहियो सोचैत छलहुँ, एहि बात सभक कारण तलाक होइत अछि, हम किए नहि घर छोड़िकऽ भागि जाइ । हमर आवश्यकते नहि अछि एहि घरके । मुदा जाउ कतऽ ? नैहर जाकऽ कोनो सिकाइत करी कोनो फरक पड़ऽबला नहि छल, बाबुजी आब एहि संसारमे नहि रहि गेल छथि आ हमर माँ दिन-राति भगवानकेँ एतबे गोहरबैत आभार व्यक्त करैत छल जे बाबु जी अपना हाथसँ एकलौती बेटीके बियाहकऽ देने छथि । हम अपन माँकेँ जयचन्द्रक विषयमे कहियो स्पष्ट सँ नहि कहि सकलहुँ ।

माँजीके एकक्षत्र राज्य कायम छल । जयचन्द्र मनोनित युवराज आ हम ..... हम एखनधरि अपन स्थिति नहि बूझि सकल छलहुँ । युवराज्ञी वा भावी सम्राज्ञी तऽ हम कतहु नहि छलहुँ । हँ ई निश्चते छल जे जयचन्द्र माँजीकेँ माँके स्थान आ कनियाँकेँ कनियाँक स्थानपर नहि राखि सकल छलाह ।

नीतुके जन्मक बाद हम बहुत प्रशन्न छलहुँ । सुन्दर आदर्श परिवार भऽ गेल छल मुदा माँजीकेँ आशापर तुषारापात भऽगेल छलैन्हि ।

ओ पोताक जोड़ी लगएबाक आशमे छलीह । जयचन्द्र एहिमे निष्पक्ष छलथि । सूनल सुनाएल बात झूठ साबित भऽ रहल छल कि बापकेँ बेटीसँ बेसी लगाब होइत अछि ।

माँजीके आँखिक तारा तऽ बिट्टु छल, से नीतुके सम्हारबाक जिम्मेवारी हमरेपर छल। नीतुके जन्मलाक बाद हमरा बुझाएल जे हम सहीमे माँ बनलहुँ अछि।

माँजीकेँ निराशा हमरा लेल वरदान सिद्ध भऽ रहल छल।

कतेको गीत हमरा स्मरण आबि गेल छल। छोटकी नीतुकेँ सजाबऽ सम्हारऽमे हमर समय बितऽ लागल छल। एक दिन माँजी बिट्टुकेँ तैयार करैत बजलीह, 'हमर पोता राजा तऽ पापा जकाँ खुब पढ़त, खुब घुमत, इन्जिनियर बनत। दाइकेँ हवाई जहाजपर घुमाएत।'

'हँ, दाइ नीतुकेँ सेहो लऽ चलब। ओहो खुब पढ़त, खुब घुमत,' छोट बिट्टु अपनासँ छोट बहिनके आँगुर पकड़िकऽ चलएबाक कोशिस करऽ लागल छल।

'हँ.....हँ, पढ़त, नीतु सेहो पढ़त, अपन मम्मी जकाँ थोरहे रहत,' माँ जी उठिकऽ भानस घरमे चलि गेलीह।

हम अकचका गेलहुँ। सहीमे हम तऽ अनपढ़ समान छलहुँ। नहि एमहर, नहि ओमहर ई बात सूनि हमरा भितर एकटा भन्नाकसँ लागल।

घर माँजी तऽ सम्हारि रहल छथि, हमरा तऽ मात्र हुनकर मदति करऽके रहैत अछि नहि कहियो ओ सिखाबऽके कोशिस कएने छथि आ नहि हम कहियो सिखबाक इच्छा रखने छी।

हीन भावना आ अहम्‌के मीलल-जूलल रुप आगा आबि जाइत छल।

हम बि.ए.के पढाइ पूरा करब से ठानि लेलहुँ। माँजी एकरा हमर दिमागके सनक बुझलीह, जयचन्द्र मात्र एकटा सख। किछु रोक टोक नहि कएला शायद इएह सोचने छला, देखियैक कोना पढ़ाइ पूरा करैत अछि। मुदा जखन हम बि.ए. पास कऽ एम.ए.मे एडमिशन करओलहुँ तऽ माँजी पुरे घर माथपर उठा लेलीह। बजलीह, 'हमरा सभ घरक नोकरनी बूझि लेने अछि।

दुनू बच्चाकेँ हमरापर छोड़िकऽ अपना टण्डेली करैत अछि।'

जयचन्द्र सेहो डँटलाह, 'पढ़बाक एतबे सख अछि तऽ खाली समयमे घरमे पत्रिका-तत्रिका पढ़ि लेल करु। डिग्रीके चक्करमे हम माँके, घरक आ बच्चाक उपेक्षा बर्दास्त नहि कऽ सकब।'

'बच्चाकेँ आ घरकेँ माँजी हमरासँ बढ़ियाँ जकाँ सम्हारैत छथि आ जतेक काज घरके हमरा करऽ देल जाइत अछि ओतेक करबे करैत छी। हँ, अहाँ सभकेँ आदेश मानऽमे कहियो पाछू हँटब तऽ कहब,' हम पढ़ि-लिखकऽ बाजऽ लागल छलहुँ।

क्याम्पस जाए लगलासँ हम फेर एक बेर नव युवती बनि गेल छलहुँ।

संगहि सडी सभके प्रशंसाक बात सूनिकऽ मोनक उमंग फेरसँ हरिया गेल छल। अपना लेल हम सजग भऽ गेल छलहुँ। माँजी धीरे-धीरे अस्वस्थ्य रहऽ लागल छली। बिट्टु आ नीतु स्कूल जाए लागल छल। हमरा लग क्याम्पस, घर आ बच्चाक काज बढ़ि गेल छल। कहियो काल लगैत, माँजी जानि बूझिकऽ पढ़ाइमे बाधा देबाक प्रयासकऽ रहल छथि।

मुदा हम एम.ए. कैएकऽ चयनक साँस लेलहुँ। घरक काजमे सेहो हम निपुण भऽगेल छलहुँ। पढाइक विषयमे कोनो उलहन नहि सुनाइ पड़ए तँए हम मशिन बनि गेल छलहुँ। शायद क्याम्पसमे उल्लासक वातावरणक प्रभाव छल हमरामे काज करबाक, जीबाक शक्ति भेट गेल छल। मुदा एहि शक्तिसँ घरक शान्ति छिनाय लागल छल।

हम माँजीके प्रति उपेक्षाक पर्याय मानल जाएल लगलहुँ।

जयचन्द्रक कहब छलैन्हि, 'अहाँक एम.ए. करबाक जिद्द माँके स्वास्थ्यपर कतेक असर कएलक अछि आ अहाँ बुझिए नहि रहल छी, घर पढाइसँ बेसी आवश्यक अछि।'

हमर एम.ए. पास होएब एक प्रकारसँ माँजीकेँ बलिदानक फल बताओल जाए लागल।

निश्चय हम जयचन्द्रक मित्र मण्डलीसँ कटि गेल छलहुँ। एक तऽ समयाभावक कारण दोसर दोहरा व्यक्तित्वबला अलग-अलग प्रकारक मुखौटा लगओने खोखला व्यक्तित्व हमरा सहनशीलतासँ बाहर छल।

जयचन्द्र तऽ पहिले दिनसँ हमरा अपन माँके प्रतिस्पर्धामे राखिकऽ परैखि रहल छलाह। आबो माँजीकेँ दोसरसँ भेटब, बातचित करब हमरा हुनका आगाँ एकदम घरघुसनी साबित कऽ देने छल ।

'एहि उमेरमे सेहो माँकेँ चारि घरमे आएब-जाएब अछि। एक अहाँ छी ....' जयचन्द्र कुहरिकऽ बजलाह । हमरा कुहरयकेँ तऽ कोनो हिसाबे नहि छल ।

हम घर, बच्चा सभ किछु सम्हारने छलहुँ। पढ़ाइ सेहो कएने छलहुँ, किए कि हम एम.ए. करऽसँ पहिने माँजी कड़ा शर्त लगा देने छलीह भोजन हुनकासँ नहि बनि सकत, सफाइ-तफाइ सेहो मुस्किल अछि, बच्चाक पढाइ तऽ हुनका बसक बाते नहि छल । हम बच्चाक कपड़ा धोबऽ लेल सफाइ करऽ लेल एकटा काम करऽ बाली लगा लेने छलहुँ, साँझक चाह आ भोजन-तोजन बनएबाक काज अपना उपर लऽ लेने छलहुँ ।

माँजी भोरके भोजनक तैयारी करैत छलीह । पढ़ाइक कारण कहल जाए कमे समयमे एक दम फुर्तीक सँग हम काज करऽ लागल छलहुँ ।

माँजीक तीर सनक व्यङ्ग एखनो चलैत रहैत छल । जयचन्द्र हरेक बेर अबथि तऽ कोनो ने कोनो एहन बात खोजि लैथि, जकर आधारपर हमरा डाँटल जाए सकए। हुनका अफिससँ एलाक बाद हुनकर स्वागतक लेल स्नेहसँ भड़ल मन पत्थर भऽ जाइत छल । ओ घरसँ दोसर शहरमे नोकरी करैत छलैथि । ओ १५ दिनपर अपन घर अबैत छलैथि ।

हमर भावुक मन कहियो भावनात्मक सहयोग नहि पाबि सकल। सफल वैवाहिक जीवनक माधुर्य हमर जीवनसँ कोशो दूर छल । हमरा तऽ बियाहक बाद हरेक क्षण ई अनुभव कराओल गेल जे हम किछु नहि छी आ एकरे चुनौती मानिकऽ किछु बनबाक धुनिमे लागि गेलहुँ ।

एहि आदेशक लेल हम जयचन्द्रक स्नेह, दुलार, प्रोत्साहन चाहैत छलहुँ। कोनो नव कामक बदलामे हुनक आँखिमे अपना लेल प्रशंसा आ प्रेमक चमक देखऽ चाहैत छलहुँ। ओ मापदण्डपर खड़ा उतरबाक लेल हम मशिन बनि गेल छलहुँ। सभ किछु नीक ढंगसँ होबऽ लागल ।

जयचन्द्रकेँ सेहो मशिने बुझऽ लागल छलहुँ। मुदा जखन हम मशिन बनि गेलहुँ, जयचन्द्रक इच्छा अनुसार चलऽ लगलहुँ तऽ प्रत्येक दिन नव-नव शर्त बढ़ऽ लागल । बच्चाक लेल बड़का होइत-होइत हमरा घरमे जिम्मेवारी बढ़ि गेल । माँजी नहि छलीह जखन आब हुनकर अत्याधिक आवश्यकता छल ।

जयचन्द्र घरमे सेहो सभकेँ अपन अधिन बुझऽ लागल छलाह। मुदा तखन जहिया हुनकर इच्छा हुए आवश्यकताक, हुनका आगाँ कोनो आवश्यकता नहि छल मुदा हम बराबरके दर्जा चाहैत छलहुँ।

बच्चासँ सेहो प्रेम मित्रताके स्तरपर अपनत्व स्थापित नहिकऽ सकलाह । जखन हुनका शारीरिक भुख लगैत छल तऽ अवश्य ओ प्रेम प्रदर्शन करैत छलाह, मुदा हमरा लेल हुनकर ई प्रेम मात्र एहि बातक सूचक होइत छल कनियाँ हएबाक कारण हुनक भुखके शान्त करब हमर कर्तव्य अछि। एमहर, बच्चामे बेसी रमैत गेलहुँ जतेक हम बच्चासँ लग होइत गेलहुँ, ओतेक जयचन्द्रसँ दूर ।

जयचन्द्र मोनक सामिप्यता तऽ कहियो नहि रहल छल मात्र एकटा सम्बन्ध निर्वाह करैत चलि आएल छलहुँ। कर्तव्यपूर्तिमे जयचन्द्रक कोनो जोड़ा नहि छल । जयचन्द्र अफिससँ अबैथि, औपचारिक जकाँ बातचित करैथि आ घुमऽ चलि जाइथ । रातिमे ओछाएनपर पड़िते फोंफ काटऽ लगैत छलैथि । जखन कि हम जगले रहैत छलहुँ। जखन हम कोनो पार्टीक बाद थकानसँ चुर होइत छलहुँ तखन जयचन्द्रक निन्न कोशो दूर होइत छल ।

जयचन्द्रक कोनो बातके हम बुझिऽए नहि सकलहुँ, मुदा एकटा बात बढियाँ जकाँ बुझैत छलहुँ कि हमरा हिसाबसँ हुनका प्रशन्न करब मुश्किले नहि असम्भव अछि ।

मशिने बनिकऽ हम अपन मस्तिष्क आ अहम्केँ मारि नहि सकि रहल छलहुँ। जयचन्द्रक पसिनक भोजन, अँचार, मिठाइ आदि सभ बनाबऽ लागल छलहुँ। घर सेहो साफ चिकन रखैत छलहुँ। बच्चा सेहो स्मार्ट आ तेज निकलल छल मुदा जयचन्द्रक आत्मतुष्टि अहूमे नहि छल । हिनका तऽ उँचका एँरी बला

सेण्डिल पहिरने, केश काटल, अँग्रेजीमे बात करऽ बला जुवा-तास खेलऽ बाली महिला स्मार्ट लगैत छलैन्हि। जयचन्द्रक अनुसार हम स्मार्ट नहि बनि सकलहुँ आ नहि सोसाइटीमे घुमऽ लायक रहलहुँ। किछु हमर अपन कमजोरी सेहो छल।

हम शुरुसँ पति आ साउसकेँ अपन कमी-कमजोरी सुनिते-सुनिते एहि हीन भावनासँ ग्रस्त भऽ गेल छलहुँ जे दू चारि लोकक आगाँ बैसि नहि सकैत छलहुँ।

जयचन्द्रकेँ शायद ओ मशिन बला गुड़ियाक आवश्यकता छल जे कनिको डोरी खिचलापर धरा-धर अंग्रेजी बाजऽ लागए, तासकेँ पत्ती बाँटऽ लागए आ घरमे दोसर डोरी तनिते नोकरनी बनि भानस घरमे काम काजक संगहि पति सेवा सहितक बिना थाकल कोनो हुज्जतके करए।

हृदयक, भावनाकेँ वा शायद प्रेमक जयचन्द्रके नजरिमे कोनो मोल नहि छल। सभ काज नियम अनुसार हएबाक चाही पति-पत्नीक सम्बन्ध सेहो।

एकटा ठण्ढ़क राति जयचन्द्र हमरो ठण्ढ पाबि उठिकऽ घुमऽ लगलाह हमर शरीर मशिन बनऽसँ अस्वीकारकऽ देने छल।

'अहाँ हमरासँ कतेक दूर होइत जारहल छी, हम सभ बात बूझि रहल छी। अहाँकेँ छुअब आ बेजान यन्त्रकेँ छुअब एक समान भऽगेल अछि।'

जयचन्द्र अनयासे कतेक बड़का शब्द बाजि गेल रहथि। हम एकटा मेकेनिकक हाथक मशिने तऽ बनि गेल छी। प्रेमक भावनाकेँ, आत्मियताक सुरधार कतऽसँ बहितहुँ ?

जयचन्द्र मशिनवादी छलाह, अतिवादी सेहो। कहलाह, 'हम अहाँकेँ बर्दास्त करैत आबि रहल छी तँए अहाँ अपन हैसियत बिसरि रहल छी। हमर स्थानपर केओ दोसर होइत तऽ तलाक लऽलैत हम एमहर-ओमहर घुमऽके आदी नहि छी अहाँ एकरे नजायज फाइदा उठा रहल छी। बिसरु नहि अहाँ मैथिल महिला छी आ मैथिल घरक मुखिया मालिक होइत अछि, ओकरे मर्जी चलैत छैक।'

बिना कोनो सन्दर्भके, बिना कोनो तारतम्यके जयचन्द्र बजैत गेलाह। हमर एक्कोटा गल्तीकेँ जयचन्द्र बर्दास्त कऽ सकल रहितथि, ओकरा नजर अन्दाज कएने रहितथि, माँजी संग मीलिकऽ ओकरा मजाक नहि उड़ओने रहितथि। घरक मुखिया घरमे रहऽ बला प्राणीके शरीरक भितर सेहो किछु देखने रहितथि ओ घरमे मात्र महिलाकेँ नहि, कनियाँ वा प्रेमिकाके खोजने रहितथि।

जयचन्द्रकेँ तलाकके परिणाम, घर टूटबाक दुःखक मानसिक बोझक अनुभव होइत।

दोसर दिनसँ हम बच्चाक सुतऽ बला रुम अपना लेल तय कऽ लेलहुँ। जयचन्द्रसँ साफ कहि देलहुँ 'तलाक तऽ हम नहि लेब आ नहि देब। घर कोनो हालतमे नहि टुटत। बच्चा नहि बँटाएत। मुदा तलाक भेलाक बाद अपनेकेँ जे अजादी भेटैत, ओ हम अपनेकेँ दैत छी। हम नोकरीक लेल आवेदन-पत्र दऽ देने छी। आर्थिक स्तरसँ सेहो अपनेपर बोझ नहि बनब।'

ओहि दिनसँ हमर ओहे दिनचर्या बनि गेल। संसारक नजरिमे हम वर-कनियाँ छलहुँ, सफल वैवाहिक जीवन छल बढ़ियाँ बच्चा छल। उच्चाधिकारी योग्य पति, कमाउ घरेलु आ बढियाँ कनियाँ आ माँ-बापक गुण लऽ कऽ बड़का होइत बिट्टु आ नीतु देखऽ बलाकेँ नजरिमे जयचन्द्र आ हम जीवनसँ आओर की अपेक्षा कऽ सकैत छलहुँ ? बिट्टु आ नीतुकेँ हमरा वास्तविक सम्बन्धक विषयमे कतेकधरि बूझल अछि, हम नहि कहि सकैत छी।

बितल जीवनकेँ जे देखैत छी तऽ बूझि नहि पबैत छी हम लाभमे रहलहुँ वा घाटामे।

अधबैसु भेलाक बादो युवा देखाएब सुरुचि पूर्णकार्य प्रणाली गुणक कारण प्रशंसित होएब स्वतन्त्र व्यक्तित्व राखऽके गौरव सहीमे एहि योग्य छी जे एहिपर गर्व कएल जाए ? हमर व्यक्तित्वक भव्य घर कोनो अहम्के आधारपर अछि, भितरसँ ई घर कतेक खाली अछि ई हम ककरो कोना बुझाउ ? हमर दृष्टि एखनो ओहि आँखिमे अपना लेल गर्वमय चमक देखबाक लेल आतुर अछि, हमर पियासल मोन

एखनो अपनत्व भरल ओ स्पर्शसँ अछुत अछि जे जयचन्द्र आ मात्र जयचन्द्रे दऽ सकताह। जयचन्द्रकेँ कोना बुझाउ कि बच्चाकेँ नोकरीपर गेलाक बाद बियाह भेलाक बाद हम कतेक असगर भऽगेल छी।

निन्न आ थकानसँ बन्हाएल आँखिमे नोरक सँग रहि-रहि कऽ एकटा प्रश्न उभरि कऽ अबैत अछि -कि जयचन्द्र सेहो अपना रुममे पड़ल किछु एहने सोचि रहल हएताह ?

साँझ भऽ गेल छल। घरपर असगरे छलहुँ अत: लनसँ लागल गेटकेँ बन्देकऽ दी। रुमसँ गेटक दुरी अतेक छल जे ओकरा खुलब आ बन्द करबाक आभास तक नहि होइत छल। केओ धीरेसँ नुकाकऽ बाउण्ड्री-वाल भितर चलि आबे तऽ पते नहि चलत। बच्चा बाहर पढ़ैत अछि। पति अपन बहिनक गाम गेल छथि। वा कही घर पुरे खाली-खाली अछि। ओना घरपर एकटा नोकर अछि। जेकरा ओ बहुत निर्देशन दऽकऽ गेल छथि, मुदा कहियो ओ ९ बजेसँ पहिने नहि अबैत अछि।

खालीपनक ई क्रममे टिभीकेँ आविस्कार करऽ बलाकें हृदयसँ आभार प्रगट करैत छी। जखन पत्र-पत्रिकासँ मोन भरि जाइत अछि, हम टिभीक कार्यक्रममे डूबि जाइत छी।

सिरियल शुरु होबऽमे एखन समय छल तँए हम सोचलहुँ ताबत अपना लेल दूटा रोटी बना ली। बच्चा आ पति बाहर रहलाक कारणे हम भानस घरक प्रति एकदम लापरवाह भऽगेल छी। एकटा तरकारी बनबैत छी ओकरो तीन बेर खा लैत छी, कखनो फलफूल खा लैत छी, कखनो दिनक भोजन तऽ गोलेकऽ दैत छी। मोनेमोन अपन निर्णयकेँ सही कहैत चलू कम भोजन कएलासँ स्वास्थ्य बढियाँ रहैत अछि। आब के ओतेक मेहनत करए, भात-दालि आ बहुत प्रकारक तरकारी बनाबऽमे किए समय लगाबी। ओना आइ-कालि बड़ समय रहैत अछि।

ग्यास जराकऽ हम ताबाकें चुल्हापर राखि देलहुँ आ फ्रिजमेसँ सानल आँटा निकालिकऽ एकटा रोटी बेल ताबापर रखलहुँ आ दोसर बेलऽ लगलहुँ। पहिल रोटी सेकनहे छलहुँ की मूल गेटसँ घण्टीक आवाज आएल। ओह..... के भऽ सकैत अछि, एहि समय ?

'आबि रहल छी' घण्टी बजबऽ बलाके सन्तुष्टिक लेल हम जोड़सँ जबाब देलहुँ, मुदा फटाफट दोसर रोटी सेकऽ लगलहुँ। किए कि गेट खोलऽसँ पहिने हम अपन सभ काजकऽ लेबऽके पक्षमे छलहुँ। कहूँ बगलमे रहल रामपुर बाली भेलीह तऽ गेलहुँ काजसँ। पाँच मिनट कहिकऽ ओ पुरे घण्टाभरि समय लऽ लैत छथि। पुरे संसारक समाचार, गपक पुरे पेटारा हुनका लग भड़ल रहैत अछि। कोनो विषयपर चाहिकऽ बात कऽ ली। संविधान निर्माण हो वा माओवादी समस्या, मधेशी नेतासभक स्थिति सभ हुनका लग रहैत अछि। कहियो-कहियो हम सोचैत छी यदि ओ राजनीतिमे होइतथि तऽ खुब नाम कमैतथि। रामपुरबालीके अएबाक आशङ्कासँ एखन हम हाथमे लागल आँटा धोए रहल छलहुँ कि कल बेल अपन सम्पूर्ण शक्तिसँ घनघना उठल। 'एस कमिङ्ग-कमिङ्ग।' हाथ पोछैत हम गेट दिस बढ़लहुँ।

'ओह ! केहन-केहन लोक होइत अछि। एतेक लम्बा घण्टी बजबैत अछि की कमजोर लोकके धड़कन ओतऽके ओतहि बन्द भऽ जाएत।'

मोनेमोन हम बजैत जारहल छलहुँ मुदा जहिना गेटक नजदिक पहुँचलहुँ हम अपन हाथसँ अपन केस ठीक कएलहुँ साड़ीकेँ ढंगसँ अपन कान्हपर रखलहुँ आ मुँहपर कृत्रिम मुस्की अनैत अतिथिके मोनसँ स्वागत करबाक लेल तैयार भऽ गेलहुँ।

'ओह अपने छी !'हम खुशीसँ बजलहुँ, 'प्रणाम, प्रणाम यादव जी ।' विश्वास करु ई हमर अभिवादन लेस मात्र बनाबटी नहि छल । अभिवादनक ढङ्ग आ बातचितक शब्दे व्यक्ति विशेषसँ अपनाक अन्तरङ्गता उजागरकऽ दैत अछि । आगा अभिवादनकें हात जोड़ने पतिक प्रिय मित्र सेवक नारायण यादव ठाढ़ छला ।

'बहुत दिनक बाद अपनेकँ चरण पड़ल अछि,' हम गेँट बन्द कऽ ड्राइँग रुम दिस बढ़लहुँ ।

'फुरसते नहि भेटैत अछि भौजी, जखन लोक काममे लागि जाइत अछि तऽ बस....., हमर वकिल साहेब नहि छथि घरपर की !'

स्कूल क्याम्पस सभमे संङे पढ़ल आ तर्कशिला भेलाक कारण यादवजी सहितक हिनकर सभ मित्र हिनका 'वकील साहेब' नामसँ सम्बोधित करैत छथि ।

'नहि, ओ तऽ चारि-पाँच दिनसँ बहिनक गाम गेल छथि ।'

'आ अएताह कहियाधरि ......'

'एखन दू-चारि दिन आओर लागिए जाएत आबऽमे, शायद २० गतेधरि अएताह ?'

'चलू बाढ़िएँ भेल ओ नहि छथि । हमरा अहाँक बीच कबाबमे हड्डी बनितैथि । हम आ अहाँ जमिकऽ चलू गप्प मारैत छी,' यादव जी दुनू हाथकें रगरैत बजलाह ।

'हँ .....हँ.... हँ किए नहि, हम असगरे बोर भऽ रहल छलहुँ, अपने बैसू हम दू मिनटमे अबैत छी ।'

'कथी लाए एमहर, ओमहर करैत छी बैसू भौजी, 'यादव जी निःसंकोच हाथ पकड़िकऽ बैसबाक लेल अनुरोधकऽ देलैथि । हुनकर ई व्यवहार, ई अपनापन लोककें बात नहि टालबाक लेल मजबुरकऽ दैत अछि ।

'अहाँ जाति हएब उएह चाह-ताह बनाबऽ वा एहिसँ मीलल-जूलल मेहनत करऽ । बेकारके भऽमेलामे नहि परु भौजी । जतेक मीठ अपनेक बातमे हएत ओतेक चाहमे कतऽसँ भऽ सकैत अछि ।'

हुनकर स्पष्टतापर हम मुस्किया उठलहुँ आ बैसैत कहलहुँ, 'से तऽ ठीके अछि मुदा अहाँक हाथ एतेक ठण्ढा किएक अछि आब तऽ फागुनो समाप्त भऽ गेल, एतेक ठण्ढो नहि अछि ।'

'मुदा हम जतऽसँ आबि रहल छी, ओतऽ बहुत ठण्ढ छैक ।'

'ठीक छैक ओना जनकपुरमे किछु ठण्ढ बेसी पड़ैत अछि ।'

'ओना वकील साहेबके बिना अहाँ रहि कोना लैत छी, हमहुँ किछु कम थोरहे छी , कोनो आवश्यकता हएत तऽ कहब । '

'छल परपञ्च आ बनाबटीसँ दूर यादवजीके बातके कोनो दोसर व्यक्ति सूनि लिअ तऽ हुनकर चरित्रपर सन्देहकऽ सकैत अछि, मुदा जे हुनका चिन्हैत अछि सएह हुनकर साफ हृदयके बूझि सकैत अछि ।'

'आ कहू बच्चा अपनेके कतऽ पढ़ि रहल अछि ? दिव्या केहन छथि, हमरा यादो करैत छथि वा नहि ?'

'सभ किछु बूझि गेलहुँ अपने लग गप्पक कोनो स्टक नहि अछि, तखने चालू गप्प शुरु भऽ गेल, बच्चा केहन अछि, दिव्या केहन अछि आ सुनाउ ....इएह नहि !' कोनो बात स्पष्टसँ कहि देब यादव जी के आदत छल ।

'ओना हमर इच्छा सेहो अपनेकें बेसी बोर करबाक नहि अछि । चलैत छी ।'

'नहि..नहि यादवजी अपने तऽ ....' हम की सहीमे रुक्ख व्यवहारकऽ रहल छलहुँ हम स्वंयके तौललहुँ आ परेशान भऽ गेलहुँ ।'

'नहि भौजी, एहन कोनो बात नहि अछि । सहीमे माएके स्वास्थ्य खराब भऽ गेल अछि ओकरे देखऽ आएल छी दोसर बेर आएब तऽ दिव्याकँ सेहो लेने आएब तहियाधरि वकील साहेब सेहो आबि जएतहा तखन जमिकऽ बैसब ।

यादवजी उठैत कहलैन्हि, 'एकटा चीज तऽ हम बिसरि रहल छलहुँ ।'

यादवजी पुन: सोफापर बैसला आ एकटा डिब्बा निकालैत कहलाह, 'भौजी ई लिअ, ई डायरी अहाँके लेल अनलहुँ अछि । किछु अबेर अवश्य भऽ गेल मुदा कि करितहुँ जनवरी-फरवरीमे फुरसते नहि भेटल अएबाक । सोचलहुँ कुरियरसँ पठा दी मुदा हम तऽ डायरी अपन हाथसँ अपनेकेँ प्रजेण्ट करऽ चाहैत छलहुँ ।'

यादवजी कनी माथ झुकाकऽ डायरी हमरा दिस बढा देलाह ।

'धन्यवाद ।' हम डायरी लैत कहलहुँ ।

'ओह फेर उएह रुक्ख सन धन्यवाद, ईदमे जेना गारा मिलैत अछि तहुना गरा मिलकऽ सेहो खुशी प्रकट कएल जासकैत अछि भौजी ।' फेर ओ जोड़सँ हँसलाह ।

वकील साहेब होइतथि तऽ इर्ष्यासँ जड़िजैतथि सही बात छैक ने भौजी ! ठीक छै ओ अएताह तऽ नमस्कार कहि देबैन्हि,' आ उठिकऽ ठाढ़ होइत कहलैन्हि, 'चलैत छी भौजी । '

'नमस्कार' !' हम हुनका गेट तक छोडऽ अएलहुँ फेर आएब ।'

'हँ-हँ अबैत रहब अपनेक सपनामे,' ओ आकर्षित मुस्कान मुँहपर आनैत कहलाह । गेटपर आबऽधरि कतेको बेर पाछू घूमि-घूमिकऽ हाथ हिलओलैन्हि । रघु ओतहि ठाढ़ छल ओकर प्रणामके जवाव देलैन्हि आ गेटसँ बाहर चलि गेलाह ।

हम रघुकेँ ताला लगएबाक आदेश देलहुँ आ भितर चलि एलहुँ ।

सोन जकाँ मेटलकेँ मेढ़ल सुन्दर डायरी शोफापर राखल छल । हम ओकर सुन्दरताकेँ देखिकऽ हाथसँ सहलाकऽ देखलहुँ आ पृष्ठ उण्टेलहुँ भितर सुन्दर आ सुदृढ अक्षरमे लिखल छल ।

वकील साहेब आ भौजीकेँ सप्रेम भेट

सेवक प्रसाद यादव ।

नीचा आजुक गते सेहो लीखल छल ।

लिखवाक तरिका गजव छल ।

सेवक प्रसाद यादव एकटा एहने व्यक्ति छथि गोर रंग, लम्बा आ भारी शरीर, उन्नत ललाट हुनकर स्पष्ट बाजब हरेक अवसरकेँ महत्वपूर्ण आ उन्मुक्त हँसी हजारोमे अलग पहिचान देने छल ।

एहने लाल एलबममे अपन एक फोटो संग हमरा प्रजेण्ट कएने छलथि । जहिया हम विवाह कऽकऽ आएल छलहुँ ।ओ अन्य मित्रक बाद विशेष तरिकासँ यादवजीसँ परिचय करबैत कहलैन्हि, ' ई छथि हमर सेवक । ओना हम हुनका अपन मित्र बना लेने छी, काज बढ़ियाँ करैत छथि तँए ठीक कहलहुँ ने यादव जी ।'

'हँ, हँ फेकैत जाउ, फेकैत जाउ मुदा बूझि लिअ अहाँके बातमे ई नहि आबऽ बला छथि,' हमरा दिस तकैत कहलैन्हि, 'एखनो समय अछि , हिनका भगाउ वकिली वाहेक हिनका किछु नहि अबैत छैन्हि । दू दिनमे अहाँ हिनकासँ उबि नहि जाएब तऽ फेर हमरा कहब ।'

फेर पति दिस तकैत कहलाह, अहाँक विषयमे एक्कहिटा बात कहऽके मोन करैत अछि कौवाक चोचमे अनारकली । आब हमर परिचय ठीकसँ कराएब वा खोलि दिअ अहाँक सभ पोल । '

'ठीक छैक...ठीक छैक ...कहि दैत छियैक,' पति हथियार रखैत कहलैन्हि, 'एहि लम्बा चौड़ा पहाड़ जेहन शरीरक नाम अछि, सेवक ...., नहि नहि सेवक प्रसाद यादव ।' यादवजीकेँ शरीर तानल देखिकऽ हमर पति हँसैत कहलैन्हि, 'मुदा हम सभ हिनका कहैत छी यादवजी...'

'मुदा अहाँ चाही तऽ सेवक सेहो कहि सकैत छी भौजी ।' यादवजी रोकैत कहलैन्हि । ओना हम विना कहने अपनेकेँ सेवक छी आ जखन-जखन एहि वकील साहेबसँ मोन उबिया जाए विना कोनो सङ्कोचके हमरा लग आबि सकैत छी ।' यादवजीके कहलाक बाद जोड़सँ हँसी बजरल ।

ओहि दिन अछि आ आजुक दिन। २५ सालक लम्बा समय बित गेल सभ मित्रके केश उज्जर भऽ गेल, सभ एक दूटा नाती-पोता बला भऽ गेल छथि। मुदा हुनक स्पष्टता, हुनकर उन्मुक्त हँसी अखनो जहिनाकेँ तहिना अछि। कोनो समारोहक ओ जान होइत छथि। जतऽ ओ बैसथि छथि ततऽ हुनकर अगल-बगलमे लोक ओहिना आबि जाइत अछि। हरेक उमेरक लोक हुनकर बातमे इण्ट्रेष्ट लैत अछि। कहियो ओ कहैत छथि, 'ई जीवनकेँ हँसी ठहक्के तऽ आगाँ बढ़बैत अछि। मित्र ई नहि होइत तऽ जीवनके उजार आ रुक्ख बनाबऽमे कोनो कसर नहि छोड़ने अछि ई समय ? जिन्दा आ मुर्दामे कोनो फरक देखाइत अछि कनीकाल लेल हँसि आ बाजि लैत छी। फेर तऽ चिन्ताक पहाड़ अछि आगाँमे ठाढ़ नहि जानि कोन समय उपरसँ बोलाहट आबि जाइ फेर तऽ दू गज जमीन आ किछु मित्रक स्मरण ?' बात हुनकर सारगर्भित आ सय प्रतिशत सही होइत छल , मुदा हुनकापर ई गम्भीर विषय बिल्कुल नहि जँचैत छल। केओ नहि केओ कहिए दैत छल, 'कि यादवजी अहूँ सन्तक वाणी बाजऽ लागल छी अहाँ तऽ हँसिते नीक लगैत छी।'

'ठीक छै चलैत छी।' यादवजी जखन गम्भीर होइत छलाह तऽ उठिकऽ जएबाक लेल उद्यत भऽ जाइत छलैथि फेर मुँहपर एकटा कृत्रिम मुस्कान लबैत कहैथि,' नमस्कार।'

हुनका एहिना उठिकऽ जाइत देखि लगैत छल जेना हुनका दुखक रागकेँ किओ छू देलक अछि।

ओ आइयो ओहिना उठिकऽ चलि देलाह, हम अपन कएल गेल हरेक व्यवहारकेँ टटोइल रहल छलहुँ। एतेक दिनपर ओ आएल छलाह हमर पति सेहो एतऽ नहि छलाह, हमर कोनो बात हुनका खराब वा अपमान जकाँ तऽ नहि लागल। एहि विश्लेषणमे डुबैत हम डायरीकेँ उठाकऽ अपन डोरमे राखिकऽ सुतबाक तैयारी करऽ लगलहुँ।

आइ २० गते अछि। हुनका आइए आबि जएबाक छैन्हि। कोन बससँ अबैत छथि एकर सूचना सेहो ओ देने छलैथि आइ कए दिनक बाद हमर भानस घर चमकल छल। घर तऽ ठीके छल किछु विशेष देखाबए लेल हम लनसँ दू-चारि फूल आ पात तोड़लहुँ ओकरा गुलदस्ताक रुप देलियै आ एकटा गिलासमे किछु पानि राखि गुलदस्ताकेँ सजा ओकरा डाइनिङ्ग टेबुलपर रखलहुँ। फूल तऽ आखिर फूले होइत अछि। माथमे लगाउ वा टेबुलपर राखी, निखार तऽ आबिए जाइत अछि। स्वयंपर बढ़ैत जारहल लापरवाहीकेँ तत्कालक लेल हम त्यागि देने छलहुँ, केना ने केना हमर चालमे सेहो तेजी आबि गेल छल। अवचेतन मोनमे बैसल एकटा पतिक प्रेमे तऽ कहल जा सकैत अछि। बच्चा घरपर नहि अछि तऽ कहियो-कहियो अधेर अवस्थामे सेहो युवा अवस्थाक आभास वा दोसर ढंगसँ कही तऽ आनन्द होइत अछि। अबेर भऽ रहल छल हम बेर-बेर मेन गेट दिस तकैत छलहुँ। घण्टी बजिते हम एक्के धापमे मेन गेटपर पहुँच गेल छलहुँ पतिक मुँह उदास देखि हम असमञ्जसमे छलहुँ जे हिनका की भेलैन्हि अछि ? आखिर पुछिए लेलहुँ, ' की भेल अछि ? मोन तऽ ठीक अछि ?'

'नहि ....' उदासी भड़ल जवाब भेटल,' थाकल छी कनी आरामकऽ लिअ वा हाथ मुहँ धो लेब तऽ भोजन लगाएब,' हम चाह दैत पुछलहुँ। पति चाहकेँ टेबुलपर राखि देलैन्हि आ ठण्ढा साँस छोड़ैत जुत्ता सहिते शोफापर पड़ि रहलाह। की भऽ गेल छैन्हि हुनका कतहु बल्डप्रेसर तऽ नहि भऽ गेल छैन्हि हमरा बहुतरास चिन्ता घेर लेलक।

'हमर मित्र सेवक प्रसाद यादव स्मरण अछि अहाँकेँ,' किछु देर चुप रहलाक बाद शुरु कएलैन्हि। 'स्मरण किए नहि रहत ? अहाँ एना किए पूछि रहल छी एखन ....' एहिसँ पहिने हम अपन बात पूरा करितहुँ एहिसँ पहिने निर्मेष दृष्टि लैत धाराप्रवाह कहऽ लगलाह, ' सेवक प्रसाद यादव हमरा सभक प्रिय मित्र, पतिक नोराएल आँखि किछु अनहोनीक संकेत दऽ रहल छल।

हमर पूरा शरीर कानमे केन्द्रीत भऽ गेल।' हमरा सभसँ रुसिकऽ चलि गेल साक्षी.........।'

'की ? ....आकाशपरसँ खसबाक पार आब हमर छल । हम किछु कहऽ चाहि रहल छलहुँ मुदा किछु सुनबाक अवस्थामे हमर पति कहाँ छलथि, ओतऽ मात्र बाजि रहल छलाह, 'हुनकर माय बिमार छल, देखबाक लेल अफिसक जीपसँ आबि रहल छलाह । हुनकर आदत छैन्हि, ड्राइवरकेँ ओ पाछू बैसा दैलाह आ स्वयं जीप ड्राइव करऽ लगैत छलाह । ओना ओ ड्राइव बढियाँ करैत छलाह, मुदा ओहि दिन नहि जाइन की भेल, शायद सड़कपार करैत एकटा मालकेँ बचएबाक चक्करमे हुनकर जीप उनैट गेल आ खधियामे खसि पड़ल ।

ड्राइभरकेँ तऽ कनी-मनी चोट लागल मुदा स्टेरिङ्ग छातीमे घूसि गेलाक कारण यादवजीकेँ घटने स्थलपर मृत्यु भऽ गेल । एखने हुनकर घरसँ आबि रहल छी । दिव्याकेँ तऽ हाले नहि पुछू । हुनकर माए बेचारी कानि-कानिकऽ अधमरु भऽ गेल छल । ४७ वर्षक कोनो मरबाक उमेर होइत अछि । तीन-तीनटा बच्चा अछि । की हएत ओकर ? हे भगवान अहाँ चूनि-चूनिकऽ लोककेँ लऽ जाइत छी ।

हुनका बजा तऽ नहि सकैत छी । 'काल्हि अहूँ ओतऽ चलि जाएब, लोककेँ सान्तवनो मलहमके काज करैत अछि । '

'सुनू हमरो किछु सुनू' हमर बात नहि सूनि रहलाक कारण हमरा तामस आबि रहल छल । हुनक मृत्यु कए गतेकऽ भेल छल ।'

' १७ गते कऽ ।'

'१७ गते कऽ ....एहि १७ गते कऽ ।' हमर आँखि आश्चर्य आ रोमाञ्चसँ भड़ल जा रहल छल ।' हँ.. हँ.. इएह १७ गते कऽ ।'

'मुदा एना कोना भऽ सकैत अछि हमर मतलब एहि १८ गते कऽ अहाँक अनुपस्थितीमे ओ अपना घरपर आएल छलाह आ एही ठाम बैसल छलैथि ...। हमरा संग बातोचित कएने छलैथि ।'

'की कहि रहल छी अहाँ ? ...होशमे तऽ छी, हुनकर मृत्यु फागुन १७ गते भोरेमे भेल छल आ १८ गते भोरमे अन्तिमो संस्कार भऽ गेल एहि बातक सयकड़ो लोक गवाह अछि । अहाँ कहैत छी जे १८ गतेक साँझमे ओ आएल छलाह । जे मोनमे आएल से कहि दैत छी । किछु स्मरणो-तस्मरणो रहैत अछि की नहि ?'

हमर पति हमरापर अनाप-सनाप कहि रहल छलैथि मुदा, हमर शरीर एहि बातकेँ स्वीकारयके पक्षमे नहि छल बातक सत्यताक ज्ञान एखन मात्र हमरे छल हमर हाथ-पएर काँपिकऽ ठण्ढा भऽ गेल छल । यादवजीद्वारा पकरल गेल हाथक अनुभव हमरा बेहोशीके अवस्थामे आनि देने छल, मुदा हमरा सत्यताक प्रमाण देबाक छल । शक्ति जमाकऽ हम कहलहुँ ' हमरा बढियाँ जकाँ स्मरण अछि ओ १८ गतेक साँझ छल ओहि दिन हम दुधबलाकेँ हिसाब देने छलहुँ हमर बातपर विश्वास नहि हुअए तऽ रघुसँ पुछि लिअ । हुनका जाइत समय ओहो गेटपर ठाढ़ छल । उएह तऽ गेट बन्द कएने छल ।'

'हँ मालिक मलिकानि ठीक कहैत छथि हमर नमस्कारकेँ ओ हाथ उठाकऽ जवाब सेहो देलैन्हि । बरण्डापर ठाढ़ रघु हमर बातकेँ पुष्टि कएलक । ' मुदा एना .....कोना भऽ सकैत अछि ।' पतिपर एखनो अविश्वासक बादल छाएल छल । तखने हमरा एका-एक यादवजीद्वारा देल गेल डायरीक स्मरण आएल, हम दौड़ैत डोर दिस बढ़लहुँ ओ डायरी एखनो ओहिठाम राखल छल । थरथराइत हाथसँ ओहि डायरीकेँ निकालहुँ हमरा हाथमे छल हमर सत्यताक प्रमाण ।

ओ हमर पाछू आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह ।

'देखू ई डायरी यादवजी अपने हाथसँ हमरा देने छलैथि । दूइए दिनक बात अछि डायरीक पन्ना उनटऽबैत हम कहलहुँ हमरा अहाँकेँ सम्बोधितकऽ देल गेल डायरीपर हुनकर हस्ताक्षर आ १८ गते लिखल अछि ।

ई रोमाञ्चक बात सुनिकऽ हमर पति मित्रक दुखसँ उबरिकऽ एहि सोचमे डूबि गेलैथि जे मृत्युक बाद ककरो आत्माकेँ एहि प्रकारे कतहु जाएब आएब सम्भव अछि । की आजुक युगमे केओ एहिपर विश्वासकऽ सकत ? मुदा जतेक ई सत्य अछि यादवजीकेँ मृत्यु १७ गते भेल अछि, ओतबे निर्विवाद सत्य अछि फागुन १८ गतेक साँझ हमरा घरपर हुनक आएब, जेकर सत्यता ई लाल डायरी प्रमाणितकऽ रहल छल ।

हमर पति श्रद्धासँ डायरी सहलौलैन्हि । पहिल पन्नापर लिखल वकील साहेब आ भौजीकेँ सप्रेम भेट । सेवक प्रसाद यादव ।

यादवजीक नाम देखिकऽ ओ पुन: दुःखित भऽकऽ कहलाह, 'हमरासँ भेटकऽ जइतहुँ मित्र, एकटा स्मरण छोड़िकऽ गेलहुँ मात्र । ओ एक-एकटा पृष्ठकेँ एना उण्टाबि रहल छलैथि ओकर मध्य हुनकर मित्र बैसल हो । मुदा की ! भितर पन्नापर जेना घड़ि रुकि गेल हुए । हरेक पन्नापर एकहिटा गते लिखल छल फागुन १८ गते आ मात्र फागुन १८ गते ....।

जिद्दी

'मम्मी तो कहियासँ एतेक नैरो माइण्डेड भऽ गेल छँ, एना की भऽ गेल छौ ? किए एतेक परेशान छँ ? सभ ठीक भऽ जएतै, आइ काल्हि ई एतेक बड़का बात थोरबे होइत छैक । सोसाइटीमे ई सभ चलिते रहैत अछि । हम आइए गुड्डूसँ बात करैत छी ।'

गिन्नीकेँ एक-एक शब्द शारदाकेँ रोइयाँ भुलका रहल छल । कतेक मुस्किल आ कतेक प्रेमसँ ओ दुनू बच्चाकेँ पालने छलीह ।

शारदा आ राधेश्याम छोट-छोट चीजसभ जोड़िकऽ ई घर बसओने छलीह । ओ अपन सम्पूर्ण सपना आ इच्छाकेँ गला घोटि धीया-पुताक खुशीक लेल अपन जीवन उत्सर्ग कऽ देने छलीह ।

साधारण परिवारमे जनमल शारदाकेँ पढाइक संग नृत्य आ अभिनयकेँ बाल्येवस्थासँ सख छलैन्हि । स्कूलमे शारदाक प्रतिभाकेँ निखारऽमे हुनकर नृत्य शिक्षक स्नेहा भनाक बड़का हाथ छल । ओ शारदाक गुणकेँ परखि हुनका निखारलैन्हि । शारदा सेहो हुनका निराश नहि कएलीह आ स्कूली शिक्षाक क्रममे शिल्ड आ मेडलके ढेर लगा देने छलीह ।

ओ क्याम्पसमे पहुँचली तऽ उच्च शिक्षाक कारणे हुनकर माय-बाबु एहिसँ दूर रहबाक निर्देशन दऽ देलैन्हि । संगहि कहलैन्हि, 'बहुत भेलौ, आब जे करबाक छौक अपन घरमे करिहे ।' ओ मोन मारिकऽ नृत्य आ अभिनयसँ दूर भऽ गेलीह, मुदा मोनमे एकटा टिस अवश्य रहि गेल रहैन्हि ।

राधेश्याम कृषि विकास कार्यालयमे जेटिओ छलाह । सामान्य रुपेँ घरमे कोनो कमी नहि छल । मुदा हुनकर सख मोनमे हिलोरि मारि रहल छल । ओ नृत्य स्कूलमे काज करबाक लेल राधेश्यामकेँ कहुनाकऽ तैयार कएने छलीह मुदा, ओहि समयमे जयन्तके अएबाक एहसास भेलैन्हि । जयन्त छोटे छल की गिन्नी आबि गेल । ओ दुनू बच्चा पोसऽमे सभ किछु बिसरि गेलीह । ६/७ वर्ष कोना बितगेल पते नहि चलल । आब शारदाकेँ अपन सुखी जीवन नीक लागऽ लागल छल ।

धीरे-धीरे जयन्त आ गिन्नी बड़का होबऽ लागल । जखन दुनू पएर उठाकऽ नचैत छल तऽ शारदाक मोन प्रशन्न भऽ जाइत छल आ अनायासे अपन बेटा-बेटीकेँ स्टेजपर नृत्य करैत देखऽके कल्पना करऽ लगैत छल । जयन्त आ गिन्नीकेँ शारदा नृत्य स्कूलमे नामाङ्कन करबओलैन्हि । शिघ्रहि ओकरा सभक प्रतिभा रंग देखाबऽ लागल । ओ सभ नृत्यमे पारङ्गत होबऽ लागल आ एहि संग शारदाक सपना साकार होबऽ लागल ।

एक दिन राधेश्याम टोकि देलकैन्हि, 'आब ई दुनू बड़का भऽ गेल नृत्य आदि छोड़ि पढाइपर ध्यान देबाक चाही ।'

राधेश्यामकेँ टोकलासँ शारदा तमसा गेलीह आ अण्टसण्ट बाजऽ लगलीह, हुनकापर नृत्य आ अभिनयकेँ भूत सवार छल । किछु देर दुनूमे झगड़ो भेल । मुदा अन्तमे जीत शारदाके भेल छल । राधेश्याम चुप भऽ गेलाह । दुनू धीया-पुताकेँ नृत्य आ अभिनयमे आगा बढ़बाक स्वीकृति दऽ देलैन्हि ।

जयन्तकेँ मन अपने आप नृत्यसँ हटि गेल । ओ पढाइमे ध्यान देबऽ लागल । ओ पढाइ करबाक लेल बाहर छात्राबास चलि गेल । गिन्नी असगरे भऽ गेल । चुकि ओकरापर अपन मायक बरदहस्त छल । अत: ओ नृत्य आ अभिनयक संग ग्लैमरसँ सेहो प्रभावित भऽ गेल ।

आब गिन्नीके बराबर स्टेज प्रोग्राम होबऽ लागल । शारदा बेटीमे अपन सपना सकार होइत देखि खुशी भऽ रहल छलीह । राधेश्यामकेँ गिन्नीके काज पसिन नहि छल । गिन्नी बराबर ग्रुपक संग कार्यक्रमक लेल बाहर जाइत छल । ओकरा आब बाहरके दुनियाँ नीक लागऽ लागल छल । ओकर उटपटाङ कपड़ा पहिरब राधेश्यामकेँ पसिन नहि छल । बराबर शारदासँ ओ कहल करए ' गिन्नी आब हाथसँ निकलि रहल अछि ।' एहिपर शारदा गिन्नीकेँ सम्झाबएक किछु प्रयास करैत छलीह मुदा, मायक बात गिन्नीकेँ असरे नहि करैत छल ।

' मम्मी हमरा २ हजार रुपैया चाही ।'

'किए ? तो काल्हिए पप्पासँ रुपैया लेने छलएँ ।'

' मम्मी साथी सभ हमरासँ पार्टी मांगि रहल छल ओहिमे सभ खर्च भऽ गेल ।'

'एना करबैं तऽ तोहर पापासँ शिकायत कऽ देबौ ।'

मौम कहैत गिन्नी माय संग लिपटि गेल, शारदाक मन पिघलि गेल आ ओ गिन्नीकेँ रुपैया निकालि कऽ दऽ देलीह ।

रुपैया लैते गिन्नी बाजल, 'मम्मी आइ-काल्हि नाटकक लेल हमर रिहर्सल चलि रहल अछि । अबेरसँ अएबौ ।' आ फुर्र भऽ गेल । शारदाक माथ ठनकल, ' काल्हि तऽ ओ कहने छल एहि हप्ता हमर कोनो शो नहि
अछि ।'

ई बात सोचिए रहल छलीह कि राधेश्याम गिन्नी-गिन्नी कहिते रुममे प्रवेश कएलैन्हि ।

शारदा कहलैन्हि, 'गिन्नीकेँ आइ रिहर्सल अछि, ओ ओहीमे गेल अछि ।'

'ओ झुठपर झुठ बजैत रहत आ अहाँ आँखि बन्द कऽ ओकरापर विश्वास करैत रहू । ओ कोनो लड़काक मोटरसाइकिलपर पाछुमे बैसि कतहु जारहल छल, मोटरसाइकिल लड़का बहुत तेज चला रहल छल,' राधेश्याम तमसाइते बजलैन्हि ।

शारदा घबराकऽ सोचबाक लेल मजबूर भऽ गेलीह जे गिन्नी गलत संगहतिमे पड़ि गेल अछि । मने-मन तमसाएल शारदा गिन्नीके प्रतीक्षा करऽ लगलीह ।

समय बितैत गेल, दिनसँ साँझ आ साँझसँ राति भऽ गेल । शारदा अपन बिछानपर चिन्तित भावमे कछमछा रहल छलीह, समय बित रहल छल । राति करिब ११ बजे कलवेलकँ घण्टी बाजल । घण्टीक आवाज सूनि ओ धड़फराएले उठलिह । दरबज्जा खोलिते गिन्नीकँ हालत देखि ओ सन्न रहि गेलीह ।

गिन्नीकँ आँखि चढल छल, एकटा बड़का केसबला लड़का ओकरा पकड़ने ठाढ़ छल । शारदा राधेश्यामसँ नुकाबएक प्रयत्नमे गिन्नीकँ चुपचाप ओकरा ओछाएनपर सुता देलीह । गिन्नीके मुँहसँ दारुक गन्ध आबि रहल छल । मोन असीम पीड़ासँ बिलबिला उठल, आ ओ अपनाद्वारा गिन्नीकँ देल गेल प्रोत्साहनपर अपनाकँ कोसैत बिचारऽ लगलीह जे गिन्नीकँ कोना कऽ सुधारी । शारदाकँ जयन्तक बात याद आबि रहल छल । हुनका मोनमे छात्राबासक प्रति बढ़ियाँ विचार नहि छल । मुदा गिन्नी तऽ हुनकर आँखिक आगा छल फेर कतऽ चूक भऽ गेल । कोना ओ गलत भऽ गेलीह ।

राधेश्याम तऽ बेर-बेर ध्यान दिऔने छला, 'लड़कीकँ आजादी दी मुदा, ठीकसँ देख-रेख आवश्यक अछि । कम उमेरमे बच्चा आजादीके फाइदा उठएबाक फेरमे खतरामे पड़ि सकैत अछि ।'

शारदा भरि राति इएह बातसभ सोचैत जगले रहि गेली । भोरमे जखन गिन्नी उठल तऽ रातिक विषयमे पुछलापर गिन्नी रातिक घटनाप्रति अन्जान बनैत बाजल,' कालिह पार्टीमे नइँ जानि के हमरा ड्रिङ्कमे कि मिला देने छल ।'

मायक ममता फेर हाबी होबऽ लागल छल मुदा गिन्नीक भविष्य प्रतिके चिन्ता शारदाकँ भावनामे बहऽसँ रोकलक । शारदा गिन्नीकँ बाट बदलबाक प्रयत्न करऽ लागलीह ।

आब जखन हालत नियन्त्रणसँ बाहर भऽ चूकल छल ताहि समयमे शारदा रोक लगाबऽ चाहि रहल छलीह मुदा, गिन्नी कोनो बात सुनबाक पक्षमे नहि छल । एक दिन शारदा प्रेमसँ ओकर हाथ सहला रहल छलीह, तखने हाथमे कारी रंगक निशानपर हुनक नजरि पड़लैन्हि ओ प्रश्न सूचक दृष्टिसँ बेटीके देखलीह तऽ तुरन्त गिन्नी सफाइ देलक, ' किछु नहि मम्मी, हम स्कूटर ड्राइव करैत छी तकरे निशान अछि । '

मुदा ओकर बहाना शारदाकँ विचलित कऽ देने छल ...आंगुरकँ बीचमे जरबाक निशान मात्र सिगरेटके भऽ सकैत अछि ।

शारदा आब ओकरापर नजरि राखऽ लगलीह । ओकरा अनेक ढंगसँ सम्झाबऽ लगलीह मुदा गिन्नीक आँखिपर तऽ ग्लैमरके चश्मा चढ़ल छल । मोबाइलक घण्टी बजिते ओ भागि जाइत छल ।

निराशा आ हताशाक कारणे शारदा बिमार रहऽ लगलीह । एकरबाद राधेश्यामक चिन्ता सेहो बढ़ि गेल । राधेश्याम गिन्नीसँ कहलैन्हि, 'तो किछु दिन छुट्टि लऽकऽ मायकँ देखभाल कर । ' मुदा गिन्नी एक नहि सुनलक ।

राधेश्याम शारदाकँ डाटऽ फटकारऽ लागल । गिन्नीक बर्बादीक लेल शारदाकँ जिम्मेबार ठहराबऽ लगलाह ।

दिन आ राति बुझाए जेना रुकि गेल छल । घर अशान्त भऽ गेल छल ।

आइ तऽ गिन्नीकँ बेसिनपर उल्टी करैत देखि शारदा सिहरि उठलीह । ओकर बात तऽ आगिमे घीके काज कएलक ।

'की भेलै, मम्मी ? कोनो पहाड़ टूटि गेलै, कथिलाए दुखित छैं । ककरो मृत्यु भऽ गेल छै । हम डाक्टर लग जाइत छी एक घण्टाक बात अछि, बस्स सभ किछु नरमल ।'

शारदा हिचुकि-हिचुकि कऽ कानऽ लगलीह । की भऽ गेल अछि एहि पीढ़ीकँ ।

ई युवा वर्ग कतऽ जा रहल अछि, कतऽ गेल हमरा सभक मान्यता ।

कतऽ गेल शिक्षा । एतेक जल्दी एतेक परिवर्तन । एतेक भटकन, की एना सम्भव छैक ?

बाहर गेटपर खटखटके आवाज सूनिते रेणु रुमसँ बहरेलीह । केओ बेर-बेर गेट ढकढका रहल छल । रेणुके मोनमे भेल जे पक्के केओ माँगऽ बला तऽ नहि अछि । आइ-काल्हि भिखमङ्गा सभ बढ़ि गेल अछि । जखन कखनो भिख माङऽ चलि अबैत अछि । कनिक काल लेल मोन भेलैन्हि जे गेट नहि खोली मुदा फेर ढकढकएबाक आवाज आएल तऽ ओ गेट खोलि देलीह ।

आगामे एकटा लड़की ठाढ़ छल । रेणुकैं देखिते ओ बाजल, 'प्रणाम, हम एकटा नव कम्पनीक समानक सेम्पल लऽकऽ आएल छी । एखनधरि अपने कोन साबुनसँ कपड़ा धोइत आएल छी ?'

रेणुके कोनो उत्तर नहि फुराएल छल मोनेमोन सोचलीह, कोनो सस्ता साबुनके नाम लेलासँ ठीक नहि हएत, तँए महग साबुनक नाम लऽ लेलीह ।

'अपने बेकारमे एतेक पैसाके बरबाद करैत छी । एहि साबुनसँ हमर साबुन सस्ता अछि आ सफाइ एहन अछि जे देखिते रहि जाएब । कम्पनी नव अछि तँए दू पैकेट लेलापर एक पैकेट फ्रीमे भेटत ।'

रेणुकैं लगलैन्हि, यदि सहीमे एहि साबुनसँ कपड़ा साफ होइत अछि तऽ एकरा लेबऽमे कोनो समस्या नहि ।

ओ साबुनके पैकेट निकालिते रेणुसँ बातचितक क्रम आगा बढ़ओलक ।

'आण्टी, हमर कम्पनी किछु आओर समान बनबैत अछि, जेना ई तकिया .... माथमे दर्द अछि तऽ एकरा माथक निच्चा राखि दियौ आ बटन दबा दियौ भितर रहल मोटरसँ अपनेआप माथक हल्का-हल्का मालिस होबऽ लागत । कहबाक मतलब, अहाँकैं लागत जेना केओ अहाँक माथ दबा रहल हुअए । बहुत आराम लागत आ पन्द्रह मिनटमे माथक दर्द समाप्त भऽ जाएत । डाक्टरके कहब अछि पुरान माथ दर्दक रोगीक लेल ई तकिया बढ़ियाँ अछि । ई डाक्टरक रिपोर्ट पढ़ू, माइग्रेन रोगीक लेल सेहो ई तकिया बुहत प्रभावकारी साबित भेल अछि । बजारमे एकर मोल एक हजार रुपैया अछि, मुदा नव हएबाक कारणे कम्पनी एखन एकर मोल ६ सय रुपैया रखने अछि,' ओ मुस्किआइत पुछलक, 'ई तकिया सेहो लेब आण्टी ?'

रेणु ओहि लड़कीके समान बेचबाक ढंगसँ सम्मोहित भऽगेल छलीह । हुनका लागल एतेक बढ़ियाँ तऽ एफ.एम. रेडियोपर समाचार पढ़ऽ बाली सेहो नहि बजैत हएत, ई लड़की तऽ बाजऽमे अतेक माहिर अछि कि कतहु अटकबो नहि करैत अछि आ नहि दोहरबैत अछि ।

'एकटा आओर बढ़ियाँ चीज अछि, आण्टी । ओकरो हमरे कम्पनी एहि बिचमे बनाएब शुरु कएलक अछि । ई एकटा बैग अछि, देखियौ, हम अपनेकैं खोलिकऽ देखबैत छी । अपने एहिमे महग साड़ी सेहो राखि चेन बन्दकऽ सकैत छी, कोनो किरा-तिरा भितर नहि जा सकैत अछि । कपड़ाक प्रेस खराब नहि भऽ सकैत अछि । अपने चाही तऽ अपन महग साल सेहो एहिमे बन्दकऽ राखि सकैत छी आ यदि अंकलजीकैं शहरसँ कतहु बाहर जाए पड़ैन्हि तऽ एहिमे अपन महग सुट सेहो लऽ जासकैत छथि । सुटपर कोनो सिलवट नहि हएत । बाहर एकर मोल पाँच सय रुपैयाँ अछि, मुदा हम अपनेकैं मात्र तीन सय रुपैयामे देब ।'

यद्यपि रेणु किछु किनबाक लेल तैयार नहि छलीह, मुदा ओहि लड़कीके बाजबाक ढंग एतेक बढ़ियाँ छल जे रेणु ओकर बातक प्रवाहमे बहैत चलि गेली। साबुन, तकिया आ बैग तीनू चीज ओ ओकरासँ किन लेलीह।

गर्मीक दिन छल पैसा पर्समे रखैत ओ लड़की रेणुसँ पिबाक लेल पानि मङलक।

'आण्टी, पानि पिया दिय आब एतऽसँ सीधे घर जाएब। बेरियाक दू बाजि गेल अछि।

रेणु पुछलीह, ' घरमे के सभ छथि ?'

लड़की बैगकेँ एक दिस हँटबैत बाजल, 'आण्टी माँ अछि आ एकटा बड़की बहिन सेहो।'

'आ बाबु जी?'

रेणुके लागल 'शायद पिताकेँ स्वर्गबास भऽगेल हएत।

'बाबुजी सेहो छथि आण्टी .... मुदा ओ हमरा सभ संग नहि रहैत छथि।'

'किए ?' रेणु आश्चर्यसँ भरल दृष्टिसँ लड़की दिस तकलीह।

'लम्बा कहानी अछि, आण्टी। अपनेकेँ फेर कहियो सुनाएब, जखन अपने लग कम्पनीक दोसर समान बेचऽ आएब। ठीक छैक आण्टी, थैंक्स।'

एतेक कहिकऽ ओ लड़की बैग कान्हपर लटका लेलक आ रेणुके घरसँ चलि गेल। समान बेचिकऽ ओ लड़की तऽ चलि गेल मुदा रेणु जेना बहुत परेशान भऽगेलीह। भितर आबिकऽ ओ ठण्ढा पानि पीबिकऽ चुपचाप ओछाएनपर पड़ि रहलीह।

रेणुके रहि-रहिकऽ इएह दुख भऽ रहल छल जे किए लड़कीसँ पुछलीह की बाबु कतऽ छथि। कतेक बुधियार अछि ओ लड़की, ओ किछु नहि बतओलक आ दोसर बेर आएब कहिकऽ चलि गेल।

करीब एक महिना बितगेल ओहि लड़कीकेँ रेणु बिसरि गेल छलीह एहि बिच नहि जानि कतेको लड़का-लड़की अबैत रहल, मुदा रेणु कहियो ओकरा सभसँ कोनो समान नहि किनलीह फेर एक दिन उएह लड़की रेणुके घर आबि गेलीह।

'आण्टी, अपने हमरा चिन्हलहुँ ? हम ओहे छी जे एक महिना पहिने समान देने छलहुँ। हमर देल समान ठीक छल की नहि ? कपड़ा सफा भेल की नहि ? आ तकिया ठीक अछि की नहि ? अपने अपन महग साड़ी ओहि बैगमे रखलहुँ की नहि ?'

ओहि लड़कीके अपना आगाँ देखि रेणु आश्चर्यमे छलीह ओ तऽ सोचनहो नहि छलीह जे ओ सेल्स गर्ल हुनका ओतऽ पुन: समान बेचऽ आएत, किए तऽ रेणु बुझैत छलीह जे घरमे समान बेचऽवाली लड़का-लड़की तऽ प्रत्येक दिन नव घरमे समान बेचऽ जाइत अछि तखने ओ लड़की रेणुके अपना दिस ध्यान खिचलक।

आण्टी एहि बेर हम भानस घरके समान अनलहुँ अछि,' एते कहि ओ बिना रेणुके आदेश लेने बैगमेसँ समान निकालऽ लागल।

'ई देखू आण्टी, एग स्लइजर अछि अपनेके खौलाएल अण्डा छुरी वा काँटा चम्मचसँ बढ़ियाँसँ नहि कटाएत, कहियो तिर्छा सेहो कटा जाएत, एकर निदान स्ल्यजरसँ हएत। अपने खौलल अन्डा एहिमे राखि दियौ आ उपरसँ उतारऽबला ढक्कन निच्चा लाउ। बस एकटा सही नापके पातर-पातर अण्डाक टुक्रा कटैत जाएत, प्लेटमे सजओलापर बहुत सुन्दर देखाएत आ ई जे उपरके हिस्सा अछि एहिसँ सिधा अण्डाके चारि टुक्राकऽ दियौ, आब घरपर पार्टी सेहो हएत तऽ कोनो चीजपर अण्डा सजाबऽमे कनिको समय नहि लागत।'

रेणु फेर ओकर शब्दक जालमे फँसैत चलि जारहल छली। समान बेचऽ बाली लड़की धाराप्रवाह बाजि रहल छल, 'आओर देखू आण्टी, ई चम्मच, काँटा आ छुरीक सेट अछि सभक हेण्डल प्लास्टिकक लागल

अछि । स्टील बढियाँ क्वालिटीके अछि कहियो बिभ नहि लागत । देखू स्टैण्ड सेहो अछि, अपनेकेँ भोजन कर:बला टेबुलपर राखल कतेक सुन्दर लागत, बाजारमे एकर मोल पाँच सय रुपैया अछि, मुदा कम्पनी अपन प्रचारक लेल एकरा मात्र चारि सय रुपैयामे द: रहल अछि ।'

यद्यपि,रेणुकेँ दुनू चीजक आवश्यकता नहि छल, मुदा रेणु नहि चाहितो ओ दुनू चीज लड़कीसँ किन लेलीह ।

रेणुसँ पैसा ल: ओ बैगमे रखलक आ ठीक पहिने जकाँ रेणुसँ बाजल, 'आण्टी पानि पिआएब ? बेरिया भ: गेल अछि अपनेक घर अन्तिम अछि, आब सिधे घर जाएब ।'

रेणु पहिने जकाँ पानि अनलीह, ओ लड़की पानि पिलक, बेगके अपना कनहापर टङलक आ बाहर जाए लागल, तखने नहि जानि कि सोचिक: रुकि गेल ।

'आण्टी, अपने हमर बाबुजीक विषयमे पुछने रही आ हम अपनेसँ कहने रही, लम्बा कहानी अछि, जखन दोसर बेर आएब त: सुनाएब । हम सुनैबतहुँ मुदा समय नहि अछि ... आण्टी, अपने बहुत सुन्दर छी । हम जखन पहिल बेर अपने ओहि ठाम अएलहुँ त: अपनेक मुँह देखि हमरा लागल छल अपनेक मुँह सहीमे बलिउड अभिनेत्री जयापर्दासँ मिलैत अछि, कतेक लम्बा आ गोर छी अहाँ । अपनेकेँ लगैत हएत जे हम मक्खन लगा रहल छी, मुदा अपने अंकलसँ पुछिक: देखब, ओहो इएह कहताह ।'

ओ लड़की कानह पर बैग लटकाक: बाहर चलि गेल, ओकरा गेलाक बाद रेणु सिधे अएनाक आगाँ आबि ठाढ़ भ: गेलीह । कानह पर उजरल केसकेँ सजओलीह नहमे नेल पलिस लगओलीह । हल्का लिपिस्टिक ठोढ़पर चढ़ा लेलीह, रेणुकेँ लगलैन्हि, हमर व्यक्तित्वमे कोनो आकर्षण त: अछिए नहि त: ओ लड़की एहिना हुनकर तुलना जयपर्दासँ थोरहेक: सकैत छल ।

दिन भरिमे कतेको बेर रेणु स्वयंकेँ अएनामे तकलीह । हुनकर व्यक्तित्वमे आकर्षण अछि । ई बात मोनमे अबिते बेर-बेर हुनकर मोन प्रशन्नतासँ भरि जाइत छल ।

साँझमे जखन पति घर एलैन्हि त: रेणु ओ बात हुनका सुनओलैन्हि ।

'बुझलियै आइ उएह सेल्स गर्ल आएल छल हम ओकरासँ किछु समान किनलहुँ अछि । आ बूझल अछि, ओ हमरासँ की कहलक ? कहि रहल छल हमर मुँह जयापर्दासँ मिलैत अछि ।

रेणुक बात सूनिक: हुनकर पति हुनका सम्भओलैन्हि, 'सुनू अहाँ एहि शहरक लेल अखन नया छी, एहन कोनो लड़कीकेँ घरक भितर नहि आनू । कोनो दिन ओ अहाँके डरा-धमकाक: घरक सभ समान ल: जाएत । '

रेणुकेँ पतिक बात बढियाँ नहि लगलैन्हि । फेर ओ लड़की बहुत सीधासाधा छल, समयक मारल छल, पिता जुआन बेटीकेँ छोड़िक: चलि गेल छल सहीमे, अपन हिम्मत, हौसलासँ काज क: रहल अछि । समान बेचैत अछि त: कि भेलै भिख माङयसँ त: नीक अछि ने कमा रहल अछि, परिवारकेँ चला रहल अछि । पतिके बातकेँ मोनसँ निकालि अपन काजमे लागि गेलीह ।

भोर ९ बजेसँ साँझ ६ बजेधरि घरमे हुनका असगरे रह: पड़ैत अछि तँए कोनो ने कोनो काजमे रेणु स्वयंकेँ अल्भाक: रखैत छथि । अगल-बगलमे सेहो ओ कम्मे जाइत छथि । कहियोकाल जखन कोनो विशेष कार्यक्रम होइत अछि त: टीभी देखैत छथि नहि त: बाहर बरण्डेमे बैसल रहैत छथि ।

किछु महिनाक बाद फेर ओ लड़की रेणु लग समान बेच: आएल ।

एहि बेर त: रेणु सोचि लेने छलीह जे ओकरासँ कोनो समान नहि लेब मात्र ओ ओकर समान देखि फिर्ता क: देतीह ।

ओ लड़की रेणुकेँ प्रणाम करैत भितर आबि गेल, 'आण्टी अपनेक लेल आइ बहुत नीक चीज अनलहुँ अछि । आइ हम खासाक सामान अनलहुँ अछि ' एतेक कहैत ओ अपन बैग खोल: लागल ।

'ई देखू आण्टी सैडो वर्कक समान अछि । ई १२ नेपकिन अछि, अपनेक डाइनिङ्ग टेबुलक लेल टेबुल क्लथ सेहो अछि । पाहुन-परखकें जखन अपने घरपर बजाबी तऽ टेबुल क्लथ आ नैपकिन राखि दीयौ फेर अपनेक प्रशंसा कतेक करैत छथि आ अहाँक पसन्द कतेक बढियाँ अछि सहजहि बूझि जाएत ।

रेणु सोचि लेने छलीह कि ओ कोनो समान नहि किनती, तँए ओ टेबुल क्लथकें उठा कऽ देखि लेलीह आ फेर ओ समान फिर्ता कऽ देलीह ।

'की बात आण्टी, आइ अपने किछु नहि किनबै की ? '

रेणु बनाबटी उदासी लबैत कहलीह, 'चीज तऽ बहुत पसिन आएल, मुदा आइ अहाँक अंकलसँ पैसा लेबऽ बिसरि गेल छी, हमरा लग पैसा नहि अछि ।'

ओ लड़की बाजल, 'पैसाक कोनो बात नहि अछि हम फेर आबिकऽ लऽ जाएब, पैसा थोरहे कतहु जएतै । अहाँ ओकरा बिषयमे नहि सोचू । मात्र अपन पसिनक समान राखि लिअ । '

ओ लड़की फेर किछु नया समान निकालब शुरु कऽ देलक ।

'ई देखू कभर सोफा बैग अछि , पुसन कभर अछि अपने बजारमे किनब तऽ दोकानपर अपन कमिशन लऽकऽ बेचत हम अपनेकें बजारसँ बहुत सस्ता मोलमे दऽ रहल छी । एक-एक सेट राखि दिय, आण्टी ? '

ओ रेणुसँ बिना पुछने देखाओल गेल समानकें चौपेतकऽ सोफापर राखि देलक ।

'आण्टी ई सभ समान अपनेक लेल छोड़ि रहल छी एकर मोल पन्द्रह सय रुपैया अछि। हम काल्हि कोनो समयमे आबिकऽ पैसा लऽ लेब ।'

रेणु इशारासँ ओहि लड़कीकें रोकलीह आ पर्ससँ पैसा निकालिकऽ दऽ देलिह ।

पैसाकें हाथमे राखि ओ लड़की बाजल, 'आण्टी पैसाक काज अछि तऽ राखि लिअ हम बादमे लऽ जाएब ।'

एतेक कहिकऽ ओ लड़की अपन पर्समे पैसा रखैत आ बैग कान्हपर राखि बाहर निकलऽ लगलीह । रेणु बिचमे टोकैत कहलीह, 'पानि नहि पिब ?'

'नहि आण्टी आइ अपनेक घर अन्तिम नहि अछि, आइ तऽ हमरा आओर घर जएबाक अछि ।' अतेक कहिकऽ ओ लड़की घरसँ बाहर चलि गेल । रेणु सोफापर राखल समान सभके आलमारीमे राखिकऽ फेर रुममे बैसि टेलिभिजन देखऽ लगलीह ।

साँझमे पति अबिते बजलाह, 'जल्दीसँ चाह पियाउ आइ बसके बेटीक बियाह अछि हम काल्हि कहब बिसरि गेल छलहुँ अहाँ कने बढियाँसँ तैयार भऽ जाउ । हम अहाँकें ओहि दिन गहनाक जे सेट किन देने छलहुँ ओ पहिर लिअ ।

रेणु पतिकें चाह देलैन्हि आ सभसँ बढियाँ साड़ी प्रेस करबाक लेल निकाललैन्हि । हुनका रहि-रहिकऽ ओहे लड़कीके बात स्मरण आबि रहल छल जे हुनकामे जयापर्दाक झलक अछि । आइ ओ किछु एहि प्रकारसँ जएती जे, हुनका सभ लोक देखिते रहि जाएत । कढ़ाइदार साड़ीक संग मेल बला सम्पूर्ण गहना पहिर लेलीह ।

स्वयंकें अएनाक आगाँ देखिते हुनका लागल, ओ समान बेचऽ बाली लड़की कतेक सत्य कहि रहल छल । रेणुक हृदय बेर-बेर सुन्दर शब्द सुनबाक लेल आतुर रहैन्हि ।

पार्टीसँ घुरैत काल अपन पतिकें कहलैन्हि, 'अहाँक विज्ञापन कम्पनीमे काज करऽबला लड़कीकें काज भेट सकैत अछि ?' पति सुन्दर कनियाँक बाँहि पकरैत कहलैन्हि, 'ओ लड़की के अछि ? कहीं अहाँ तऽ नहि छी ?'

'नहि-नहि.... हम नहि, हम ओ समान बेचऽ बाली लड़कीक बातकऽ रहल छी । हम अहाँकें विश्वास दियबैत छी जे ओकर आवाजमे अतेक जादू अछि कि ओ बूढ़ होइत महिलाकें सेहो जुआनकऽ सकैत अछि,

मुर्दामे जान दऽ सकैत अछि। सहीमे, जखन ओ बजैत अछि तऽ आगाँमे रहल व्यक्तिके आकर्षितकऽ सकैत अछि। ओकरा एक चांस दऽ सकैत छी। हमरा विश्वास अछि जे ओ अहाँक विज्ञापन कम्पनीकेँ बहुत लाभ दिया सकैत अछि, कतेक सुन्दर अछि ओ, आ ओकर अवाज ..... एकटा अवसर अवश्य दियौक।'

रेणुक पति हुनकर आदेशकेँ कोना टालि सकैत छलाह। ओ लड़कीसँ भेंट कएलैन्हि, ओहि दिन सेहो कोनो कम्पनीके समान लऽकऽ आएल छल। रेणुके पतिकेँ देखिते ओ बाजल, 'अंकल जी ई तऽ बहुत बढ़ियाँ भेल जे आइ अपनहुँसँ भेंट भऽ गेल। हम हरेक समय सोचैत छलहुँ अतेक सुन्दर आण्टीक पति कतेक सुन्दर हएताह, मुदा अपने तऽ हमर सोचसँ बहुत आगाँ छी। ठीक छै अंकल ई देखू , ई जेण्ट्स रुमाल अछि। बुहत नरम कपड़ाक बनल अछि एहिसँ मुँहक पसिना बढ़ियाँ जकाँ सुखा सकैत अछि। रुमालक कोनामे अपनेक नामक पहिल अक्षर सेहो लीखल अछि।'

रेणुक पति चुपचाप ओहि लड़कीकेँ देखैत रहलाह आ ओकर बाजबाक ढङ्गपर मोहित भऽ बजलाह, 'अच्छा, पहिने अपन नाम तऽ कहू।'

'हमर नाम ...... सिम्मी अछि .....अंकल।'

'अच्छा तऽ सुनू सिम्मी, आइ हम अहाँसँ किछु नहि किनब, मुदा हम आ रेणु, आइ अहाँकेँ किछु देबऽ चाहैत छी।'

सिम्मीक माथपर पसिनाक बुन्द छलैक उठल। ओ घबराइत बाजल, 'किछु नहि लेब, अंकल .... '

'किए ?'

'सिम्मी, हम अहाँकेँ अपना कम्पनीमे नोकरी देबऽ चाहैत छी। आब अहाँकेँ घर-घरमे जाकऽ समान बेचबाक आवश्यकता नहि पड़त। आब अहाँ हमर विज्ञापन कम्पनीक लेल काज करब।'

सिम्मीक आँखिमे खुशीक नोर छलछला गेल। पहिल बेर सिम्मी लग शब्द नहि बचल छल। ओ कखनो रेणु दिस ताकि रहल छल आ कखनो रेणुक पति दिस, कोनाकऽ ओ दुनू गोटेकेँ कृतज्ञता व्यक्त करए।

हाजिरी रजिष्टरमे आदर्श नामपर हमर आँखि रुकि जाइत अछि। आदर्श ..... आदर्श ..... आदर्श। पुरा रजिष्टरमे एकटा इएह नाम हमरा देखाइ देबय लगैत अछि। बहुत मुस्किल सँ स्वयंकेँ शान्त करैत बजैत छी, 'आदर्श।'

'जी मैम।'

एकटा मधुर आबाज सूनि रजिस्टरसँ आँखि उठबैत छी। आगाँके बेञ्चपर बैसल एकटा सुन्दर बालकपर आँखि टिक जाइत अछि।

उएह तऽ अछि। अवश्य हुनके जकाँ नाक, ठोर, मुँहक कटिन, ओहिना आकर्षण। एक नजरि देखऽ बला सेहो बता सकैत अछि। ..... ओह, हमरा ककरोसँ की मतलब अछि ? नहि ...नहि, मतलब तऽ

अछि। सभ किछु छोड़िकऽ एहि तरहे नहि अबितहुँ तऽ ई आदर्श हमरे होइत। छी.., की सोचऽ लगलहुँ हम ? सङ्कोचसँ हमर आँखि स्वयं झूकि गेल।

मुदा आब सोचलासँ की ? हमरा मानस पटलपर बिहारि उठल छल। जाहि स्मरणके पाछू छोड़ैत एतेक दूर आएल छलहुँ आइ ओ पुरान बात हमरा एहि तरहे घेर लेत ई हम सोचबो नहि कएने छलहुँ।

ई की अछि ? किए कएने छलहुँ हम ? की भेटल एना कएलासँ हमरा ? एहि प्रश्नक घेरा हमरा चारु दिससँ बान्हि रहल छल। की सम्पूर्ण दोष अरुणेके छलैन्हि ? हम स्वयं तखन अपन जिद्दक आगाँ ककरो बात नहि सुनने छलहुँ। पुरा दोष अरुणके उपर लादऽ बाली हम, आइ स्वयंकेँ नजरिमे दोषी भऽगेल छी। मुदा एहि बातकेँ आब पन्द्रह वर्षक बाद सोचिकऽ की हएत ?

शिक्षकक कक्षमे आबिकऽ बैसि जाइत छी माथ दुखाइत अछि एकर बहाना बनाकऽ दोसर शिक्षककेँ कक्षामे पठा दैत छी।

स्मरणक समुद्रमे डुबैत उतरैत अरुणसँ भेल बियाह स्मरण रिल्ले भऽ जाइत अछि। द्विरागमने दिन जखन हम सासुर अएलहुँ तऽ हमर साउस हमर नैहरक लोक उपर खूब चुटकी लेलैन्हि तऽ हम आश्चर्यमे पड़ि गेल छलहुँ। फेर बात-बातमे उलहन देब हुनकर स्वभाव हमरा आगाँ प्रत्यक्ष होबऽ लागल। हम किछु दिन तऽ चुप रहलहुँ, ताहिके बाद हमरो मुँह खूजि गेल।

'ई हमर माए बाबुकेँ किछु नहि कहि सकैत छथि, 'तमसाइते हम एक दिन डाँटि देलहुँ।

'अहाँके, माँ संगे एहन व्यवहार नहि करबाक चाही,' अरुण रुममे आबिकऽ हमरा कान्ह पर हाथ राखि प्रेमसँ सम्झओलैन्हि।

मुदा हम तऽ हुनकेपर बरसि गेल छलहुँ 'किए नहि कहबाक चाही, अहाँ हुनका किए नहि रोकैत छियैन्हि, की नव पुतहु संग एहने व्यवहार कएल जाइत छैक ?'

'सभ धीरे-धीरे ठीक भऽजएतैक, मोती। अहाँ एहिपर ओतेक ध्यान नहि दिऔक,'अरुण ओहिना शान्त छलाह।

हम ओछ्यायनपर सूति रहल छलहुँ। एहिकें बाद अरुण हमरासँ किछु कहऽ चाहैत छलाह, मुदा हम अवसर नहि दैत छलहुँ। कतेको राति ओहिना बित गेल भोरसँ साँझधरि नहि जानि कतेको बात हम अरुणसँ सुनने छलहुँ आ फेर एहिके बदला रातिमे अरुणसँ गनि-गनिकऽ लैत छलहुँ। ओ बेचारा मुक दर्शक जकाँ सभ सहैत छलाह। केक्कर पक्ष लितथि ओ ? दू दिन पहिने आएल अपन नव सहचरीके वा पालि-पोसिकऽ एहि लायक बनबऽ बाली माँके ? हमर नैहर भैरहवामे छल आ सासुर ग्रामीण क्षेत्रमे। गल्ती तखन शायद ककरो नहि छल। शहरी सभ्यताक रङ्गमे पलायल हम ओहि संस्कारी बातके कोना बुझितहुँ जाहिके विषयमे हम कहियो सुननहे नहि छलहुँ। मुदा दुनू पक्षमेसँ केओ झुकबाक नामे नहि लैत छलहुँ। सभ गोटे चप्पल रुमसँ बाहरे रखैत छल मुदा हम भानस कक्षमे, शयनकक्षमे सेहो चप्पल लऽ जाइत छलहुँ। साउस शायद एहि सभ अवसरके प्रतिक्षेमे रहैत छलीह। कहियो कहैत छलीह, 'कतेक अंग्रेज मरल छल तऽ ई देवी जन्म लेने छथि।' कहियो कहैत छलीह, 'अपन बापक घरमे नहि सिखलहुँ तऽ कोनो बात नहि मुदा एतऽ ई सभ किछु नहि चलत।'

हमहुँ अण्ट-सण्ट जवाव दैत रुममे आबि कानऽ लगैत छलहुँ। बात-बातमे साउस कहैत छलीह, 'ई दिल्ली मुम्बई नहि छैक ई मिथिलाञ्चल अछि। हम आश्चर्यसँ हुनका देखैत रहि जाइत छलहुँ।

आखिर, ओ मनहुस दिन आबिए गेल यदि ओहि दिन अरुण हमरा रोकि लेने रहितथि तऽ आइ हमर सर्वनाश नहि भेल रहैत।

हम नहाकऽ निकललहुँ तऽ साउस चिचिएलीह, 'बाल्टिन माजि देबैक कनियाँ।'

'किए ?'

हमरा नजरिमे प्रश्न देखिकऽ ओ बजली, 'घरबलासँ पहिने नहायल छी तऽ बाल्टीन माँजि दिऔ नहि तऽ घरबलाके उमेर घटैत छैक ।'

'की मतलब ?'

मोनमे तऽ आएल कही बाल्टिन माजि-माजिकऽ उमेर बढ़ा लैत छी तऽ अहाँ विधवा किएक भेलहुँ ? मुदा चुप रहब ठीक बुझलहुँ।

किछु देरक बाद अरुण भोजन करऽ लेल बैसलाह तऽ फेर ओहे बात। हम अपन मुँहपर नियंत्रण नहि राखि पएलहुँ आ कहलहुँ 'घरबला हमर छथि, हुनकर उमेरक चिन्ता हमरा अछि। अतबे अछि तऽ अहाँ अपन घरबलाकेँ उमेर किए नहि बढ़ा लेलहुँ ?'

ई बात हमरा मुँहसँ निकलिते घरमे महाभारत मचि गेल ।

'एहि घरमे हम जे चाहब सएह हएत। अहाँक ई हिम्मत ?' साउस गरैज रहल छलीह ।

आब हमरो सहन शक्ति जबाब दऽ रहल छल। अपमानक हद भऽ गेल छल। ओहि समयमे हम ब्रिफकेशमे कपड़ा राखऽ लगलहुँ।

सैकड़ो मुद्दाकेँ लड़ि कऽ अदालतमे जीतऽ बला अरुण अपने घरक मुद्दा नहि लड़ि पाबि रहल छलाह। हम कहलहुँ 'अहाँके तऽ कोनो कठपुतली बिवाह कऽकऽ अनबाक चाही जकर डोरी अहाँक माएक हाथमे होइत ।'

हम जाए लगलहुँ तऽ अरुण हमरा रोकबाक बहुत प्रयास कएलैन्हि ।

'अहाँ यदि हमरा राखऽ चाहैत छी तऽ हम एहि घरमे नहि रहि सकैत छी, ' हम साफ-साफ कहि देलहुँ।

'हम ओकरा नहि छोड़ि सकैत छी आ अहाँकेँ जएबाक लेल सेहो नहि कहि सकैत छी। अहाँ स्वयं निर्णय करु अहाँके की करबाक अछि ।'

पाछू घूमिकऽ देखब हम नहि सिखने छलहुँ ई कहि हम घरसँ निकलि गेलहुँ।

अबेर राति घर पहुँचलहुँ पापा देखिकऽ आश्चर्यमे पड़ि गेलाह। हमरा पहुँचलाक किछुए देरक बाद दिअर पहुँचल रहथि। पापा हमरा बहुत सम्झओलैथि मुदा नहि जानि कि जिद्द हमरा भितर आबि गेल छल। हम दिअरसँ कहने छलहुँ, 'ओ घर नहि नरक अछि। विवाह होबए दिऔक अहाँ देखब एक दिन अहूँके कनियाँ सेहो घर छोड़िकऽ भागि जाएत ।'

अपमानक बिष पीबि दिअर घूरि गेल रहथि ।

पापा बादोमे सम्झओलथि मुदा हम जे रेखा बनओने छलहुँ ताहिसँ नहि बढ़लहुँ।

मुदा आइ ...... स्मरणक महासागरमे फेर बिहारि अएल अछि। सोचैत छी कोना एतेक बढियाँ, सिधा-साधा प्रेम करऽ बला घरबलाके छोड़ि देलहुँ हम ।

विवाहक बाद बिताएल एक-एक क्षण नहि बिसरि रहल छी। टिभीमे सिनेमा देखैत अरुण कहने रहैथि, 'अपना लड़का हएत तऽ ओकर नाम 'आदर्श' राखब ।

आ आइ कोनो दोसरकेँ आदर्श देखि हमरा इर्ष्या भऽ रहल अछि। बेर-बेर एहि आदर्शमे अरुणकेँ तकबाक कोशिशकऽ रहल छी ? पुरान होइत घरकेँ ध्वस्तकऽ देनाइए उचित अछि। ओहिपर कोनो मञ्जिला नहि बनाओल जा सकैत अछि ।

अचानक आगा आएल ओहे चेहरा देखि हम अपनाके सम्हारैत छी, 'की बात अछि आदर्श। '

'मैम अपनेक किताब। अपने क्लासेमे छोड़ि आएल छलहुँ।'

'आदर्श, अहाँक बाबु जीक नाम अरुण अछि ?'

'जी मैम, जिल्ला अदालत कञ्चनपुरमे न्यायधिश छथि ।'

ओकर आँखिमे जिज्ञासा झलैक रहल छल ।

हमरा आगाँ एक बेर फेर मान-अभिमानक सैकड़ो आदर्श थकुचा रहल छल । शायद हुनकर चटकनसँ पहिने हम हुनका सहजिकऽ रखने रहितहूँ तऽ की आइ हमर आगाँमे ककरो तस्वीर नहि झलकैत ? हम स्वंयसँ बेर-बेर प्रश्न कऽकऽ सेहो जबाब देबऽमे असमर्थ भऽ रहल छी ।

अपन बातक क्रम समाप्त कऽ नेहा घरसँ निकललथि कि हम केबार वन्द कऽ भितर आबि गेलहुँ । आँखिमे अतीत आ वर्तमान दुनू आकार लेबऽ लागल । हम शोफापर बैसि कऽ पुरान बात सभकेँ स्मरण करैत अपन संगीक खाली हाथक विषयमे सोचऽ लगलहुँ ।

किए नेहा संगक मित्रता हमर मायकेँ पसिन नहि छल । सुन्नरि, स्मार्ट, हरेक काजमे आगाँ, नेहा हमरा बहुत नीक लगैत छलीह । ओ हमरासँ एक क्लास आगाँ छलीह आ बाट एक्कहि होएबाक कारणे हम प्राय: संगहि स्कूल जाइत छलहुँ । तखन हमर कोशिस रहैत छल जे मायकेँ हमरा ओकरा संगक भेटके पता नहि चलए, मुदा कि जानि मायकेँ सभ बातक पता चलिए जाइत छल ।

नेहा स्कूलसँ क्याम्पस पहुँचली तऽ दोसरे साल हमरो नामांकन ओहि क्याम्पसमे भऽ गेल । क्याम्पसक भीड़मे नेहे हमर एक मात्र सहारा छलीह । एतऽ हुनकर प्रभाव स्कूलसँ बेसी छल । क्याम्पसक कोनो कार्यक्रम होइत छल हुनका विना अधुरा लगैत छल ।

लड़का सभक एकटा लम्बा लिष्ट छल, जे नेहाक दिवाना छल । ओहो लाज नइँ मानि हुनका सभ संग बातचित कऽ लैत छलीह । बातो कऽ लैत छली मुदा पीठक पाछा ओहि युवक सभके मजाको उड़बैत छलीह । क्याम्पससँ फिर्ता होइत समय एक दिन नेहा बतौलैन्हि, 'एखन वैचलर कऽ रहल छी । किछु बनऽमे समय लागत, कमाएमे किछु वर्ष लागत । हम तऽ कोनो एहन युवक संग विवाह करब जिनका बढ़ियाँ आम्दनी होइक ।'

तँए हम कोनो प्रेम-त्रेमक चक्करमे नहि पड़ब । हम हुनकर दुरदर्शी बात सूनिकऽ आश्चर्यचकित भऽ गेल रही । हम कनी लजकोटर स्वभावके छलहुँ । हम किताबी दुनियासँ बाहर किछु नइँ बुझैत छलहुँ आ नेहा हमर ठीक विपरित छलीह ।

इएह कारण छल जे हमरा हुनकर व्यक्तित्व दिस आकर्षित करैत छल । मोनमे भितर एकटा बात अवश्य अबैत छल हमहुँ हुनकेँ जकाँ बनि पबितहुँ मुदा माय किए ...?

संयोग बस हुनकर आकांक्षापर जे युवक खड़ा उतरल ओ हमरे सभक सम्बन्धी छल । माधव हमर दूरक सम्बन्धमे भाइ लगैत छल । माधव संग हुनक परिचय वीरगंज जाइतकाल बसमे भेल रहैन्हि । फेर कोना दोस्तीमे परिणत भऽ गेल पते नहि चलल । नेहाक बाबुक मान्यता अलग छल । नेहाक आकांक्षापर माधव भलेहि खड़ा उतरल होइक मुदा नेहाक बाबुकेँ ई बात स्वीकार नहि छल ।

एक साधारण परिवारमे अपन बेटीकेँ विवाह कऽदी ई किन्नहुँ वर्दास्त नहि छल । तँए गामे लग रहल एकटा अपने जातिक लड़का ताकि नेहाके विवाह कऽ देलकैन्हि । एहन वोल्ड लड़कीपर माय बापकेँ जोड़ चलैत अछि ई सोचि हमरो आश्चर्य लागल । मुदा ई साँच छल ।

नेहाक विवाहक किछुए दिनक बाद हमरो विवाह भऽ गेल । पहिल बेर नैहर एलाक बाद पता लागल जे नेहा नैहर आएल छथि ओहो सभ दिनक लेल । 'लड़का नपुंसक अछि', इएह बात नेहा सभकेँ कहने छलीह ।

ई साँच छल वा ओ अपन डिक्टेटर बाबुकेँ हुनकेँ शैलीमे जवाव देने छलीह, वएह जानैथ । बाबु अपन दाओ लगा कऽ हारि चूकल छलैथि । एहिबेर माय दवाव देलैन्हि नेहा फेरसँ एक बेर कनियाँ बनलीह आ एहि बेर 'वर' माधव छल । प्रेमक आखिर जीत भेल एक असम्भव सन लागऽवला बात सम्भव भऽ गेल । हमहुँ खुश छलहुँ । माधवक खुशी हमरो सभक खुशी छल ।

समय बितैत गेल आब विवाह सन अवसरिपर मात्र पारिवारिक भेटघाट होइत छल । एक दोसर पतिकेँ हमसभ पहिनेसँ जानैत छलहुँ आब आओर नजदिक भऽ गेल छलहुँ । एक बेर सोचैत छी मोन मोताविक भेलाक बादो लोक किए नहि सन्तुष्ट होइत अछि आ उच्च उड़ान उड़बाक क्रममे खसियो सकैत अछि । नेहा इएह बात नहि बूझि रहल छलीह । हुनका अपन महत्वकांक्षाक आगाँ सभ किछु छोट लगैत छल । माधव संग शिकायतक लिष्ट प्रत्येक भेटमे लम्बा भऽ रहल छल । ओ महत्वाकांक्षी नहि पार्टी, क्लबक सौखिन नहि ओ नेहाक लेल महग-महग उपहार नहि लबैत छला..... आओर नहि जानि की-की ....

आब हमहुँ पहिने जकाँ अबुझ नहि रहि गेल छलहुँ, दुनियाँदारी सिख चूकल छलहुँ आ हमरामे एतेक आत्मविश्वास आबि चूकल छल जे नेहाकेँ नीक-बेजाए आ गलत-सहीके पहिचान करा सकी ।

' देखू नेहा, हम बुझैत छी माधव बहुत महत्वाकांक्षी नहि छथि मुदा, अहाँकेँ खासे समस्या तऽ नहि करैत छथि । कतेक प्रेम करैत छथि । एहिसँ बड़का सौभाग्य आओर की भऽ सकैत अछि ? बताउ कते गोटेकेँ मोन जोगर घरबाला भेटैत अछि । तैयो अहाँकेँ शिकायत अछि, जखन कि बेसी महिला अनचिन्हार वा कही विवाहे दिन देखल युवक संग आजीवन संग दैत अछि ओहो बिना कोनो शिकायतके ।' हम ई नहि कहैत छी पुरुषक सभ अन्याय चुपचाप सहैत रही । मुदा जीवनमे सभके सम्झौता तऽ करहे पड़ैत छैक । यदि महिला घर-परिवारमे तऽ पुरुष अफिसमे, काजमे तऽ सम्झौता करबे करैत अछि ।'

'हमरा देखू, हमर घरबाला पैसाकेँ दाँतसँ पकड़िकऽ रखैत छथि । आब एहिपर कानू वा मन मनाली जे अनावश्यक खर्च करबाक आदति नहि छैन्हि, कोनो दुख-तकलिफ हएत तऽ ककरो आगाँ हाथ नहि पसारऽ पड़त । दोसर कन्जुस व्यक्तिमे खराब आदति जेना दारु-सिगरेटक लत पड़बाक भय नहि रहैत अछि । आब ई तऽ जाहि नजरिसँ देखू परिणाम ओहने भेटत ।'

' सम्झौता करब, कमीकेँ नजर अन्दाज करब ई सभ अहाँ सन कमजोर लोकक दर्शन अछि अनिमा, से अहीं करु...ई सम्झौता हमरा बसक बात नहि

अछि । हम जखन एहि संसारमे आएल छी तऽ ओकरा हम आनन्दसँ जीवऽ चाहैत छी । विवाहक मतलब ई तऽ नहि अछि जे नोकर बनल रही । ठीक छै, गल्ती भऽ गेल अछि हमरा चयनमे मुदा, ओकरा सुधारल तऽ जा सकैत अछि ।' 'हम अहाँ जकाँ परम्परावादी नहि छी आ, नहि होबऽ चाहैत छी माधवकेँ तऽ हम सबक सिखाकऽ रहब ।

माधबकेँ सबक सिखाबय लेल नेहा नयाँ तरिका खोजि लेलैन्हि । हुनका काजपर जाइते ओ अपन दोसर पुरुष मित्र संग भेटऽ चलि जाइत छली । हुनकर व्यक्तित्व एक चुम्बक जकाँ तऽ छलैन्हि, जकर आकर्षणमे कोनो पुरुष स्वयं खिचा कऽ चलि अबैत छल ।

नेहा आब माधवक स्वाभिमानकेँ, हुनकर पौरुषकेँ खुलेयाम चुनौती दऽ रहल छलीह । हुनका लगैत छल एहिसँ बढियाँ तलाक भऽ जाए कमसँ कम चयनसँ जीवऽ सकब ।

नेहाकेँ ई इच्छा पुरा सेहो भऽ गेल हुनका माधवसँ तलाक सेहो भऽ गेल । आब ओ अपन ४ वर्षीय बेटीकेँ छोड़ऽ लेल तैयार भऽ गेलीह, किएक कि एहि बीचमे ओ जानकीरामकेँ मोहजालमे फाँसि कऽ विवाहकऽ लेने छलीह ।

हम हुनकर नयाँ पति संग कहियो भेटल नहि छलहुँ आ नहि उत्सुकता छल । बस एतेक बुझैत छलहुँ ओ कोनो उच्च पदपर छथि आ प्राय: विदेश जाइत रहैत छथि ।

किछु दिनक बाद नेहा दोसर शहर चलि गेली । माधवकेँ देखि मोन दुखित होइत छल । एहि सम्बन्धकेँ टुटब माधवकेँ लेल एकटा कारवाइ नहि छल । ओ व्यक्तिकेँ ई घटना बड़का धक्का देने छल । ओ वैरागी जकाँ भऽ गेल छल । बहुत कमे लोकसँ भेट-घाट करैत छल । काजक बाद जे किछु समय भेटैत छल ओ अपन बेटीक संग बितबैत छल । लम्बा समयके बाद एक बेर फेर नेहासँ अचानक भेट भेल । एहि बीच हमहुँ सभ बहुत शहर घूमि इटहरी पहुँच गेल छलहुँ । भेल ई छल जे एकटा विवाहक रिसेप्शनमे सहभागी होवऽ जाहि होटलमे गेल छलहुँ ओही होटलके लौवीमे अचानक नेहा देखाइ देलीह । ओ हमरा देखिली आ तुरन्ते एक दोसरकेँ निकट पहुँच गेलहुँ । नेहा आब ४५केँ छु लेने छली । हुनका संग जे पुरुष छल ओ हुनका सँ बहुत बड़का छल । ओहि समय बेसी बातचित नहि भेल मुदा हुनका देखलाक बाद पुरनका बात सभ फेरसँ स्मरण होबऽ लागल । हम हुनका तुरन्ते अपना घर अएबाक आमन्त्रण कएलहुँ । आश्चर्य आबो हुनका प्रति अनुराग बनल छल । नेहा समयपर घर पहुँचली । हम भोजन पहिनहेसँ तैयार कऽ लेने छलहुँ । मजासँ बैसिकऽ बातचितकऽ सकी से सोच छल ।

हमर पहिले प्रश्नक उत्तर झटका देलक, प्रसंगकेँ आगाँ बढाबऽ लेल हम पुछलहुँ अपनेक जानकीरामजी केहन स्वभावके छथि ? हम काल्हिए पहिल बेर देखलहुँ । नेहाक चेहरा सुखाएल जकाँ लागल आ उदासी मुस्कान देखाइ देलक आ किछुए देरमे गाएब भऽ गेल । किछु देर ओ चुपचाप रहली फेर हमर उत्सुक देखि लटपटाइत बजली, ' ओ जानकीराम नहि छला । हम दुनू एक्कहि संग रहैत छी । जानकीराम सही व्यक्ति नहि छला । बहुत ऐयास व्यक्ति छला । अहाँ सोचि नहि सकैत छी हम कोन प्रकारक तनावसँ गुजरल छलहुँ । मोन होइत अछि आत्महत्याकऽ ली । एण्टी डिप्रेशनक दवाइ खाइत छी ।'

माधवकेँ संग कएल गेल पुरना व्यवहार बिसरि हुनकर हाथ पकरलहुँ । कएटा महिला संग जानकीरामके सम्बन्ध छल आ विवाहके ६/७ महिनाक बादेसँ ओ खुल्लम-खुल्ला अपने अफिसक एक महिला संग घुमऽ लगला । जहिया मोन लगैन्हि तहिया घर अबैथि, जहिया चाहैथि राति हुनकेँ संग बितबैथि एहि बातकेँ हम वर्दास्त नहिकऽ सकलहुँ ।

' अपने खूनल खधियामे खसल छी ।' कहऽ चाहि रहल छलहुँ मुदा हम कहि नहि सकलहुँ । हमरा हुनका संग हमदर्दी भऽ रहल छल । एकटा महिला होएबाक नाते वा पुरान दोस्तीकेँ नाते ? जे बुझी । 'फेर आब कतऽ रहैत छी ?' हम पुछलहुँ ।

' एकटा फ्लैट जानकीराम विवाहेके समयमे हमरा नामपरकऽ देने छल, ओहिमे रहैत छी । बाँकी रेडिमेड कपडाकेँ व्यवसाय करैत छी । ताकी ककरोपर निर्भर नहि होबऽ पड़ए ।

बच्चाकेँ बात भेल तऽ हम कहलहुँ दूटा बच्चा अछि एकटा मेडिकलमे आ दोसर सिए पढ़ि रहल अछि । बुझैत छलहुँ हुनको बेटीक विषयमे मुदा ओ कतेक बुझैत छलीह पता नहि अछि । ई सोचिकऽ हम किछु नहि बजलहुँ ।

ओ स्वयं कहली, ' हमर बेटीक विषयमे कहू, अहाँसँ बातचित होइत अछि की नहि ? हम तऽ कए बेर टेलिफोनसँ बातोचित करबाक प्रयास कएलहुँ मुदा ओ नहि कएलक ।' हुनकर चेहरा कानल सन

बुझाएल। हम हुनका दिस देखैत रहलहुँ मुदा खोजि नहि पएलहुँ जीवनसँ भरपुर, अपने शर्तपर जीवऽबाली नेहाकेँ।

'माथपर छत तऽ अछि मुदा सोचि सकैत छी, ओ घरमे असगरे रहब कतेक भयावह भऽ जाइत अछि ? लगैत अछि देवाल सभ एक संग खसि हमरा पीचबाक रणनीति बना रहल हो। साँझ होइते घरसँ निकलि जाइत छी।

कतहुँ, ककरो संग ...... हम अहाँकेँ पुरातन पन्थी कहैत छलहुँ, मजाक उड़बैत छलहुँ। मुदा अही अधिक समझदार निकलहुँ। जे अपन घरकेँ बनाकऽ रहलहुँ बच्चाकेँ सुरक्षात्मक माहौल देलहुँ। बच्चा अहुँकेँ लगमे नहि अछि मुदा तैयो ओ अहाँके अछि। पूर्णताक एहसास अछि अहाँकेँ, केहनो होइथ अहाँक पति अहाँक संग छथि, हुनकर सुरक्षात्मक कवच अछि अहाँक चारुदिस। हमरा केहन-केहन बात सुनऽ पड़ैत अछि। हमर पिसीक जमाए एक दिन हमरासँ कहलाह, 'कोनो बात नहि जानकीराम चलि गेला तऽ की हम तऽ छी ने।'

'हुनकर बातसँ बेसी हुनकर कहबाक ढंग, चेहराक भाव हमरा परेशान करैत रहैत अछि। मुदा तैयो चुप छी। मुँह खोलब तऽ पिसी आ हुनकर बेटी दुनूकेँ दुख पहुँचत, अपने कएल काजक सजा पाबि रहल छी .....

नेहाकेँ अपन गल्तीके एहसास होबऽ लागल छल मुदा, ठोकर खा कऽ, दोसरकेँ दुख दर्दक खियाल होबऽ लागल छल। मुदा आब बहुत देर भऽ गेल छल। हम हुनकर सहायता तऽ कि कऽ सकितहुँ, सान्त्वनाक शब्द सेहो नहि सोचि पाबि रहल छलहुँ। ओ बजलीह, 'अनिमा घर तऽ खाली अछि हमर मोन सेहो एक दम खाली अछि। लगैत अछि एकदम अन्हरिया राति आ हम सुनसान सड़कपर एसगर ठाढ़ छी .....खाली हाथ, आ इहो नहि बूझि रहल छी हमरा जएबाक कतऽ अछि !

हम बड़ीक काल धरि एहिना सोफा पर बैसल रहलहुँ।

रबिदिन दिनभरि ममता अपन पतिकेँ प्रतीक्षा करैत रहलीह। घरक मुख्य द्वारपर कनिको आहट होइत छल हुनक अनुहार स्वयं बाहर दिस उठि जाइत छल। एक बेर तऽ हुनका लागल जेना केओ गेटपर ठाढ़ होइक। आश भरल मोनसँ ओ गेट खोललीह। देखलैन्हि एकटा बिलारि गेटसँ भितर पैसबाक व्यर्थ प्रयास कऽ रहल छल, जकर कारण खट-खटकेँ आबाज आबि रहल छल। किछुए देरमे ओ निराश भऽ घूरि घरमे चलि अएलीह।

बितल बृहस्पतिदिन हुनकर पति बिराटनगर गेल छलाह। ओहि दिन अचानक हुनका अपन केन्द्रीय कार्यालयक महाप्रबन्धकसँ बिराटनगर जएबाक आदेश प्राप्त भेल छल। किछु गोपनीय कागज लऽकऽ साँझधरि ओतऽ पहुँचाबाक छलै। तँए ओ भोरे बस पकड़ि लेने छलैथि। ममताकेँ कहिकऽ गेल रहैथि एक-दू दिनक काज अछि शनिदिनधरि कोनो हालतमे जनकपुर चलि आएब।

शनिदिन साँझधरि ममताके बेसी मतलब नहि छल मुदा जखन रविदिन साँझधरि सेहो हुनकर पति घूरिकऽ नहि आएलैन्हि तऽ हुनका चिन्ता सताबऽ लागल छल । हुनका लागल जेना हुनका घरसँ गेला महिनो बित गेल हुअए, जखन अबेर रातिधरि नहि अएलैन्हि तऽ हुनकर मनमे खराब-खराब बात सभ

आबः लागल छल। ओ सुतबाक असफल प्रयास करः लगलीह। कखनो एक दिस करोट फेरैथि तः कखनो दोसर दिस , मुदा निन्न जेना कोसो दूर छल ।

'कतः रुकि सकैछथि ओ' , ममता सोचः लगलीह , 'कतहु गाड़ी नहि छूटि गेल हुअए ।' यदि गाडी छूटि गेल रहितै तः दोसर गाड़ी सेहो पकड़ि सकैत छलैथि । कालि्ह नहि आबि सकलैथि, आइ तः आएल रहितैथि ।

भः सकैत अछि हुनकर जेबी कटागेल हुअए आ संगमे पैसा नइँ होइक । एहनमे बहुत मोश्किल भः गेल होइक आ घुरबाक टिकट लेबः लेल हुनका बिकट समस्या भः गेल हएतैक ।

मुदा, दोसरे क्षण ममता ओकर समाधान खोजः लगलीह, एहनमे कतेको उपाय भः सकैत अछि जेना ओतः स्थित अपन कार्यालयक शाखा अधिकारीकेँ अपन समस्या बता कः पैसा उधार माँगि सकैत छलैथि । ओतःकेँ शाखा अधिकारी जनकपुरेसँ बदली भः कः गेल छथि आ हुनकर बढियाँ मित्र सेहो छथि । हँ हुनका हाथमे घड़ी सेहो बान्हल अछि ओकरा बेच सेहो सकैत छथि । नहि, हुनकर जेबी नहि कटल हएत । एखनधरि नहि अएबाक कारण कोनो दोसर हएत ।

भः सकैत अछि बस स्टैण्डपर हुनकर समान चोरी भः गेल हुअए । तखन तः ओ बडी समस्यामे फँसि गेल हएता । हुनकर बैगमे तः अफिसक बहुत महत्वपूर्ण कागज-पत्र छल । यदि एना भेल तः अनर्थ भः जाएत फेर तः हुनका नोकरीसँ निकालि देल जाएत । अपन नोकरी बचएबाक लेल अधिकारी सभक आगा कहुँ गिरगिराए नहि पैरैन्हि । केहन भयाबह स्थिति हएत ओ ?

ई सोचि कः ममताक आँखिक आगा कतेको प्रकारक भयानक दृश्य घुमः लागल ।

नोकरी छूटि गेल तः द्वारि-द्वारे भटकः नहि पड़ैन्हि । आइ कालि्ह जल्दी नोकरी कहाँ भेटैत अछि ? हरेक महिना भेटः बला महिनबारी बन्द भः जाएत, ओहि बिना कोना दिन चलत ? घरक भाड़ा कतःसँ देब । बच्चाक फिस, किताब, घरक अन्य खर्च कतःसँ चलाएब । सभ किछु कटा कः दू-तीन हजार रुपैया मात्र बचैत अछि बाद बाँकी सभ घरेमे खर्च भः जाइत अछि । मुदा यदि इहो पैसा भेटब बन्द भः जाएत तः कतयसँ करब सभ खर्च ?

यदि एहन स्थिति आबि गेल तः कोनो अन्य उपाय खोजहे पड़त .... हँ, अपन नैहरसँ किछु मदति लेबः सकै छी । आखिर ओहो सभ कतेक दिन हमर सहायता करत ? बाबुजी, माँ , भइया, भौजी आ हुनका सभक छोट-छोट बच्चा ..... हुनकर सेहो भड़ल-पूड़ल परिवार अछि । हुनका सभकेँ अपनो तः बहुत खर्च अछि । अन्ततोगत्वा हुनकेँ स्वयं किछु-किछु अपन आम्दनीक लेल उपाय खोजः पड़त ।

ममताकेँ एकटा उपाय सूझल, 'अपन बाबुजीसँ कहि सूनिकः कोनो छोटका-मोटका दोकान खोलबा लेब ।' कतेक कष्टदायक दिन हएत ओ, की हमरा दोसरक सहारापर जीबाक स्थिति तः नहि चलि आएत ?

ममता सोचैत-सोचैत एक बेर फेरसँ वर्तमानमे घूमि अएलीह । दुनू बच्चा ओछाएनपर हरेक बातसँ बेखबर निन्नमे सूति रहल छल । ओ पुन: सोचः लगलीह, ओ स्वयं एकटा बच्चा रहितैथि ।

बाहर अन्हार छल । दूरसँ कतहु कुकुर भुकबाक आबाज रातिक शान्तिकेँ चीरि रहल छल । ओ अनुमान लगाओलैन्हि रातिके १२ बाजि गेल अछि ओ माथके झटका दैत , हम तः नहि जानि की-की सोचः लगैत छी । बाहर जाएबला कोनो कारणसँ बेसी दिन सेहो रहि सकैत अछि ।

ममता अपन मनके समझाबैत कएलीह । दुश्चिन्ता हुनक पाछा नहि छोड़ि रहल छल । नहि चाहितो हुनका रंग-बिरंगक बात सभ मोनमे आबि रहल छल । 'नहि, हुनकर समान चोरी नहि भेल अछि । तः फेर एखनधरि घुरलाह किए नहि । कालि्ह तः हुनका अवश्य आबि जएबाक चाहियैन्हि आ तखन ममताके पतिपर रहि-रहिकः तामस आबः लागल, 'यदि बेसी दिन लागःबला छलै तः कमसँ कम अगल-बगलमे रहल टेलिफोनसँ सूचना तः दः सकैत छलाह ।' आबि जाउथ एकबेर खुब खबरि लेबैन्हि । अएता तः

केबारे नहि खोलबैन्हि । मुदा केबार तऽ खोलहे पड़त । हम हुनकासँ बाते नहि करब बरु ओहिके लेल ओ जतेक मनओता, खुब तंग करब । चाहोधरिकेँ लेल नहि पुछब, ओ बुझैत छथि की अपनाके ? पता नहि श्रीमान ओतऽ कोन गुलछर्रा उड़ा रहल हएताह । हुनका कि पता हएत एतय जे हुनकर चिन्तामे केओ दिन-राति परेशान अछि ।

किछुए क्षणमे हुनका कोनो अज्ञात भय घेर लेलक, कतहुँ ओ कोनो महिला-तहिलाके चक्करमे तऽ नहि पड़ि गेल छथि । आइ-काल्हि बड़का-बड़का शहरमे कतेको पेशेवर महिला नव-युवककेँ फँसाबऽके चक्करमे रहैत अछि । अवश्य अहिना भेल हएत । हुनका फँसाकऽ सभ किछु लूटि लेने हएत । मुदा एना नहि भऽ सकैत अछि, ओ असानीसँ ककरो चँगुलमे फँसऽ बला नहि छथि । अवश्य कोनो अन्य कारण हएत । ममताके मन-मस्तिष्कमे अजिब तर्क-वितर्क चालि रहल छल ।

एहन कोन कारण भऽ सकैत अछि जे ओ एखनधरि नहि घुरलाह अछि । कतहु कोनो दुर्घटना-तुर्घटना तऽ नहि भेल अछि ? नहि, नहि .... ममता एक बेर भितरधरि काँपि उठलीह ।

रिक्सासँ बस स्टैण्डधरि अबैत समय कोनो दुर्घटना ...... नहि , नहि ..... बस दुर्घटना भऽ गेल हएत, यदि चोट लागल हएत तऽ कोनो अस्पतालमे पड़ल कुहरि रहल हएताह .... नहि, नहि हुनका किछु नहि भेल हएतैन्हि ।

ममता मने-मन पतिके कुशलताक कामना करऽ लगलीह ।

यदि एहन दुर्घटना भेल रहितै तऽ पत्रिका, रेडियो वा टेलिभिजनपर खबर आबि जाइत ।

ममता ओछाएनपरसँ उठि अलमारीमेसँ बितल तीन-चारिदिनके समाचार-पत्र खोजिकऽ लऽ अनलीह । ओ पत्रिकाक पन्ना उल्टा-पल्टाकऽ एक-एकटा समाचार ताकऽ लगलीह । विराटनगरक कोनो दुर्घटनाक खबरि नहि छल ।

'ई कि उल्टा-सिधा सोचऽ लगलहुँ, कतेक मूर्ख छी हम,' ममता अपने-आपकेँ चिन्ताके भँवरसँ मुक्त करबाक कोशिस कएलीह । मुदा हुनकर व्याकुल मोन हुनका घेर-घाइरकऽ फेर ओतहि आनि लैत छल ।

हुनका लगैत छल जेना हुनकर पति अस्पतालमे पड़ल मृत्युक आगा ठाढ़ छैन्हि ।

ओतऽ तऽ हुनका देखोभाल करऽबला केओ नहि हएतैन्हि ।

बेहोशीके हालतिमे ओ अपन अता-पता सेहो नहि कहि पाएल हएता । कतहुँ ओ ओतहि दम तोड़ि नहि देने होइथ । नहि, नहि हुनकर बे-वारिश लाश....ई सोचिकऽ भितरधरि सिहरि उठली । हुनका बुझाएल हुनकर आँखि भिजगेल हुअए आ नोरक बुन्द हुनकर गालपर टघरि आएल हुअए । अपन नादानीपर सोचिकऽ हुनका हँसीओ आएल आ तामसो ।

ई हमरा की होइत जा रहल अछि ? जागलोमे केहन-केहन सपना देखि रहल छी । ममता कल्पनाक आँखिसँ देखि रहल छलीह, की किछु व्यक्ति हुनकर पतिक लाशकेँ गाडीपर लादि कऽ अनने अछि ? घरपर भीड़ जमा भऽ गेल अछि । चारु दिस लोक कानि रहल अछि । लोक हुनकासँ साहनुभूति दऽ रहल अछि । ओ एक बेर फेर ओ विचारकेँ अपन दुखी मोनसँ झटैक देबऽ चाहलीह मुदा, विचारक उड़ानपर ककर बस चलैत अछि ।

'हुनका मरलाक बाद हमरा की हएत ? हुनकर अभावमे ई पहाड़ सन जीवन कोना कटत,' ममताक विचारक श्रृंखला लम्बा भऽ रहल छल । ' नहि, नहि एना नहि भऽ सकैत अछि । एनामे दोसर विवाह .....नहि, नहि, ककरासँ विवाह करब ? एहि उमेरमेके पकड़त हमर हाथ ? की कोनो व्यक्ति हुनकर दुनू बच्चाकेँ अपनाबऽ लेल तैयार हएत ? के करत ओतेक त्याग ? हम एतेक बुढ़ तऽ नहि भऽ गेल छी जे केओ हमरा पसिन नहि करत ? २६ वर्ष उमेरे की होइत अछि ? दूटा बच्चाकेँ जन्म देलाक बादो हम सुन्दर आ जुआन लगिते छी । ओहि दिन मलंगवा वाली अण्टी कहि रहल छलीह, ' ममता

लगैत नहि अछि जे अहाँ दूटा बच्चाकेँ माय छी । यदि संगमे दूटा बच्चा आ माथमे सिन्दुर नहि रहैत तऽ केओ कहि नहि सकत अहाँ विवाहित छी ।'

फेर एकाएक ममताकेँ कमलजी स्मरण आबि गेल, कमल अविवाहित छथि । 'कतेको बेर हम कमलकेँ कनडेढ़िए आँखिसँ अपना दिस तकैत देखने छी । ओ सदिखन हमर बनाएल भोजनकेँ प्रशंसा करैत रहैत छथि ।' हमरा स्वयं सेहो कमल बहुत नीक लगैत छथि । कमल स्मार्ट छथि, सभ्य छथि । ओ घरपर अबैत जाइत रहैत छथि । हम ककरो माध्यमसँ हुनकर हृदयकेँ टोहऽकेँ प्रयास करब । यदि ओ माइन गेला तऽ हुनका संग हमर जीवन खुब सुखमय रहत । ओ हुनकासँ उच्च पदपर सेहो छथि । आय सेहो बढ़ियाँ होइत छैन्हि । हुनका लग दूमहला घर छैन्हि, गाड़ी किनबाक बात सेहो किछुए दिन पूर्वक रहल छलैथि । ओ अवश्य हमरासँ विवाह कऽ लेताह,' ममता अनायासे मोने-मोन स्वयंकेँ कमल संग जोड़ऽ लगलीह ।

'हम कमलक संग हनिमून मनाबऽ सेहो जाएब । ओ हमरा पोखरा लऽ जएताह । हम पोखरा कहियो गेलो नहि छी । कतेक बेर हुनका संग अनुरोधो कएने छलहुँ, कहियो पोखरा घुमाउ, मुदा ओ हरेक समय टालैत रहैत छलैथि, मुदा धीया-पुता ? ओकरा सभकेँ नाना नानी लग छोड़ि आएब ।'

कमलके संग प्रेम क्रीडा, हास-परिहास इत्यादी क्षणभरिमे ममता कतेको अनर्गल बात सोचऽ लगलीह ।

पोखराक काल्पनिक दृश्य, फोटोमे देखल ताल, नाउ इत्यादि बात सोचिकऽ हुनकर मोन रोमाञ्चित भऽ उठल ।

एका एक हुनकर तान्द्रा भंग भेल । बाहर गेटपर केओ खटखटा रहल छल । ममता कल्पनाक संसारसँ मुक्त भऽ एका-एक वास्तविक धरातलपर चलि अएलीह । अपन उट-पटाङ्ग विचारके स्मरणकऽ ग्लानीसँ भरि उठलीह, ' कतेक निम्न स्तरक विचार अछि हमर ? हम कतेक खसि गेल छी ? की एतबे पतिव्रता छी हम ? ' ममताकेँ लागल जेना एखने कोनो ओ भंयकर सपना देखने होइथ । बाहर केओ एखनो गेट खटखटा रहल छल । 'एतेक राति बीतल, के भऽ सकैत अछि ?' ममता सोचिते उठलीह आ गेट जोड़सँ खोललीह, देखलैन्हि हुनकर पति बैग हाथमे लेने आगा ठाढ़ मुस्किया रहल छलाह । ओ दौड़कऽ हुनकासँ लेपटा गेलीह । प्रशन्नताक कारण हुनकर आँखिसँ नोरक धारा बहऽ लागल ।

घरक कलवेलक घण्टी बाजल । हमर परम मित्र सोहन गेटपर चुपचाप भाव हीन मुद्रामे ठाढ़ छलाह संगमे हुनकर कनियाँ नीमा सेहो । हम आह्लादित होइत सोहनकेँ अपन हृदयसँ लगएलहुँ ।

ओ धड़फड़एलैथि । दम्माक रोगी जकाँ हकमऽ लगलैथि, 'श्रीनाथ हमरा छोड़ब नहि, अन्यथा खसि पड़ब ।'

हम घबराकऽ हुनका अपन बाँहिसँ पकड़ि लेलहु 'सोहन अहाँक मुँह सुखा किए गेल अछि ?'

'हिनका बोखार छैन्हि, तीन-चारि महिनासँ,' नीमा बाजि उठलीह ।

बहुत दुख भेल । 'भितर चलू ।' हम हुनका सहारा दैत कहलहुँ । मुदा ओ आगा नहि बढ़ि सकलैथि । ठाढ़े रहलाह । हुनका आँखिमे मजबुरीक भाव छलैकि आएल, 'श्रीनाथ, हम स्वयं चलियो नहि सकैत छी ।'

हम हुनका कोरामे उठा लेलहुँ आ ड्राइंगरुम दिस बढ़ि गेलहुँ ।

'ओमहर नइँ जाहिमे हमरा राखब, ओतऽ लऽ चलू । थाकि गेल छी, विश्राम करब ।'

हम हुनका अपन शयनकक्षाक बगलबला रुममे लऽगेलहुँ । 'श्रीनाथ, आब हम एकटा बोझ भऽ गेल छी ।' हुनकर आँखि बन्द छल । ओ लम्बा-लम्बा साँस लऽ रहल छलाह ।

'घबराउ नहि मित्र, सभ ठीक भऽ जाएत ।'

'आब किछु नहि भऽ सकत । डाक्टर जबाब दऽ देने अछि । नीमाक जिद् छल धरानमे देखएबाक तँए आबऽ पड़ल । हमर किडनी खराब भऽगेल अछि शायद ।'

'हम अहाँकेँ डाक्टर सरोज कोइरालासँ देखाएब । एहि रोगक विशेषज्ञ छथि । हुनकर बहुत नाम छैन्हि । मुर्दामे सेहो जान फूकि सकैत छथि । हम एखने नम्बर लगाबऽ जारहल छी । अबेर कएलासँ नम्बर नहि भेटत ।'

घरसँ प्रस्थान करऽसँ पूर्व हम अपन कनियाँसँ कहलहुँ 'ई हमर विशेष पाहुन छथि । स्वागत सत्कारमे कमी नहि हएबाक चाही ।'

'बूझल अछि, अपने निश्चिन्त रहू'ओ कहलीह ।

डाक्टर सरोज कोइरालाक क्लिनिकमे बहुत लम्बा लाइन छल मुदा पछिलका द्वारसँ जा कऽ अपन जोगाड़ कऽ लेलहुँ । घूमिकऽ अएलाक बाद हुनका सभकेँ लऽकऽ जल्दीसँ डाक्टर लग पहुँचलहुँ । तखन प्रारम्भ भेल हुनकर जाँचक चक्र ।

'हिनकर दुनू किडनी सड़ि गेल अछि ।'

'डाक्टर साहेब ई बदलल सेहो जा सकैए ।'

'भारतक भेल्लोरमे किडनीके प्रत्यारोपण होइत अछि ।' 'हम हिनकर इलाज ओतहि कराएब , अपने रेफर कऽ देल जाउ ।'

'बढियाँ बात अछि । तहियाधरि हिनका हमर लिखल दबाइ चला दियौ । एक हप्ताक कोर्ष अछि । प्रत्येक दिन एकटाकऽ सुइ । मुदा ध्यान राखब कोनो प्रशिक्षित कम्पाउण्डर सँ मात्र सुइया लगाएब । नशमे सुइ लागत एहि दवाइसँ बोखार उतरि जाएत तथा हिनका राहत महशुस हएत ।'

हम डाक्टर सरोज कोइरालाक क्लिनिक आगा रहल दवाइ दोकानसँ दवाइ किनलहुँ । तखन नीमा धीरेसँ हमरा कहलैन्हि, 'श्रीनाथ जी, दवाइ फिर्ताकऽ दियौ ।'

'....किए ?'

'एतऽसँ सीधा अपन गाम जाएब । हमरा सभकेँ एकटा गाड़ी रिजर्वकऽ दिय कनिक जीप टाइपक हएबाक चाही । उबर-खाबर गामक सड़कपर जीपे चलि सकैत अछि ।'

हम अकचका गेलहुँ । 'ई की कहि रहल छी ?' इलाज नहि करएबाक अछि की ?

'श्रीनाथजी अपनेकेँ कनी उटपटाङ्ग लागत, मुदा एखन अपनेकेँ सम्झाइयो नहि सकैत छी । हमरा लग एतेक समय नहि अछि । हिनका होश रहिते घरपर पहुँचब आवश्यक अछि । कतेको आवश्यक कागजपर हिनकर सही लेबाक अछि । पेन्सन कागजपर सेहो ।'

'नीमा आश्चर्यक बात करैत छी, अहाँ अपन स्वार्थमे आन्हर तऽ नहि भऽगेल छी ? किछु आओर कठोर बात कहबाक मोन भेल मुदा अपनाकेँ रोकि लेलहुँ । वा ई कही हुनकर पतिभक्ति आ निष्ठाक सम्बन्धमे एहिसँ पहिने कोनो दोष नहि देखने छलहुँ । सोहन हुनकर सभ दिन बराइए करैत रहैत छलाह । .....सम्भव अछि ..... किडनी सड़बाक बात सूनिकऽ घबरा गेल होइथ, तँए हम शान्त स्वरमे स्मरण करएलहुँ 'अहाँक गाममे प्रशिक्षित कम्पाउण्डर नहि हएत । ई सुइया ककरासँ लगाएब ?'

'एकटा कम्पाउण्डर सेहो ठीकक॑ दिअ जे सङे जाए, जे मागत ओ देल जएतै।' हुनकर स्वर बदलल-बदलल छल। आग्रह नहि, बरु टालमटोल बला।

हुनका प्रति हमरा विभिन्न शङ्का सभ होब॑ लागल मुदा बीच सड़कपर हुनकासँ झगड़ा करब हम नीक नहि बुझलहुँ तँए कनी धीरेसँ हम कहलहुँ 'सभ व्यवस्थाक॑ देब, मुदा एहिमे किछु समय लागत। अहाँ सभ तावरि हमर घर चलू। हम जल्दिए जीप आ कम्पाउण्डर ल॑क॑ अबैत छी।

अहाँ सभ ओतहि रहब।' हुनका सभकेँ सम्झएला बुझएलाक बाद ओ सभ हमर घर दिस विदा भेल आ हम चैनक साँस लेलहुँ मुदा स्वयं घर जाएबाक हिम्मत नहि जुटा पाबि रहल छलहुँ।

किछु देरक बाद घर पहुँचिते नीमा अपन घर जाएके बात कर॑ लगलीह। तखन हमरा वर्दास्त नहि भेल। तत्काल सोहनकेँ सुइ लगाएब हमर प्राथमिकतामे छल। सात दिनधरि हुनका कोनो हालतमे रोकि हम योजना बनाब॑ लगलहुँ। मोनमे विचारक बिहारि उठि रहल छल। ओ नीमाक रुप छल वा विरोधक उपाय ? एनामे हुनका भेल्लोर कोना ल॑ जा सकब ? एहि चिन्तामे किछु देर सोचैत रहलहुँ।

साँझ भ॑गेल तखन एकटा कम्पाउण्डर ल॑क॑ घर पहुँचलहुँ। सोहन आँखि मूनिक॑ ओछाएनपर पड़ल छलाह। हम घबराक॑ हुनका दिस बढ़लहुँ। हुनकर नाड़ी असमान्य गतिसँ चलि रहल छल। ओ वेहोशीक अवस्थामे छलाह। 'कम्पाउण्डर साहेब कनी जल्दी इन्जेक्शन लगाउ।'

'श्रीनाथ जी हम दवाइ फिर्ताक॑ देलहुँ अछि,' नीमा कहलीह।

'किए ? हम डपैटक॑ हुनकासँ पुछलहुँ।

ओ डरा गेलीह। 'इएह कहने छलाह।'ओ सोहन दिस इशारा करैत बजलीह। हमर टेम्प्रेचर बढ़ि गेल, 'ई अहाँसँ जहर मगता त॑ ओहो अहाँ द॑देबै ? छी।' हम जमीनपर थूकि देलहुँ।

ओत॑ हुनकर छाया छल। हम दौड़ैत फेरसँ सात दिनक लेल दबाइ किनक॑ ल॑ अनलहुँ। कम्पाउण्डर हुनका सुइ लगओलक। हम ओकरा पैसा द॑क॑ विदा कएलहुँ। किछु देरक बाद सोहनके आँखि खूजल। हमरा चिन्ह लेलाह, 'श्रीनाथ अहाँ कखन अएलहुँ। बहुत प्रतीक्षा करओलहुँ। हमरा जाएके व्यवस्था भ॑ गेल ?'

'बहुत निष्ठुर छी अहाँ। हमरासँ अपन मृत्यु मागि रहल छी। अरे हम अहाँके मित्र छी यमदूत नहि। हम अहाँक यमफाँसकेँ काटि देब। भेल्लोर ल॑ जाएब अहाँकेँ। ई हमर निवेदन अछि। एकरा अपने हमर हठ सेहो बूझि सकै छी।'

'एतेक रुपैया नहि अछि हमरा लग। सेवा निवृतिक बाद दूटा बेटीक बियाह कएलहुँ हम, से अहूँकेँ बूझल अछि। एहि बियाहमे हमर सब पैसा समाप्त भ॑ गेल आओर जे किछु बाँकी छल बिमारीमे लागि गेल।'

'पैसाक चिन्ता नहि करु। एकर उपाय अछि हमरा लग। एतेक रुपैया अछि हमरा लग।'

'आइधरि हम ककरोसँ कर्जा नहि लेने छी आ जाधरि जीव लेबो नइँ करब।'

'एकरा हमर सहयोग बुझू।'

'हम ककरो एहसान उधार नहि रखने छी आब उतारबाक सामर्थ्य नहि अछि, तँए नहि लेब,' सोहन दृढ स्वरमे कहलैन्हि।

नीमाक मुँहपर परम तृप्तिक भाव पसरि गेल, 'श्रीनाथजी अपने अनावश्यक रुपसँ हमरापर तमसा रहल छलहुँ अपने सेहो सम्झाक॑ बूझि गेलहुँ ने।'

हम हुनकर जवाब तमैकक॑ देलहुँ, कर्जा नहि, एहसान नहि, अहाँ अपन जमीनक किछु भाग बेच लिअ, अहाँके दू-चारि बिग्घा जमीन अछिए ओहिमेसँ किछु हटा दियौ।'

'एतेक जल्दी बढियाँ ग्राहक नहि भेटत, भेटबो करत तऽ सही दाम नहि देत। किनऽ बला हमर आवश्यकताके मजबुरी बूझिकऽ कम मोलमे किनऽ चाहत,' नीमा ठीक कहि रहल छथि।

हम हुनका बहुत सम्झाएलहुँ मुदा ओ नहि माललथि। तखन हुनकापर हम कसिकऽ बरसि गेलहुँ 'जीवनदायनी दवाइ किनबाक समय रुपैयाके मोह त्यागऽ पड़ैत छै। भाव मोलक समय बर्बाद नहि करबाक चाही। फेर अहाँ सभ एहि परिस्थितिके घुमा किए रहल छी। ई केहन पति भक्ति भेल अहाँके ? ई केहन निष्ठा ? महिला जातिक लेल अहाँ कलङ्क छी। अहाँकेँ मात्र अपनासँ मतलब अछि। पेन्सन पेपरपर सही लेबाक स्वार्थ।'

'श्रीनाथ, नीमाक अपमान नहि करीयौ ई सभ आरोप अछि, हमही कहने छलहुँ मृत्यु पूर्व कागज सभके ठीक करबऽ लेल। ई एक पति-परायण महिला छथि। ई हमरा खुब सेवा करैत छथि। हमरा हिनकासँ कोनो शिकायत नहि अछि, ' सोहन कड़ा प्रतिवाद कएलैन्हि।

ओ अपन इज्जत नुका रहल छलाह। ओ अपन आँखि खोलला मुदा हुनका सत्य नहि देखा रहल छल। अर्ध चेतनमे ओ सही आ गलतक आकलन सेहो नहि कऽ रहल छलाह।

'नीमा अहाँ अपन जमीनक मोल लगाउ अहाँक इच्छा अनुसार मोलपर हम जमीन किनब। हमरा लग बन्हकी सेहो राखि सकैत छी। सुविधा अनुसार रुपैया दऽकऽ छोड़ा सेहो सकैत छी।' मुदा नीमा चुप भऽ गेली। एना किए ? हमर प्रस्ताव सर्वथा स्वागत योग्य छल तैयो ओ कोन उलझनमे छथि। कतहु हुनकर सम्वेदना देखाबटी तऽ नहि अछि ?

अपन पति प्रति हुनकर निष्ठा कृत्रिम तऽ नहि अछि ?

'की अहाँक पति भक्ति एकटा ढोङ मात्र अछि ?'

'नहि श्रीनाथ ई नहि ..... अपन जमीन बिक्री होबऽ नहि देब। हमर कनियाँ आ धीया-पुता की खाएत ? इएह हिनका सभक लेल एक मात्र आधार रहि गेल अछि।' सोहन अपना कनियाँकेँ बचाब कएलैन्हि। अपन मुक्तिक मार्ग प्रशस्त करबाक लेल हुनकर युक्ति छल।

किछु होउक, मुदा हम उपचारसँ विमुख नहि होबऽ देब। तँए अन्तमे हम ब्रह्मास्त्रक प्रयोग कएलहुँ 'नीमा अहाँ लग किछु गहना अछि, ई बात हमरा बूझल अछि, एहिसँ पतिक इलाज कराउ ई अहाँक पति निष्ठाक अन्तिम परीक्षा अछि।' मुदा नीमा अपन गर्दैनि झुका लेलीह। हमरा दुख लागल। हम आश्चर्यमे छलहुँ। हम चुपचाप माता जानकीक प्रार्थना करऽ लगलहुँ हे माता ! हिनका सभकेँ सद्बुद्धि दिऔ।'

'श्रीनाथ हमर बात सुनऽ हमर स्थिर मन प्राणके अवाज सुनऽ भाइ। हमर सूर्य अस्त होबऽ बला अछि। हमरा एकर अभाष भऽ रहल अछि। हम विदेशमे शरीर त्यागऽ नहि चाहैत छी। हम भेल्लोर कोनो हालतमे नहि जाएब , ई हमर अन्तिम इच्छा अछि। घर जएबाक व्यवस्था कऽ दिअ मित्र।'

सोहन निराश भऽगेल छलाह। हुनका अपन चारु दिस अपन मृत्यु नजर आबि रहल छल। मृत्युक भयसँ डेराएल ई हुनकर वेदना छल। मुदा नीमा हुनका झुठोके सान्त्वना देवाक औपचारिकता नहि बुझलीह, ओ हुनकर मृत्यु गीतक कनिको विरोध नहि कएलैन्हि। आखिर किए ? किए ?? हम फेरसँ सक्रिय भेलहुँ 'ई अहाँके मात्र भावुकता अछि मित्र। जीवन आ मृत्युमे बहुत अन्तर होइत अछि जेना दिन आ रातिमे। जाधरि साँस ताधरि आश अछि बुझऽ पड़त। ई हमरा सभक कर्तव्य सेहो अछि। अहाँ सेहो एहिना करितहुँ। अहाँक स्थानपर यदि नीमा होइतथि तऽ अहाँ की करितहुँ ? हिनका अहाँ भेल्लोर नहि लऽ जएतहुँ।'

सोहन पुन: अपन आँखि बन्दकऽ लेलाह अपन मुँह सेहो बन्दकऽ लेलाह ओ फुठ नहि बाजि सकैत छलाह । सत्य सेहो स्वीकार नहि कऽ सकैत छलाह ओ। ओ मात्र रुसि सकैत छलाह, जिद् कऽ सकैत छलाह, जीवाक लेल किछु तऽ चाही, ओ नीमामे नहि छल हम हुनकर मोनक अर्थ बूझि गेल छलहुँ ।

नीमा स्वयं जीप गाडी रिजर्व कऽ अनलीह । संगमे कम्पाउण्डर नहि जाएत एकर व्यवस्था अपने लगक शहरसँ ओ कऽ लेतिह । हम भरि राति एहि बातकेँ लऽकऽ चिन्तित रहलहुँ । हमर मोनमे कोना-कोना भऽ रहल छल । भोरमे जखन हमरासँ विदा लेबऽ आएला तखन हम हुनकासँ पुछलहुँ 'इलाज नहि करएबाक छल तऽ एहि ठाम एलहुँ किए ?'

'नहि लबितहुँ तऽ गामक लोक हमरा धिक्कारैत तँए । घर-घरमे फुसुर-फुसुर होइत .... नीमा पतिकेँ बढियाँ इलाज नहि करओलैन्हि । जहियाधरि चलैत-फिरैत रहथि तहिया लगक शहरमे हिनका उपचार करबैत रहलियैन्हि, मुदा एहिपर केओ ध्यान नहि देलक । सोचैत छल हएत पेन्सन लेबऽ लेल जाइत । जीपपर लादिकऽ गामसँ हिनका लेलहुँ अछि तखन गामक बच्चा-बच्चा बूझि गेल, आब केओ हमर इमानपर आङुर नहि उठाओत ।'

हुनकर सम्वेदनशीलता पुरा-पुरा कुण्ठित भऽगेल छल । हुनकर कर्तव्य परायणता आ पतिनिष्ठा खोखला भऽगेल छल । ओ एक यांत्रिक महिला छलीह । अपन गामक लोकक अभिमतके लेल अपन पतिक इलाजक नाटक कएलैन्हि । हम जाइतो जाति व्यंङ्गवाण छोड़य सँ पाछू नहि रहलहुँ 'ड्राइभर साहेब साँफसँ पूर्वे प्रवेश करियह, कारण गामक लोक जल्दी सूति रहैत अछि । धीरेसँ गाडी चलबियह आ जोड़सँ लगातार हर्न बजबियह । कारण सभ लोककेँ पता चलि जाइक सती-सावित्री सत्यवाणकेँ ल कऽ चलि आएल छथि ।

तीन दिनक बाद सोहन स्वर्ग विदा भऽ गेलाह ।

कामनी मैडम काज समाप्त कएलाक बाद चश्मा उतारलीह । हुनका जाढ़क अनुभव भऽ रहल छल । आइ आठ बाजि गेल । साँफ रात्रीमे परिवर्तित भऽ गेल छल । चौकीदारकेँ आफिस बन्द करबाक आदेश दऽ ओ साल ओढ़लीह आ अपन रुम दिस बढ़ि गेलीह । कामनी मैडमकेँ एतऽ अएला एक हप्ता मात्र भेल अछि ।

एकटा सरकारी विद्यालयक प्रधानाध्यपक पदसँ अवकाश प्राप्त मैडम अपन घर जाए चाहैत छलीह । मुदा मारवाड़ी सेवा समितिक अध्यक्ष रामरतन शर्माजी हुनका महिला सदन होस्टलके जिम्मेवारी स्वीकारबाक लेल बाध्य कऽ देलैन्हि । महिला सदनकेँ मारवाड़ी सेवा समिति चला रहल अछि ।

चारि हजार विद्यार्थीक प्रधानाध्यापक लेल ई सदन छोट छल । शर्माजी एहि सदनके लेल कोनो अनुभवी व्यक्ति ताकि रहल छलाह । तँए कामनी मैडमसँ ई पदभार ग्रहण करबाक आग्रह कएलैन्हि, जकरा मैडम अस्वीकार नहिकऽ सक्लीह । एतऽ पचास महिला, भोजन बनाबऽ बला तीन गोटे भनसिया आ किछु कार्यालयक कर्मचारी छल । एतऽ रहऽ बला कुल ५७ सदस्य छल ।

सदनके नियमानुसार ९ बजे प्रार्थनाक लेल सभ सदस्य सभाहलमे उपस्थित होइत छल । तँए मैडम महिलासभकेँ चिन्हऽ लागल छलीह । एहिमे किछु विवाहित सेहो छल । केओ सरकारी कर्मचारी, केओ बिमा कम्पनी, केओ शिक्षिका, केओ एनजीओकर्मी तऽ किछु इन्जिनियर सेहो छल ।

हरेक दिन अपन काजक हिसाबसँ ओ सभ जाइत छल मुदा साँझ आठ बजेधरि कोनो हालतमे घूरि जाएकेँ नियम छल । ओना मार्केटिङ्ग वा एनजीओमे काज करऽबलाके राति ९ बजेधरिके लेल छुट छल । आवश्यकता पड़लापर ओ राति १० बजेधरि बाहर रहि सकैत छल मुदा एहिके लेल मैडमकेँ पहिले सूचित करबाक नियम छल ।

आत्मविश्वास आ बुद्धिमतासँ काज करऽबला उच्च शिक्षित महिलाकेँ देखिकऽ मैडम स्त्रीक बदलैत प्रतिभापर बहुत प्रशन्न होइत छलीह । असगर रहैत अबलाकेँ सबला बनैत देखि हुनका नीक लगैत छल । ओ एतऽ एक वर्षक लेल अनुबन्धित छलीह । सदनमे अलग-अलग वर्ग छल । एटैच बाथरुम बला रुम, तीन बेड बला रुम आ फेर चारि बेड बला रुम । चारि बेड बला रुमक लेल बाथरुम बाहर छल । मैडमक प्रभावसँ एक्के हप्ता भितर होस्टलमे सफाइ तथा अन्य कार्य नियमपूर्वक होबऽ लागल ।

एतऽ रहऽबाली लड़की नेपालक सभ ठामक छल । किछु मैथिल, किछु वीरगञ्ज दिसक, किछु पहाड़क तऽ किछु हुम्ला, जुम्ला दिसक लोक सेहो छल । एहि लड़कीमे एकटा श्याम रंगक, जे मौनताक चद्दरि ओढ़ने, ओकर व्यक्तित्व अलग छल । पातर-छितर युवती । बड़का-बड़का आँखि एक्के बेरमे सभकेँ अपना दिस आकर्षितकऽ लैत छल । ओकर भोला चेहरामे तऽ गजबके हाव-भाव अबैत जाइत छल । आँखिमे डेराएल सन देखाइत छल । कोनो बनाबटी श्रृंगार नहि । ओ पाउडर, काजर, टिकुलीधरि नहि लगबैत छल ।

समान्यतया एतऽके लड़की आत्मनिर्भर भेलाक कारण अपन रुप सज्जापर विशेष ध्यान दैत छल । काटल केश, मीलल भँओ, नीपल-पोतल चेहरा, फैशनेबुल कपड़ा । कमाउ सभ छल तँए बनिठनिकऽ रहैत छल । एहनमे भोजपुरी भाषी ओ लड़कीक सादगी उभरिकऽ देखाइ देबऽ लगैत छल । हलका रंग बला सलवार-कुर्ता पहिरने, नहि आइरन, नहि किछु ।

रातिमे टिभी देखैत लड़कीक अवाज, हल्ला वा हँस्सीसँ सभागृह गुञ्जित होइत रहैत छल । मुदा ओ लड़की कोनो कोणमे ठेहुनपर दाढ़ी अड़काकऽ आ दुनू हाथसँ पएरकेँ घेरने नहि जानि कतऽ देखैत रहैत छल । टिभी दिस प्राय: ओकर ध्याने नहि रहैत छल । अपने संसारमे ध्यानमग्न अपने विचारमे हेराएल रहैत छल । ओकर आँखिमे देखऽबला उदासी मैडमकेँ बेर-बेर चिन्तित करैत रहैत छल । ओकरा कोन बिपत्ति पड़ल छैक मैडमकेँ ई बात डङ्क मारैत रहैत छल ।

बेरियामे सदन खाली रहैत छल । एक दिन बेरियामे मैडमक कानमे गीतक एकटा सुन्दर स्वर सुनाइ पड़ल । ओ स्वंयकेँ नहि रोकि सकलैथि । शीघ्रतासँ ओ स्वरकेँ पाछू ओहि रुम तक गेलीह जतऽ भोजपुरी भाषामे गीत गाबि रहल छल । देवालमे ओत लगओने गीतमे निमग्न बन्द आँखिसँ नोरक वर्षा भऽ रहल छल । दर्दमे डूबल स्वर गुञ्जित भऽ रहल छल ।

रुमक बाहरसँ मैडम किछु देर गीत सुनैत रहलीह । एकाग्रता भंग करब ठीक नहि बूझि मैडम ओतयसँ घूरि एलीह । बेर-बेर ओ इएह प्रश्नक उत्तर ताकि रहल छलीह, आखिर ओकरा कोन दुख अछि । किए ओ एतेक उदास रहैत अछि ?

दोसर दिन मैडम ओहि रुमसँ झगड़ाक आवाज सुनलैन्हि । रुमक अन्य लड़कीसँ ओकरा उकटा-पैची भऽ गेल छल । तँए हेतु ई लड़की चिचिया-चिचियाकऽ गाढ़ि पढ़ि रहल छल । ओकरा कोनो होश नहि छल, कि बाजि रहल छल ।

मैडम शीघ्र ओतः पहुँचलीह आ ओकरा देखिते बूझि गेलीह जे ओकर मानसिक अवस्था ठीक नहि अछि। ओकरा ने अपन कपड़ाक होश छल आ ने बूझि पाबि रहल छल जे ओ कि बाजि रहल अछि। चढ़ल आँखि ओकर अस्वस्थताक बखानकऽ रहल छल। ओ भोजपुरी, मैथिली आ नेपाली भाषाक मिश्रणमे किछु बरबरा रहल छल। मैडम ओकरा निन्नक गोली आ दूध दऽकऽ जबरदस्ती सुता देलीह।

ओकर नाम चमेली छल। मैडमकेँ आब ओकर चिन्ता होबऽ लागल। एखनधरि चमेलीके प्रति हुनकर जे उत्सुकता छल से आब परेशानीमे बदलि गेल छल। आब ओ सोचऽ लगलीह जे कोनो प्रकारे चमेलीकेँ बातचितक लेल तैयार कएल जाए। ओकर मोनमे विश्वास बढ़ाओल जाए। मैडम सोचैत छलीह जे कहुना ओ खुलिकऽ अपन बात कहि मोनक बोझ हल्लुक करए। मुदा एहिमे कोनो शक नहि छल जे ई लड़की बहुत बड़का दुर्घटना मोनमे दबओने अछि वा कोनो एहन कारण अछि जाहिसँ ओ कुण्ठाग्रस्त अछि।

चमेलीक विषयमे मैडम एक प्रकारसँ अनुसन्धान शुरु कएलैन्हि। होस्टलक आफिसक रजिष्टरपर ओकर पूरा नाम-पता नहि छल।

चमेली कम्प्युटर टाइपिङ्गकऽ किछु पैसा कमइत छल। समान्यतया होस्टलक लड़कीकेँ ओकरासँ शिकायत रहैत छल। ओ बेसी समय चुप रहैत छल, ककरोसँ ओकरा कोनो सरोकार नहि रहैत छल। मुदा कहियो-कहियो छोटको बातपर लड़ि जाइत छल। गाड़ि पढ़ैत कोनो दिन स्वयं चिरचिराकऽ बरबराए लगैत छल। दोसर लड़कीसँ दूर नहि झगड़ा लगाबएबला बात वा नहि हँस्सी-मजाक सभसँ दूर रहैत छल। ओकरा कोनो ने कोनो समस्या अवश्य अछि।

मैडम ओकरासँ बात करबाक कोशिसक क्रममे कोने ने कोनो बहन्ना बना एक-दू बेर अपना रुममे बजओलैन्हि। मुदा चमेली कोनो सन्तोषजनक उत्तर नहि देलक ओ मात्र हँ वा नहिमे जबाब दऽ दैक।

किछु दिनक बाद चमेलीक रुमक एकटा लड़की आबिकऽ बाजल, 'चमेलीकेँ बहुत बोखार अछि।'

मैडम तुरन्त ओकर रुममे गेलीह। बोखारसँ तड़पैत चमेली ओछाएनपर पड़ल छल। मैडम ओकर माथपर हाथ रखलैन्हि। माथ पूरे दहैकि रहल छल। ओकरा तुरन्त दवाइ पिअओलैन्हि। बोखार कम करबाक लेल मैडम ओकर माथ लग बैसिकऽ ठण्ढा पानिक पट्टि देबऽ लगलीह। बोखारसँ चमेलीक बेहोशी जेहन अवस्था छल। ओ बरबरा रहल छल, 'मम्मीके घर जाएब' घर जाएब, अपन घर जाएब।

ओकर बात सूनिकऽ मैडमके हृदय कानि उठल। बेचारी असगरे अछि। एकरा घरो अछि कि नहि, घर जाए चाहैत अछि, माए बाबुके स्मरणकऽ रहल अछि। बेहोशीक अवस्थामे हृदयक बात मुँहसँ निकलि रहल छल। एकर घर तऽ अछिए नहि, कि एहिसँ पहिने एकर माता पिता कतौ बाहर छल वा ई एकर सपना अछि? मैडम किछु बूझि नहि पाबि रहल छलीह।

भोरमे बोखार कम छल मुदा चमेली बहुत कमजोर भऽ गेल छल। मुँह सुखा गेल छलै। आँखि धँसि गेल छलै। बाथरुमधरि जएबाक शक्ति ओकरामे नहि छलै। मैडम ओकर शारिरीक आ मानसिक अवस्था देखि सही इलाज कराएब अपन दायित्व बुझलैन्हि। हुनका साह डाक्टर दम्पति स्मरण अएलैन्हि।

नोकरीसँ अवकाश पओलाक बाद ई दम्पति अपन नर्सिङ्ग होम खोलि लेने छल। डाक्टर पति पत्नी दुनू मैडमके मित्र छल। ओ सभ मैडमकेँ बहुत सम्मान करैत छल। चमेलीक उपचार डाक्टर सोनिया साह बढियाँ जकाँ कऽ सकत एकर पूर्ण विश्वास मैडमकेँ छल। मैडम डाक्टर सोनियाके चमेलीक विषयमे टेलिफोनपर कहलैन्हि आ चमेलीकेँ लऽकऽ नर्सिङ्ग होम पहुँचलीह।

चमेली कमजोरी आ बोखारक थकानक कारण बेहोशी सन हालमे छल। डाक्टर ओकरा ठीकसँ जाँच कएलैन्हि। नर्सक सहयोगसँ ओकरा कपड़ा बदलाओल गेल । दवाइ आ इन्जेक्शन देलाक बाद आश्वस्त भऽ डाक्टर सोनिया मैडम लग आबि बजलीह, 'घबराएके कोनो आवश्यकता नहि अछि, कमजोरी बहुत

अछि दू-तीन दिनमे ठीक भऽ जाएत, हम ओकरा एडमिटकऽ लेलहुँ अछि ।' कनि रुकिकऽ डाक्टर सोनिया फेर बजलीह, 'ओकरा गर्भपात कएल गेल अछि । एखनधरि ओ किछु कहबाक अवस्थामे नहि अछि । अपने जे कहलहुँ अछि ओकरा देखिते मानसिक शान्तिक लेल आवश्यक दवाइ शुरुकऽ देने छी । स्वस्थ्य भेलाक बादे ओकरासँ बात करब बढ़ियाँ हएत ।' मैडमके कनी सोचमे पड़ैत सन देखलाक बाद ओ कहलीह, 'अपने मैडम चिन्ता नहि करु हम टेलिफोनपर खबरि दैत रहब, अपने तीन दिनक बाद आउ आशा अछि ओ स्वस्थ्य भऽ जाएत । हमसभ एकरा बढ़ियाँ जकाँ ध्यान देब ।'

चमेलीकेँ अस्पतालमे छोड़िकऽ मैडम होस्टल चलि अएलीह ।

लड़की सभकेँ कहलैन्हि जे चमेलीकेँ बोखार अछि । अत अस्पतालमे भर्ती करा देल गेल अछि चिन्ताक कोनो बात नहि, तीन-चारि दिनक बाद ओकरा आनि लेब । एतेक कहिकऽ मैडम अपना रुममे चलि गेलीह । मुदा मैडमक मोनमे उथल-पुथल मचले रहल । चमेलीकेँ लऽकऽ अनेक विचार मस्तिष्कमे घूमि रहल छल । हुनका स्वयंपर विश्वास छल । अनुभवी नजरिसँ ओहि व्यक्तिकेँ परख सही छल वा कम उमेरबला चमेलीकेँ बुझऽमे तऽ नहि गल्ती भऽ गेल छलैन्हि ?

चमेली खराब, बदचलन, झूठ अछि ई मानऽके लेल हुनकर मोन तैयार नहि छल । अनेक सम्भावना छल जे शायद केओ एकरा असगरे रहलाक कारण फाइदा उठा लेने हो वा काज देबाक लालच दऽकऽ एकर इज्जति लूटि लेने हुअए ।

मैडम सोचि रहल छलीह, ' चमेली बदचलन तऽ नहि अछि, कारण ओकरा लग ने पैसा आ ने कपड़ा, गहना । एक दू-टा सलवार-कुर्ती अछि ओकरा भेटबाक लेल केओ अएबो नहि करैत अछि । नहि कोनो चिठ्ठी, नहि कोनो फोन ।' तीन दिनक बाद चमेलीक विचारमे ओझराएल मैडम दैनिक काम-काज समाप्तकऽ अस्पताल पहुँचलीह । बेरीयाधरि डाक्टर सोनिया व्यस्ततासँ मुक्त भऽ जाइत छथि । मैडम चमेलीक रुममे पहुँचलीह, ओ ओछाएनपर सूतल छल । ओकर मुँहपर आभा चलि आएल छल ।

शान्त, असहाय चमेलीकेँ देखिकऽ मैडमके हृदयमे ममत्व चलि आएल छल । ओ चमेलीके माथपर स्नेहसँ हाथ रखलैन्हि, तखने चमेली आँखि खोललक । मैडमके दुनू हाथ कसिकऽ पकड़ि बाजल,' मैडम हमरा गलत नहि बुझू । हम खराब नहि छी । हमरापर विश्वास करु हम कोनो गलत काज नहि कएने छी । रितेश चाहैत छलाह बच्चाकेँ पालन-पोषण बढ़ियाँ जकाँ होइक । हमरा सभ जकाँ तकलिफ ओकरा नहि होइक । आर्थिक अस्थिरता आ माए बापक प्रेम, वात्सल्य भेटैक सही माहौलमे बच्चाकेँ बढ़ियाँ जकाँ देखभाल होएबाक चाही ....' बहुत मुश्किलसँ एतेक कहि स्वयंकेँ सम्हारऽमे असमर्थ चमेली हिचुकि-हिचुकिकऽ कानऽ लगल ।

मैडम ओकर पीठ थप-थपओलैन्हि तऽ स्नेहिल स्पर्श पाबिकऽ चमेली किछु शान्त भेल ।

ओ बहुत किछु बाजऽ चाहैत छल । डाक्टर ओकरा किछु देर शान्त भऽ बैसबाक लेल कहलक । ओकरा चाह पिबाक लेल देलक, एकर बाद चमेली दिस तकैत कहलैन्हि, 'देखू एहि बातकेँ बढ़ियाँ जकाँ बूझि लिअ हम सभ अहाँके शुभ चिन्तक छी । बिना किछु नुकओने सभ किछु कहि देब यथा सम्भव हम सभ अहाँकेँ सहयोग करब ।'

डाक्टरक ई शब्द चमेलीकेँ किछु कहबाक हौशला बढ़ओलक । ओ बाजल, 'मैडम हमही अहाँके सभ बात कहऽबला छलहुँ । अहाँ आ डाक्टर दिदी के छी हमरा बुझऽमे नहि आबि रहल अछि, अहाँ सभ हमरा बचएलहुँ अछि । मैडम अहाँ हमरा होस्टलसँ नहि निकालब हम प्रार्थना करैत छी, हम ओहिठाम बढ़ियाँ जकाँ रहब । ककरो तकलिफ नहि देब ।

चमेली जे अपना विषयमे कहलक से सूनि मैडम आश्चर्य चकित छलीह । एहनो लोक होइत अछि । एतेक निष्ठुर, पत्थरक हृदयबला ।

बराबर देखऽमे अबैत अछि जे कुकुर-बिलाइयक बच्चा घरक सदस्य बनि जाइत अछि। पालतु जानवरसँ सेहो हम सभ जुड़ि जाइत छी। अगल-बगलकेँ बच्चा सेहो नीक लगाऽ लगैत अछि। एका-एक पालतु कुकुर-बिलाइकेँ छोड़ि देबाक कल्पना असम्भव लगैत अछि। फेर एतऽ तऽ घरमे पलल एक दशकसँ नित्य संग होइतो एहि लड़कीकेँ छोड़ि देब सोचिकऽ मैडम सिहरि उठलीह।

ओ केहन माँ अछि वा माँ संज्ञा सेहे ओकरा लेल अनुचित अछि। की महिलाक एतेक स्वार्थीरुप सेहो भऽ सकैत अछि ? जाहि बच्चाकेँ पोसपुते किए नहि बनओने हुए मुदा अपन पुत्री तऽ मानने छल, अपन नाम तऽ देने छल, पाइल-पोसिकऽ पढ़ओने छल। ओहि बेटीकेँ बस स्टेण्डपर निर्ममतासँ छोड़ि देलक मैडम किछु देर सोचिते रहलीह।

चमेली वीरगञ्जके सम्पन्न यादव परिवारमे पलल-बढ़ल छल। जतऽ ओ सामान्य आ सुरक्षित सहज बाल्यावस्था व्यतित कएने छल। भड़ल-पूड़ल परिवारक कौशिल्याकेँ बच्चा नहि होइत छल। बच्चा होएबाक कोनो सम्भावना नहि देखलाक बाद कौशिल्या अनाथाश्रमसँ दू वर्षक बच्चाकेँ अनने छलीह। ओहि बच्चाक नाम चमेली राखल गेल। अपन पितियौत भाइ-बहिनक संग चमेली बड़का भेल। प्रेम, संरक्षण आ संस्कार ओ पाबि रहल छल। परिवारक अन्य बच्चा जेकाँ एकरो लेल हरेक प्रकारक प्रवन्ध छल । ओ बुझैत छल जे ओकरा गोद लेल गेल अछि। मुदा एहि बातकेँ नहि कहियो नुकाएल गेल आ नहि कहियो उच्चारण कएल गेल।

एकटा लम्बा समय बित गेल। चमेली एक-एक सिढ़ी चढ़ैत यौवना अवस्थामे पहुँच रहल छल। बुद्धिमान चमेली दसमे पढ़ैत छल। आश्चर्यजनक रुपमे कौशिल्या ढलैत उमेरमे गर्भवती भऽ गेलीह, हुनका मातृत्वक आहट भेल। घरमे सभ खुशी छल। चमेली सहित सभ आँखि पथने छल। चमेली आ ओकर पापाकेँ खुशीके ठेकान नहि छल। समयपर कौशिल्या पुत्रकेँ जन्म देलीह। शायद एतहिसँ चमेलीके खराब दिन शुरु भेल। अपन कोखिसँ जनमल पुत्रकेँ पाबि कौशिल्या धन्य छलीह। ओ जोड़ल सम्बन्धकेँ तोड़बाक निर्णय कएलीह।

एक दिन चमेलीके पापा कहलैन्हि जे चमेलीकेँ मुन्सीजीके सङे गाम जएबाक अछि मुदा, चमेली बूझि नहि पाबि रहल छल जे पढाइयक समयमे किए ओकरा पठाओल जारहल अछि। मुंसीजी तऽ हरेक समय कामकाजसँ घुमैत रहैत छलाह। गर्मी वा दुर्गा पूजाक छुट्टीमे बच्चाक मामा वा मौसी लग पहुँचबैत छलाह। मुदा असगरे मुंसीजीके संग जाएब चमेलीकेँ किछु जमि नहि रहल छल। ओकरा अस्वीकार कएलाक बाद मम्मी बहुत सम्झओने छल की दू-तीन दिनक बात अछि गाम जाएब जरुरी अछि। छोटका बेगमे दू-चारिटा कपड़ा राखिकऽ चमेलीकेँ बिदा कऽ देल गेल।

घरक सभ बच्चा मुंसीजीके कोरामे पलल-बढ़ल छल। तँए चमेली हुनका संग बिदा भऽगेल। ई यात्रा चमेलीक जीवनके धार बदलि देत ओकरा कि पता छल।

मध्य रातिमे चमेली सूतल छल। तखने मुंसीजी ओकरा जगओलक। कोनो बस स्टैण्ड चलि आएल छल। जतऽ ततऽ लोक सूतल छल। बस स्टैण्डक एकटा कोन्हपर खाली बेन्चपर मुंसीजी सुतऽ लेल कहलैन्हि आ ओकर माथ लग बसि रहलाह। दू घण्टाक बाद बस आएत से बिना कोनो आशंकाके चमेली सूति रहल। तखने मुंसीजी चुपचाप ओतऽसँ निकलि गेलैथि।

बहुत समय बित गेल। माथ लग ठकठकके आबाज सूनिकऽ चमेली जल्दीसँ उठल, रौद आबि गेल छल। किछु देरक लेल चमेलीकेँ किछु बुझऽमे नहि आबि रहल छल कि ओ कतऽ अछि। पुलिस किछु कहि रहल छल, लोक जम्मा भऽ रहल छल। पुलिस किछु गरैज रहल छल। चिचियाकऽ किछु पूछि रहल छल। मुदा ओकर भाषा चमेलीकेँ बुझऽमे नहि आबि रहल छल। मुंसीजीके कोनो अता-पता नहि छल।

चमेली लग नहि पैसा छल आ नहि किछु। ओहि ठाम रहल पुलिस मुंसीजीकें किछु देर खोजलक आ जखन नहि भेटल तऽ चमेलीकें अनाथ आश्रममे पठा देलक ।

अनाथ आश्रममे चमेलीक हालत बहुत खराब छल । ओतऽके भाषा, वातावरण, भोजन सभमे बहुत अन्तर छल । ओ बूझि रहल छल जे कोनो दुर्घटनाक कारण मुंसीजी ओकरासँ अलग भऽ गेल अछि । पापा ओकरा लेबाक लेल तुरन्त एताह । घरपर सभ परेशान हएत । कानि-कानि कऽ बिताएल दिन निराशाक अन्हारकें आओर घनघोरकऽ रहल छल । एतऽके काम करऽ वाली, रहऽ वला सभ मूर्ख आ गन्दामे रहबाक आदी छल । खुब गारि बाजि रहल छल । लड़की सभकें पिटब समान्य बात छल ।

चमेली भयभित छल ककरो ओकरासँ सहानुभूति नहि छल ।

व्यवस्थापिकासँ चमेली किछु पुछैत छल तऽ कोनो ध्यान नहि दैत छल, उल्टे चमेलिएकें डाँटि दैत छल । ओ सभ कहैत छल, 'कथिलए कनैत छैं, जीवनभरि कनिते रहबें, तोरासँ भेटऽ केओ नहि एतहु, तोरा अपना लग राखबाक रहितहु तऽ छोडितहुँ किए ?'

चमेलीकें एक-एक क्षण ओतऽ रहब मुश्किल भऽ रहल छल । मुदा समय ककरो लेल रुकैत नहि अछि । एक-एक दिन बित रहल छल चमेली हताश, निराश आ उदाश छल । अनाथ आश्रमक भोजन ओकर कण्ठमे नहि ससरि रहल छल । घरपर ओकरा अँचार, चटनी, तरकारी, माछ, माउस आ स्वादिष्ट भोजनसँ भड़ल थारी भेटैत छल । रसगुल्ला बिना ओकर भोजने पुरा नहि होइत छल । आश्रममे मोट-मोट काँच-पाकल दूटा रोटी, बिना स्वादक दालि वा तरकारी आ हप्तामे दू दिन एक बाटी भात भेटैत छल ।

ओतऽ रहऽ वला लड़की सभ ओकरा बहुत समझबैत छल । अपन भात चुपचाप चमेलीकें देबाके कोशिस करैत छल । उएह लड़कीसभसँ ओकरा किछु सहानुभूति भेटैत छल ।

आश्रमके नियम अनुसार चमेलीकें विद्यालयमे नामांकन कराओल गेल । नेपाली माध्यमसँ ओकरा किछु बुझऽमे नहि आबि रहल छल ।

कोनो तरहें एस.एल.सी. पास कराओल गेल ।

आब चमेली परिस्थितिसँ सम्झौता करऽ चाहलक । मुदा अनाथ आश्रमक नियम अनुसार १८ वर्षक उमेर पुरा होइते अनाथ आश्रममे रहबाक अनुमति नहि अछि ।

एहि क्रममे ओ अपन पापाके कतेको पत्र पठओलक । मुदा कोनो उत्तर नहि अएलाक बाद अन्तिम प्रयासक रुपमे अपन मौसीकें एकटा पत्र लिखलक । मौसीसँ चमेलीकें बहुत स्नेह छल । मौसी एहि शहरक अनाथ आश्रमसँ सम्पर्क कएलैन्हि आ कहुनाकऽ होस्टलमे राखएबाक प्रयास कऽ देलैन्हि । जेठ बहिनद्वारा काएल गेल पापक प्रायश्चित छोट बहिन यानी मौसी एहि प्रकार कएलक ।

ई होस्टल स्वच्छ आ स्वतन्त्र छल । एहि ठाम रहैत काल चमेली कम्प्युटर टाइप सिखलक आ जल्दिए अपन पएरपर ठाढ़ हएबाक कोशिस करऽ लागल । १२ कक्षाक पढाइ सेहो शुरु कएलक । चमेली कम्प्युटर टाइपिङ्गके लेल जतऽ जाइत छल ओतऽ बेरियाक छुट्टीमे ओ खाली रहैत छल । ओतऽ छोट फुलवारीमे चमेली घण्टोंघरि रहैत छल । फुलवारीक बाहर रिक्सा स्टैण्ड छल । ओ रिक्सा स्टैण्ड लग रितेश दैनिक अबैत छल । स्कूलक बच्चा साँझ चारि बजे जाइत छल । ओ १० बजे बच्चाकें स्कूलमे छोड़लाक बाद अहिना पुलवारीमे सुस्ताए अबैत छल। ओ चुपचाप चमेलीकें प्रत्येक दिन देखैत रहैत छल ।

रितेश ओकरासँ परिचय बढओलक । रितेशक अपनत्व आ सहानुभूति चमेलीकें मलहमके काज कएलक । चमेली हुनकासँ घूलि-मीलि गेल । धीरे-धीरे ओ रितेशकें अपन बितल घटना सुनओलक । रितेश सान्तवनो देलैन्हि, जीबाक इच्छा बढ़ओलैन्हि । स्वयं रितेश अपन काकाके घरमे रहि रहल छलाह ।

ओ चमेलीक पिड़ा बुझैत छलाह । एक समान दुनू एक दोसरकें पसिन करऽ लागल । संसारक सताओल चमेली रितेशसँ अलग होबऽ नहि चाहैत छल । ओ रितेशकें विवाहक पवित्र बन्धनमे बान्हयके लेल कहैत रहल, दिन बितैत गेल एहि क्रममे पेटमे बच्चा भऽ गेल ।

मैडम पुछलैन्हि, 'तौं वीरगञ्ज जाए चाहैत छैं ? तोरा हम स्वयं लऽ जएबौ ।'

चमेली तुरन्त बाजल, 'नहि मैडम, नहि हम बल पूर्वक ककरोसँ किछु नहि चाहैत छी । मुदा, मोन करैत अछि एक बेर हुनका सभसँ भेटकऽ पुछी जे, कोन अधिकारसँ ओ हमरा पोसलैन्हि आ फेर हमरा जनसागरमे भँसा देलैन्हि । हम जन्मसँ अनाथ छी । ओतहि पलितहुँ एहि गन्दा वातावरणक असरि तऽ नहि पड़ितए । किए हमर विश्वासकें तोड़ल गेल ।'

'अनाथ आश्रमक अनुभव कि कहू, छोट उमेरमे हमरा अचानक संसारक सभसँ खराब दृश्य देखा देलक । हमर बुद्धिमता व्यर्थ भऽ गेल । महत्वपूर्ण शिक्षाक वर्ष वर्वाद भऽ गेल । यदि पहिलेसँ आश्रममे रहितहुँ तऽ अपन मार्ग दोसर हिसावसँ बढ़बितहुँ । हमरा कतहुके नहि छोड़लैन्हि ओ सभ । मौसी आ रितेश हमराजँ सहारा नहि देने रहितैथि तऽ या मरिगेल रहितहुँ वा पागलखानामे अवश्य पहुँच गेल रहितहुँ ।'

मैडम ओकर माथ सहलओलैन्हि । डाक्टर सोनिया बातके बदललैन्हि । ओ कहलैन्हि, 'जे भऽ गेल से भऽ गेल एहि परिस्थितिसँ अहाँकें लड़बाक अछि । तीन-चारि दिन हमरा लग रहू । हम अहाँ आ रितेशक विषयमे अवश्य किछु सोचब ।

मैडम खोजिकऽ रितेशकें बजओलैन्हि । ओ सज्जन, मेहनती आ इमान्दार लड़का छल । दिन भरि स्कूलक रिक्सा चलबैत छल आ रातिमे पढ़ैत छल । स्नातकक पढाइके अन्तिम वर्षक छात्र छल । मैडम आ डाक्टर सोनियाक सल्लाहसँ रितेश चमेलीसँ बियाह कएलैन्हि ।

डाक्टर सोनिया चमेलीकें अपन अस्पतालमे नोकरी देलैन्हि । आखिर चमेलीकें जीवनक एकटा किनारा भेटिए गेल ।

शहर बदैल गेलासँ बहुत किछु बदैल जाइत अछि । ओतऽ ओ महिला क्याम्पसमे बर्षोसँ पढ़ा रहल छलीह । तँए सह शिक्षणके लेल एहि क्याम्पसक माहोल किछु अजिब सन लागि रहल छलैन्हि । मुदा कुल मिला कऽ ई परिवर्तन मनकें निके लागि रहल कहल जा सकैए । एक रस्तासँ शायद ओहो एखनधरि अगुता गेल छलीह ।

नया स्थान, नया परिवर्तन .... धीरे-धीरे ओ सभसँ परिचित भऽ रहल छलीह । समस्या एक्केटा छलैन्हि कि पहिल पिरियडकें लेल घरसँ भोरे-भोर निकलऽ पड़ैत छलैन्हि । बहुत प्रयासक बाद हुनका भाड़ा बला घर भेटल रहैन्हि आ ओहो क्याम्पससँ बहुत दूर ।

'अहाँ राजीव सरसँ कहिकऽ अपन समय किए नहि बदलबा लैत छी ?' गौरी हुनका सल्लाह देलीह ।

'राजीव सर .....,'मेनका किछु चौंकली ।

'हँ, ओहे तऽ सहायक क्याम्पस चिफ छथि । टाइम टेवल ओहे बनबैत छथि ।'

'कतऽके छथि ?'

'गजब छी मैडम । अतेक दिन भऽगेल एखन धरि अहाँके राजीव सरसँ परिचय नहि भेल अछि ।'

मेनका किछु लजा सन गेलीह । फेर ओहि दिन ओ हुनकर कार्यालयमे पहुँचलीह । फर्मपर माथ झुकाकऽ किछु चेककऽ रहल छली । हुनका देखिते उल्टे कहलैन्हि, 'बैसू मेनका जी ।'

'मेनका .....'एक्कहि संग कएटा प्रश्न चिन्ह उभैर आएल हुनकर मुखाकृतिपर ।

'अहाँके शायद स्मरण नहि अछि अहाँक पुरनका क्याम्पसमे भेल कथा गोष्ठीमे अहाँसँ भेट भेल रहए,' राजीव मुँहपर कनी मुस्कान अनैत बजलाह ।

'ओह.....,' तखने हुनका राजीवक नाम किछु परिचित सन लागल छल । ओ मनेमन स्वयंसँ कहलीह,' हमहूँ कतेक बिसराह छी ।'

फेर एक्के स्वरमे सभ किछु बाजि गेलीह, 'हमरा अपन पिरियडके समय बदलएबाक अछि । बहुत समस्या होइत अछि, घर बहुत दूर अछि । सवारी तक नहि भेटैत अछि ।'

'ओ ....,' गम्भिरतासँ बजलाह राजीव, 'मूल समस्या अपनेक घरक अछि ने ? अहाँ एना किए नहि करैत छी हमरे घरमे आबि जाउ ? उपरका तल्ला खालिए रहैत छैक । घर एहि क्याम्पसक लगेमे अछि,' कहिकऽ राजीव सर एकटा प्रश्न सूचक दृष्टि हुनकर मुँहपर देलैन्हि ।

'जी.........'ओ कनी अकचका गेलीह ।

'ठीक छैक, पहिने अपने घर देखि लिअ, तखन तय करब ।'

हुनकर घरसँ एलाक बाद मेनका बहुत दुविधामे पड़ि गेलीह । की करु ? हुनका पुरा-पुर अस्वीकार कऽ देबऽ चाहैत छल ? मुदा नहि जानि किए ओ चुप रहली । किए नहि कहि सकलीह की हुनका महल्लाबला घर पसिन नहि अबैत अछि ? हुनका तऽ दूर एकान्त चाही । जतऽ पत्ता तक नहि हिलए । एहने वातावरण पसिन छलैन्हि हुनका । मुदा आब की करतीह ? मोन मारि कऽ राजीव सर संगे जाए पड़लैन्हि । ओतऽ परिचय भेलैन्हि राजीव सरके कनियाँ आरती आ हुनकर दूटा बच्चासँ । ओ सुखद गृहस्थीकें देखिकऽ मोन भितर उठऽ बला टीसके ओ बहुत मुस्किलसँ दबा सकलीह ।

आरती हुनका खुब आदर-सत्कार कएलीह । बच्चा तऽ पहिल भेटेमे घूलिमिल गेल छल । आश्चर्य अतेक दिनक बाद कोनो घर परिवारमे अपनापनमे डूबल जेकाँ लागल ।

'दिदी, आइए अहाँ अपन सभ समान आनि लिअ । सभ गोटे मीलिकऽ रहब,' आरती बहुत आत्मियतासँ बजलीह ।

हुनकर आग्रहकेँ अस्वीकार नहिकऽ सकलीह मेनका ।

धीरे-धीरे ओ परिवारके विषयमे बहुत किछु जानि गेल छलीह । राजीव सर किछु लजकोटर छलाह । बेसी काल अपने अध्ययन, लेखनमे व्यस्त रहैत छलाह । सहायक क्याम्पस चिफ भेलाक बादो विभिन्न राजनीतिक गोष्ठी सभसँ दूरे रहैत छलाह । आरती बहुत मिलनसार आ गृहणी प्रवृतिकें छलीह । बहुत पढ़ल-लिखल नहि भेलाक बादो अपन आत्मियता आ सहजपनासँ सभके मोन मोहि लैत छलीह ।

ओहि दिन राजीव सर अपन नयाँ कथा पूरा कएलाह । जाढ़क साँझ छल, चाहक चुस्कीक संग ओकर चर्चाकऽ रहल छलाह । आरती तरकारी काटऽमे व्यस्त छलीह । मेनका धैर्यताक संग ओ कथाक प्लट सूनि रहल छलीह । राजीव सर जाही ढंगसँ नायिकाक चरित्र चित्रण कएने छलाह, हुनका किछु जँचल नहि । ओ भावावेशमे बजलीह, 'हमरा बुझऽमे नहि अबैत अछि कि जे नायिका अतेक पढ़ल-लिखल, बुझऽय वाली अछि ओ परिस्थितिसँ लड़बाक सार्मथ्य किए नहि रखैत अछि ? किए नियतिके हाथमे सोंपि दैत अछि ।' तखने लागल जे राजीव सर एकटक हुनका देखि रहल छलाह । की छल हुनकर आँखि भितर .... सिहरिकऽ ओ दृष्टि झुका लेलीह । ओहि समय आरती भितर जाकऽ धीया-पुताकें पढ़ऽ लेल कहि रहल छलीह ।

ओ चुपचाप उठिकऽ अपन रुममे चलि अएलीह। मुदा ओ दृष्टि...... अबेरथरि ओ आँखि हुनका स्मरण अबैत रहल। राजीव सर कहियो काल हुनका एना किए देखऽ लगैत छथि ? ओह, नहि ......

फेर एक हप्ताक बाद राजीव सर ओही कथाक पाण्डूलीपि हुनका हाथमे धऽ देलाह। रातिमे अबेरधरि ओहिमे डूबल रहलीह। सुखद आश्चर्य हृदयकेँ छूबि गेल छल। सत्ये.... कि हुनका कहला मात्रसँ राजीव सर अपना कथामे अनेक परिवर्तनकऽ देलाह, नायिकाक चरित्र पुरापुर बदैल देलाह।

'कहू, आब तऽ पसिन आएल ?' ओकर दोसर दिन राजीव सर पुछलैन्हि।

ओ मुस्कियाकऽ रहि गेलीह। राजीव सर अबेरधरि अपन ओहि कथाक विषयमे बात करैत रहलाह। ओ सेहो बीच-बीचमे अपन सल्लाह दऽ दैत छलीह।

अहाँ पढ़बैत छी तऽ बोटनी, मुदा साहित्यमे अहाँकें बढ़ियाँ पकड़ अछि। किए नहि अहू कथा कविता लिखैत छी ?'

राजीव सरक अवाज हुनका कतहु दूरसँ अबैत लागल। कथा, कविता..... तऽ की राजीव सरकेँ ई पता छैन्हि हमर स्वयंके जीवन कोनो कथा उपन्याससँ कम थोरहे अछि, जकरा ओ चाहिकऽ सेहो नहि लिख सकैत छलीह। मात्र स्मृति कतेको घाओकेँ खखोरि दैत अछि आ दऽ दैत अछि एकटा असहनीय पीड़ा।

ओहि राति सेहो उएह स्मृति फेरसँ सजीव भऽ उठल छल। चन्द्रभूषणसँ परिचय। फेर वियाहक बाद हुनका संग बिताएल दू बर्षक मधुर सम्बन्ध। हँ, आब स्मरणे शेष रहि गेल अछि। की चन्द्रभूषण सेहो स्मरण करैत हएताह, ओ बितल क्षणकेँ ? घरपरिवारमे डूबल कहियो सोचि पबैत हएताह ?

एकटा सिसकी निकलि गेल हुनक मुँहसँ। कतेक सुख दैथि ओ।

किए नहि ओ एहि सभसँ निकलि पबैत छथि ? किए नहि .... शायद कोनो गरम बाउलमे धँसि गेल छथि। भागऽ चाहैत छथि, मुदा फेर ओहिमे धँसि जाइत छथि। कहियो मुक्त भऽ पएतिह एहि धीपल रेगीस्तानसँ ?

ओ जेना निन्नमे चिचिया उठल छलीह। रातिमे उठिकऽ पुरे एक जग पानि ढ़ारि लेने छलीह। भोरमे सहीमे हुनका बोखार लागि गेल छल। भोजन आदिसँ निपैटकऽ उपर अएलीह आरती। हुनका सूतल देखि हुनकर देह छुलिह फेर चौंककऽ कहलीह,' अँएयै दिदी एतेक बोखार अछि..... आ अहाँ खबरो नहि कएलहुँ अछि ?'

आरती तत्काले डाक्टर बजओलिह, दबाइ मंगबओलैन्हि। अर्धविक्षिप्त सन अवस्थामे आरती देखैत रहलीह।

'रहऽ दियौ नहि ई दबाइ। एहिसँ किछु नहि हएत, हम आब अपने ठीक भऽ जाएब,' ओ कमजोर अवाजमे प्रतिवाद करैत रहलीह।

ओ कोना कहतिह मोनक विकार दबाइसँ थोरहे जाएत। धीरे-धीरे जखन स्मृति सभक दंश कम हएत तखन अपने सभ समान्य भऽ जाएत।

पता नहि आरती की सोचलैन्हि उपरसँ निच्चा उतैर गेलीह। साँझमे राजीव सर उपर अएलाह। चट्टरि हँटाकऽ ओ उठिकऽ बैसऽ चाहलिह मुदा, हुनका चक्कर आबि गेल।

'ओहो ! अहाँ पड़ले रहू ने, 'तकिया उठाकऽ राजीव सर सहारा दैत कहलाह, 'देखू दबाइ अहाँकें दुश्मन नहि अछि, फेर किए अहाँ अपनाके समाप्त करऽमे लागल छी ?' कहैत राजीव सर अपना हाथसँ दबाइ आ पानिक गिलास एना बढ़ओलैन्हि जेना ई हुनकर आग्रह नहि बल्कि आदेश हुअए।

ओ आदेशके अवहेलना मेनका नहि कऽ सक्लीह। चुपचाप ओ गोटीकें घोंटि लेलैन्हि।

'बस आब चुपचाप सूतल रहू । आरती सुप आ फलफूल लऽकऽ अबैत हएतिह । किछु खाएब-पीयब नहि तऽ बिमारीसँ कोना लड़ि पाएब ?'

मौन आ नोराएल दृष्टिसँ ओ राजीव सर दिस देखैत रहलीह । के अछि आब एहि संसारमे जे हुनकर चिन्ता करए ? फेर किए नहि पुरा जन्जालसँ छूटि जाइत छथि । राति भरि एहने सन विचार मोनकेँ उद्वेलित करैत रहल ।

राजीव सरके एहि प्रकारक अधिकारपूर्वक बात करब देखि हुनकर मोन भेलैन्हि जे ओ तकियामे मुँह भर्ँपि सिसकऽ लगलैथि । चिचिया-चिचियाकऽ कहथि, 'किए नहि हमरा मरऽ दैत छी ? ककरा लेल जिबू ?' तऽ की राजीव सर हुनकर मोनक बात बूझि लेने छथि, नहि तऽ क्षण भरिक लेल हुनक समीप किए आबि गेल छलाह । हुनकर गरम साँस अचेतन अवस्थामे सेहो निकटसँ अनुभव कएने छलीह ।

'मेनका .... 'ओ हुनकर माथपर हाथ धऽकऽ कहने छलाह, 'हम बुझैत छी कि अहाँकें अतीत सुखद नहि रहल अछि मुदा की स्मृतिक संसारमे हेराकऽ अपनाकेँ मेटा देब नीक बात भेलैक ? क्षण भरिक लेल सुखद आ अन्धकारसँ बाहर निकलू आ वर्तमान तऽ एतेक खराब नहि अछि ।' कहैत-कहैत राजीव सरक स्वर भावुक भऽ गेल छल । ओहि समय मेनकाक इच्छा भेल ओ हुनकर बाँहिपर माथ राखि खुब कानथि । सभ किछु बता दैथि । हुनकर मन शायद एहिसँ किछु हल्लुक भऽ जाइन ।

'नहि ....,' दोसरे क्षण विचार आएल छल । अपन पीड़ाकेँ ओ ककरोसँ नहि बटती । राजीव सर संगे सेहो नहि ।

दबाइक प्रभावसँ आँखि किछु मुनाए लागल छलैन्हि । बाँहिपर हाथ थपथपाकऽ राजीव सर निचा उतरि गेलाह ।

एहि बिमारीक बाद ओ राजीव सरके किछु आओर निकट आबि गेल छलीह । अखनधरि गम्भिरताकें जे मुखौटा ओ सदैब सावधानीसँ ओढ़ने रहैत छलीह, ओ धीरे-धीरे किछु घटि रहल छल । कहियो-कहियो मुस्किआइके, किछु गुनगुनाएके इच्छा भऽ जाइत छलैन्हि ।

ओहि दिन क्याम्पससँ किछु पहिने आबि गेलीह । देखलीह आरती आ राजीव सर निच्चा ठाढ़ छलाह । हुनका अबिते आरती बजलीह, 'दिदी चलू चौरी दिस घुमऽ ।'

'हम ?'मेनका चौंककऽ बजलीह ।

'हँ बस, दस मिनट दैत छी भटपट तैयार भऽकऽ आउ,' राजीव सर आग्रहक स्वरमे कहलैन्हि ।

हाथ-मुँह धोकऽ मेनका फटाफट सारी बदलि लेलीह । माथमे क्लिप ठीक करैत निच्चा उतैर गेलीह ।

'चलू । अहाँ दस मिनट कहलहुँ हम आओर जल्दी आबि गेलहुँ ।'

हुनकर बात सूनि आरती मुस्किया देलीह । तखने मेनका देखली राजीव सर चोराकऽ हुनका दिस ताकि रहल होथि ।

चौरी दिस घुमब हुनका नीक लागि रहल छलैन्हि । बहुत दिनक बाद ओ अपनाकेँ तनावसँ दूर पाबि रहल छलीह । मोनू आ सञ्जूकें लऽकऽ ओ आगाँ बढ़ि गेलीह आ हुनके कोनो बातपर ठहक्का मारिकऽ हँसि देलीह तखने राजीव सरक धीरेसँ आवाज सुनाइ देलक,'अहाँ हँसैत काल कतेक नीक लगैत छी ।'

स्वरक गहराइ हुनका भितर तक बिन्ह देने छल । हुनकर मुँह लाल भऽगेल छल । लजाकऽ चौरमे रहल गुलमोहरके फूल दिस ताकऽ लगलीह ।

राजीव सरके एहि प्रकारक एकटक देखैत रहब, भितर गहीँर तक उतरि जाएबला ओ दृष्टि किछु नहि कहऽ बला बहुत किछु कहि दैत छल । हुनका लागल केओ अपनाकेँ जतेक समेटकऽ राखबाक प्रयास करैत छल ओ ओतबे बन्हैत जा रहल छलीह ।

आरती किछु दिनक लेल नैहर गेल छलीह । बच्चाक बिना घरमे किछु बुझाइ नहि रहल छल । राजीव सर अपन अध्ययन कक्षमे व्यस्त रहैत छलाह आ ओ अपना कक्षमे । बेर-बेर निच्चा उतरऽमे हुनका सङ्कोच लगैत छलैन्हि । ओहि दिन क्याम्पसेमे हुनका थकान जकाँ लागि रहल छल । घर पहुँचकऽ भोजन के बनाओत, ई सोचिकऽ ओ बाटेसँ पाउरोटीके एकटा प्याकेट अनने छलीह ।

भोजन शुरुए कएने छलीह जे कतऽसँ नहि कतऽसँ राजीव सर उपर चलि अएलाह । ओ देखिते चौंक गेलीह ।

'ओहो ! हम तऽ ई उम्मिदमे आएल छलहुँ की हमरा अहाँ भोजनपर आमंत्रित करब, मुदा अहाँ तऽ स्वंय पाउरोटीसँ ......' बहुत मजकिया स्वरमे राजीव सर बजलाह ।

'जी ....' मेनका लजा गेलीह । सहीमे हुनका ध्याने नहि रहल छल राजीव सर असगरे कोना आ की खाइत हेताह ? कमसँ कम औपचारिकताक नातासँ आमंत्रित करबाक चाहैत छल ।

'एखने सभ बनि जाएत, अपने बैसल जाउ ने ।'

राजीब सर टेबुल लग राखल कुर्सीपर बैसि रहलाह आ टेबुलपर राखल पत्रिका ओ अपना हाथमे राखि लेलाह ।

देखिते-देखिते मेनका बहुत चीज बना लेलीह । ककरो मात्र उपस्थिति कतेक सुख दैत अछि अन्यथा भोजन तऽ ओ दैनिक बनबैत छथि मुदा कतेक मोनसँ ।

ओहि दिन सेहो राजीव सर भोजन कऽकऽ उठले छलाह कि दू कप कफी बना लेलीह । राजीव सरके हाथमे कप पकड़बैत हुनका किछु स्मरण आएल । बजलीह, 'काल्हि तऽ आरती सेहो आबि जएतिह, 'हुनकर स्वरमे बितल दिनक स्मरण झलैक उठल ।

' हँ, ' कहिकऽ राजीव सर चुपचाप कपमे चम्मच घुमबैत रहलाह । कप फेरसँ टेबुलपर राखिकऽ अपन हाथ मेनकाके हाथपर राखि देलाह । एहि स्पर्शसँ ओ सिहरि उठलीह, मुदा हाथ हँटा नहि सकलीह ।

मेनु, की अहाँ एहि तरहे आजन्म हमरा संग नहि रहि सकब ? अहाँकेँ नहि बूझल अछि अहाँ हमर कतेक आवश्यकता बनि चूकल छी ।'

राजीव सरक ई स्वर हुनका झिकझोरि देलक ।

'नहि सर, हम अपना कारण ककरो संसार नहि उजारि सकैत छी । राति-दिन जे शब्द मष्तिस्कपर रहैत छल ओहे बात ठोरपरसँ पिछड़िकऽ बाहर आबि गेल छल ।

राजीव सर चाहियोकऽ किछु नहि कहि सकलाह ।

ओहि राति क्षण भरिके लेल सेहो नहि सूतल छली । दुखद स्मृतिक बन्द पन्ना फेरसँ फर-फराए लागल । अहिना कहियो नीनासँ चन्द्रभूषण कहने हएताह , 'हम अहाँक बिना नहि रहि सकब ।'

मोनमे कचोट उठलैन्हि । चन्द्रभूषणक पत्रक ओ पंक्ति, 'हम नीनासँ विवाह कऽ रहल छी ।'

हुनका लागल छल ओ कागजपर लिखल मात्र पंक्ति नहि बिषसँ भरल बाण छल, पापा, भैया, दिदी, पाहुन कतेक तमसाएल छल ।

'मेनु, तों कतेक कायर छैं ? चन्द्रभूषण तोरा धोखा देलकौ आ तों प्रतिकारक एक शब्द नहि कहि सकलएँ ।'

ओ चुपचाप सुनैत रहलीह । कोना कहितथि, सम्बन्ध तऽ मोनक होइत अछि हृदयक होइत अछि । जखन ओ हृदयसँ निकालि देलाह तऽ केहन प्रतिकार ? कोन बातक प्रतिकार ?

तखनसँ ओ एकटा मुखौटा चढ़ा लेने छलीह । आब ओ हरेक क्षण खिलखिलाकऽ हँसऽ बाली मेनु नहि कक्षामे गम्भिरतासँ बोटनीपर भाषण देबऽबला प्राध्यापिका छलीह । मुदा राजीव सर आब हुनकर मोनसँ

ओढ़ल ओ मुखौटा किए तोड़ऽ चाहैत छथि ? ओ किए चाहि रहल छथि मेनका फेरसँ मेनु बनऽ ...... उएह पुरनाका मेनकु

आरतीक एलाक बाद सेहो मेनका निच्चा जाए कम कऽ देने छलीह राजीव सरके आगाँ तऽ पड़बे नहि करैत छलीह ।

'की बात छैक ? शायद हम एहि बेर नैहर असगरे चलि गेलहुँ तऽ अपने तमशा गेलियै की ? मुदा दोसर बेर तऽ संगे चलबाक कार्यक्रम बनओने छी ,' कहैत ओहि दिन आरती हुनकर शयन कक्षमे आबि गेलीह । नोटस तैयार करैत मेनका हुनकर आवाजपर चौंककऽ बजलीह, 'कतऽ ?'

'होरीके छुट्टीमे पोखरा घुमऽ जारहल छी । ओ कहैत छलाह जे अहूँकें संग लऽ जएबाक छैक ।'

मेनका चुप रहलीह । राजीव सरके संग ...... मोनमे फेर किछु हलचल जकाँ भेलैन्हि । धीरेसँ बजलीह, 'नहि, आरती हम कहाँ जा सकब छुट्टीमे हम एकटा सम्मेलनमे जारहल छी, कार्यक्रम तय भऽ चूकल छैक ।'

सूनिकऽ आरतीके उत्साह समाप्त भेल सन लागल । हुनक उदासी देखि मेनका मधुर स्वरमे फेर बजलीह, 'कोनो बात नहि । एहि बेर अहाँ सभ घूमि आउ, फेर कहियो संगे चलबाक कार्यक्रम बना लेब ।

आरतीके गेलाक बाद सेहो ओ बहुत अबेरधरि गम्भीर चिन्तन करैत रहलीह । तऽ की राजीव सर ई सभ जानि-बूझिकऽ कहि रहल छथि ? तऽ फेर हुनकासँ निच्चा एक-दू बेर भेंट भेल तऽ कतराकऽ किए चलि गेलाह । मेनकाकें हुनकर व्यवहारमे कोनो रुसल व्यक्ति जँका लागल । ओ की करथि ? प्रश्न बहुत विचित्र छल । ई सत्य छल जे सम्मेलनके असानीसँ छोड़ल जासकैत छल अन्तत ओ निर्णय लेलीह ठीक छैक जखन राजीव सर स्वंय किछु कहता तऽ ओ पोखरा घुमऽ जएतीह ।

मुदा राजीव सर जाइतो नहि बजलाह । आरती चुपचाप सभ तैयारी करैत रहलीह । मेनकाके मोनमे किछु टीस छल,'ठीक छैक, ओ छथिए के ?'

जाइत समय सभकें छोड़ऽ लेल रिक्सा तक आएल छलीह । आरती आ हुनकर बच्चा हुनका प्रणाम कएलक मुदा राजीव सर मुँह नुकबैत रिक्सापर बसि रहलाह ।

सभकें जाइत देखि मेनकाके मोन भेलैन्हि जे जोड़-जोड़सँ कानऽ लागैथि । ओ किनका की बिगारने छथि, जे सभ हुनका दुखे पहुँचबैत अछि । फेर उएह उदास क्षण........... उएह अकेला पन । मोन भेलैन्हि असगरे चलि जाइ मुदा कतऽ ? ओ प्रत्येक दिन पोखरा जएबाक दिन किए गनैत छलीह । छोटको आहटसँ किए चौंकि जाइत छथि ? किए बेर-बेर इच्छा होइत छैन्हि राजीब सरक फोन आबय ?

आठम दिन सहीमे द्वार पर प्रवेश भेल ।

'के ?' भोर चारि बजे राजीव सरकें अबैत देखि ओ घबरा गेलीह । तखने राजीव सर आगा बढ़ि हुनकर कान्हपर हाथ राखि देलाह ।

'एहि तरहे स्वंय सेहो परेशान रहलहुँ आ हमरो चयनसँ नहि रहऽ देलहुँ,' राजीव सर धीरेसँ बजलैन्हि, 'जनैत छी, मोन नहि लागल घुमऽमे । बहुत दिन सोचलहुँ फोन करी मुदा..........'

'आरती कहाँ छथि ?' मेनकाकें स्मरण आएल आखिर राजीव सर संग हुनकर परिवार सेहो गेल छल ।

'घुमैत काल हुनकर बहिन रोकि लेलक बादमे अएतीह ।'

राजीब सर धीरेसँ मेनकाकें आओर अपन निकट आनि लेलाह । फेर स्नेहक स्वरमे बजलाह, 'सुनू, हम आरतीसँ बात कऽ लेने छी हम तीनू गोटे अहिना सँग-सँग रहि सकैत छी आब तऽ रहब ने हमरा संग ?'

राजीव सरक मुँह मेनकाके माथपर झूकि गेल। तीव्र चुम्बकीय आकर्षणमे बान्हल ओ ओहिना हुनकर छातीसँ लागल रहलीह।

'ठीक छैक चलू। भोरे एकटा बैसारमे भाग लेबऽ जएबाक अछि। बाँहिपर हाथ थप-थपबैत अपना रुम दिस राजीव सर घूमि गेलाह।

हुनका गेलाक बाद मेनकाकेँ किछु सोचबाक समय भेटल। किए एना भऽगेल ? किए ओ एना बहि गेलीह ? किए नहि प्रतिकार कएलीह ? फेर स्मरण आएल राजीव सरक ओ शब्द, 'आरतीकें कोनो आपत्ती नहि अछि।' मुदा मोनमे फेर किछु सेहो खटकलैन्हि। कोन एहन महिला हएत जे चुप-चाप सभ किछु लुटैत देखि सकत।

चन्द्रभूषणके नीनाक संग विवाहक बात सूनि कोना ओ कनैत रहलीह। लोक गेट पीट-पीटकऽ हारि गेल छल मुदा, हुनकर उएह जिद्द छल। फेर ओ क्षण की, ओ अखनोधरि नीनाके गाढ़ि पढ़ैत नहि छथि ? हुनका लागल अनेरे फेर नीना आगाँ आबि गेल अछि आ हँसैत पूछि रहल अछि, 'की आब तऽ अहूँ नीना बनि गेल छी।'

'नहि,' ओ चिचिएलीह। देवालक सहारा नहि रहैत तऽ ओ चक्कर खा कऽ खसि परितैथि। आधा घण्टाधरि ओ ओहिना चुपचाप बैसल रहली।

बस स्टैण्डपर कनी-मनी लोक छल वातावरणमे बेरियाक खालीपन व्याप्त छल मुदा मोनमे तऽ बहुतरास बिहारि घेरने छलैन्हि। शायद किछु क्षणक बाद कोनो बस आएत आ हुनका लऽ जाएत मुदा कतऽ ? स्मरण आएल ओ आवेदन-पत्र। एकटा लम्बा छुट्टी आ दोसर बदलीके।

बस आएल। बसक हर्न हुनकर ध्यान तोड़लक हुनकर चाल यन्त्रवत् ओहि दिस बढ़ल। आगाँ दूर तक सुनसान सड़क देखाइ दऽ रहल छल। छुटैत हरियर वृक्ष शायद ओ ओहिना अपन प्राप्त सुखकेँ एक बेर फेर छोड़ि अएलीह। हुनकर आँखि नोराए लागल छल, जकरा नियतकेँ कठोर हात पोछि देने छल।